अनेकान्त दर्पण



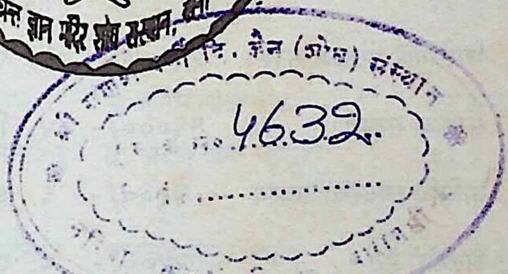
अनेकांत ज्ञान मंदिर में स्थित प्राचीन पाण्डुलिपियां

अनेकान्त दर्पण

संस्थान की शोध वार्षिकी

अंक : २ वर्ष : २०००





✤ सम्पादक मण्डल ✤

डा. रतनचन्द जैन
पूर्व प्रोफेसर (संस्कृत विभाग)
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

पं. अभय कुमार शास्त्री
जैन दर्शनाचार्य, प्राकृताचार्य, साहित्याचार्य
कानूनगो वार्ड, बीना (म.प्र.)

✤ प्रकाशक ✤

अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान
अनेकान्त नगर
बीना (सागर) म.प्र. - ४७०११३
फोन : (०७५८०) ३०२७६

पत्रिका संस्थापक
ब्र. संदीप जैन 'सरल'
अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान
अनेकान्त नगर, बीना
जिला-सागर (म.प्र.) ४७०११३
फोन : (०७५८०) ३०२७६

परामर्श मण्डल
१. पं. कुन्दनलाल जैन, दिल्ली
२. डा. भागचंद जी, भास्कर, नागपुर
३. आचार्य राजकुमार जी, दिल्ली
४. प्रो. एल.सी. जैन, जबलपुर
५. डा. नीलम जैन, गाजियाबाद

अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना के चहुंमुखी विकास/उत्कर्ष हेतु अपेक्षित आर्थिक सहयोग इस रुप में दे सकते हैं।

१. शिरोमणि संरक्षक सदस्य	५१०००/-	२. परम संरक्षक सदस्य	१५०००/-
३. संरक्षक सदस्य	११०००/-	४. जिनवाणी सदस्य	५०००/-
५. अतिथि व्यवस्था सदस्य	१५००/-	६. आजीवन सदस्य	११००/-
७. अल्मारी हेतु	२५००/-	८. एक ग्रन्थ की सुरक्षा हेतु	५०१/-

अपनी इच्छित राशि नगद/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना के नाम भेजकर अनुग्रहीत करें।

धन्यवाद

अनुक्रम

सांस्कृतिक खण्ड

अनेकान्त संस्थान खण्ड

सम्पादकीय

छठवें स्थापना दिवस ९८ के संकल्पानुसार अष्टम स्थापना दिवस समारोह २० फरवरी के शुभअवसर पर सुधी मनीषियों के सद्बोधक सुलेखों सहित संस्थान की गतिविधि-प्रगति परिचायक वार्षिक पत्रिका **अनेकान्त दर्पण** का द्वितीय अंक सुधी पाठकों को सादर समर्पित है।

युवा मनीषी ब्र. संदीप जी 'सरल' के अथक अपूर्व श्रम, लगन, निष्ठा एवं निष्काम समर्पण के फलस्वरुप विगत आठ वर्ष की अल्प समयावधि में ही श्रमण संस्कृति संरक्षक श्रुतधाम श्री अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान दिनोंदिन प्रगति सोपानों पर उत्तरोत्तर अग्रसर है। विषम परिस्थितियों में भी यह सारे भारत में श्रुतोद्धार एवं श्रुत सेवा की अलख जगा रहा है। शास्त्रोद्धार एवं शास्त्र सुरक्षा अभियान के ६६ दौरों में लगभग ५५०० हस्तलिखित दुर्लभ पाण्डुलिपियां और ७००० से भी अधिक मुद्रित ग्रन्थ व्यवस्थित रुप से संस्थान में विराजमान हो चुके हैं। यहां की श्रुत संरक्षण व्यवस्था ज्ञातकर एक ओर जहां साधु सन्तों ने इसे पुनीत और करणीय कार्य बतलाते हुये शुभाशीष दिये हैं, वहीं जिनवाणी भक्त उदार श्रेष्ठी जनों ने भी सहर्ष अपना सहयोग दिया है और दे रहे हैं। श्रावकों में भी मां जिनवाणी के प्रति श्रद्धा जगी बढ़ी और वे भी यथाशक्ति इस श्रुतधाम को आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बने हैं। विद्वद्वर्ग भी सहयोग हेतु तत्पर है। श्री अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान सभी सहयोगियों/ हितैषियों का आभारी है।

गतवर्ष १९९९ की इस संस्थान की विशेष उल्लेखनीय उपलब्धियां इस प्रकार हैं :-

(१) सदाचार संगोष्ठी :- दि. २०/२/९९ को आयोजित संगोष्ठी में देश के विभिन्न अंचलों से पधारें मनीषियों ने जीवन में सदाचार के महत्व को प्रतिपादित करते हुये जीवन को सदाचार से सुरभित करने की प्रेरणा दी तथा वर्तमान में दिनोंदिन बढ़ते शिथिलाचार पर दुःख प्रगट किया।

(२) प्रशिक्षण शिविर :- दि. १२/६/९९ से १८/६/९९ तक आयोजित प्रशिक्षण शिविर में बीना जैन समाज के अलावा जबलपुर, ललितपुर, भोपाल, झालावाड़, सतना, सिरोंज, सिलवानी, बीनागंज, देवरी आदि स्थानों के शिविरार्थियों ने भाग लिया। उन्हें योग्यतानुसार विभिन्न वर्गों में विभाजित कर बालबोध, छहढ़ाला, द्रव्यसंग्रह, तत्वार्थ सूत्र, परीक्षामुख, कातन्त्र व्याकरण का अध्ययन कराया तथा धार्मिक नैतिक सदाचार के सुसंस्कार दिये गये।

(३) शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान :- वर्ष १९९९ के ५० से ६९ तक के २० अभियानों में लगभग २००० हस्तलिखित और २००० मुद्रित कुल ४००० ग्रन्थ संस्थान के शास्त्र भण्डार में समाहित हुये हैं। सर्वाधिक १३०० हस्तलिखित ग्रन्थों की प्राप्ति सेठ भागचंद सोनी की नसियां अजमेर से ६६वें अभियान में हुई। १९९९ के अभियानों में यह अद्वितीय उपलब्धि है। संस्थान में ग्रन्थों के संकलन और सूचीकरण का कार्य निरन्तर चालू है, प्रगति पर है।

इन अभियानों में पाण्डुलिपि प्रदर्शनी, धर्म सभा का आयोजन, सभा के मध्य अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान का परिचय देते हुये शास्त्र एवं पाण्डुलिपि संरक्षण सुरक्षा पर ब्र. संदीप भैया का उद्बोधन होता है। तथा स्थानीय शास्त्र भण्डारों का अवलोकन कर उनकी साज सम्हाल एवं सुरक्षा व्यवस्था हेतु श्रावकों को प्रेरित किया जाता है।

इन अभियानों में सर्वत्र ही पूज्य गुरु वृन्द आचार्य श्री मुनिराज आर्यिका माता जी त्यागीवृन्द श्रावक समाज सभी ने इस कार्य की मुक्तकंठ से सराहना की है। गुरुवृन्द ने मंगल आशीष दिये तथा

समाज के उदार श्रुतसेवकों ने सहयोग प्रदान किया है। संस्थान सभी महानुभावों का आभारी है।

४. अ- फोटोकापी मशीन की उपलब्धि :- शास्त्र भण्डार के सूचीकरण एवं स्थायित्व के लिये आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों की महती आवश्यकता थी। भरतपुर (राजस्थान) के उदार श्रुतसेवक श्री लक्ष्मीनारायण जैन एडवोकेट ने इस संस्थान के अद्वितीय कार्य से प्रभावित होकर फोटो स्टेट कापी मशीन संस्थान को सहर्ष भेंट की, जिसका लोकार्पण बीना में उन्हीं के करकमलों द्वारा ४/९/९९ को किया गया। संस्थान द्वारा उनका भावभीना स्वागत किया गया।

४. ब- कम्प्यूटर की उपलब्धि :- संस्थान को इस उपकरण की प्राप्ति कानपुर निवासी श्री कमलेश कुमार जैन "दातामन" से हुई है, जिसका शुभारम्भ स्थानीय जैन महिला मंडल की संरक्षिका श्राविका श्रीमती चन्द्रबाई जी सिंघई, बीना ने एक सादगी पूर्ण भव्य कार्यक्रम के अन्तर्गत किया।

५. संस्थान के स्वयं के वाहन की स्वतंत्र व्यवस्था :- कतिपय उदार दातारों के सहयोग से संस्थान ने अपने वाहन (मार्शल जीप) की स्वतंत्र व्यवस्था की है।

६. त्यौहार समीक्षा का प्रकाशन :- समीक्षा ग्रन्थों के लेखन में बहुचर्चित पूज्य गुरुवर मुनिश्री १०८ श्री सरलसागर जी महाराज द्वारा लिखित इस कृति का प्रकाशन इस संस्थान से किया गया है। इसमें त्यौहारों विषयक मिथ्या मान्यताओं/रुढ़ियों को निरस्त कर आगमानुसार आयोजित करने की प्रेरणा है।

७. संस्थान समाचार पत्र का प्रकाशन :- जन जन तक इस संस्थान को जोड़ने हेतु श्री अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना द्वारा संस्थान संस्थापक श्री संदीप जी सरल के कुशल सम्पादकत्व में इस समाचार पत्र का १९९९ में प्रकाशन प्रारम्भ किया गया है। अभी तक इसके तीन अंक (१) जुलाई अगस्त ९९ (२) सितम्बर अक्टूबर ९९ (३) नवम्बर दिसम्बर ९९ जनवरी २००० प्रकाशित हो चुके हैं। इसके द्वारा संस्थान द्वारा निरन्तर संचालित गतिविधियों की जानकारी जन जन तक पहुंचाई जाती है तथा श्रुत संरक्षण और श्रुतोद्धार की प्रेरणा दी जाती है।

भावी योजना :- (ग्रन्थों का कम्प्यूटराइजेशन) शास्त्र भण्डार के सभी हजारों ग्रन्थों को सूचीबद्ध करना तथा उल्लेखनीय विशिष्ठ शास्त्रों को कम्प्यूटर में भरने के कार्य हेतु संस्थान सचेष्ट है ताकि सभी का एकत्र संकलन होकर संरक्षित हो सकें। इनका उपयोग शोधार्थी भी कर सकें। संस्थान इनका सी.डी. बनवाकर प्रमुख शोध संस्थानों में भिजवाने के लिये प्रयासरत है।

"अनेकान्त दर्पण" के इस द्वितीय अंक में अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान की गति प्रगति का लेखा जोखा होने के साथ साथ देश के ख्याति प्राप्त मनीषियों के इतिहास-पुरातत्व-आगम-आचारादि सांस्कृतिक पक्ष से सम्बन्धित विद्वत्ता एवं शोध-खोजपूर्ण आलेखों का समावेश है। ऐसे सभी आलेखों को पत्रिका के सांस्कृतिक खण्ड में संजोया गया है। पत्रिका का दूसरा खण्ड अनेकान्त संस्थान की गतिविधियों एवं प्रगति का परिचायक है। **"अनेकान्त दर्पण"** के प्रथम अंक को पढ़कर और संस्थान की गति प्रगति को जानकर साधु-सुधी-श्रेष्ठी सभी ने पत्रिका एवं संस्थान की मुक्तकंठ से सराहना की है। सुधी पाठकों से इस द्वितीय अंक के संबंध में भी उनकी निष्पक्ष समीक्षाएं/सुझाव प्रतिक्रियायें सादर आमंत्रित करते हैं। जिन मनीषियों ने अपने आलेख प्रकाशनार्थ प्रेषित कर हमें अनुग्रहीत किया है, और इस द्वितीय अंक को प्रकाशन में अपना सहयोग दिया है, उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हुये उन्हें धन्यवाद देते हैं। इस अंक सम्पादन प्रकाशन में ब्र. भैया संदीप जी का ही पूर्ण श्रम लगा है। एतदर्थ वे विशेष साधुवाद के पात्र हैं।

पं. अभयकुमार शास्त्री, सम्पादक, अनेकान्त दर्पण

आगम और उसकी संरक्षा

✍ आचार्य राजकुमार जैन

इस आलेख में मनीषी विद्वान जिनागमों की महनीयता विशालता और महत्ता को दर्शाते हुए उनके सरंक्षण रखरखाव तथा अप्रकाशित प्राचीन शास्त्रों की शोध-खोज, सम्पादन प्रकाशन हेतु संस्था के माध्यम से समन्वित प्रयास के लिए प्रेरित कर रहे हैं। पंच कल्याणक जैसे आडम्बर पूर्ण आयोजनों में होने वाले व्यय का 10-20 प्रतिशत भी यदि ज्ञान यज्ञ के इस पुनीत कार्य में खर्च किया जाए तो हमारे धर्म संस्कृति और संस्कार सुरक्षित रह सकेंगे।

वर्तमान में उपलब्ध ऐतिहासिक तथ्यों, संकेतों एवं अन्य विवरण/सामग्री से यह सुस्पष्ट है कि जैनाचार्यों, साधुओं, मनीषियों एवं विद्वानों के द्वारा रचित ग्रंथों की संख्या प्रचुर है। समग्र जैन वाङ्मय की प्रचुरता एवं विशालता का आभास इस तथ्य से सहज ही हो जाता है कि जैनाचार्यों द्वारा प्रणीत जो ग्रंथ अद्यावधि प्रकाश में आए हैं उनमें उनसे पूर्ववर्ती आचार्यों द्वारा रचित ग्रंथों के सन्दर्भ या उद्धरण प्रचुरता से मिलते हैं। जिन ग्रंथों के सन्दर्भ या उद्धरण मिलते हैं उनमें से अधिकांश अप्रकाशित, दुर्लभ या अप्राप्य हैं। अनेक हस्तलिखित ग्रंथों की पाण्डुलिपियां तो हैं, किन्तु या तो वे सुलभ नहीं है अथवा विभिन्न परिस्थितियों के कारण उनके अनुवाद, लिप्यन्तर, सम्पादन एवं प्रकाशन की व्यवस्था नहीं हुई है। इस प्रकार वर्तमान में जितना जैन वाङ्मय प्रकाशित एवं सुलभ है उससे अनेक गुना अधिक वाङ्मय अज्ञात, दुर्लभ एवं अप्रकाशित है। यह हमारे लिए अत्यन्त दुर्भाग्य एवं दुख की बात है कि हम अपनी अज्ञानता, अदूरदर्शिता उदासीनता, लापरवाही एवं आगम या वाङ्मय पराङ्मुखता के कारण अपनी अमूल्य धरोहर एवं निधि रुप विशाल वाङ्मय राशि को काल कवलित कर चुके हैं। विलुप्त आगम वाङ्मय या ग्रंथ राशि का आभास हमें वर्तमान में उपलब्ध ग्रंथों की सूची जो समय समय पर विभिन्न पत्र पत्रिकाओं, मुद्रित ग्रंथों या कैटलागों में प्रकाशित हुई है से मिलता है।

हम अपने जिनागम या जैन वाङ्मय जो हमारी धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत है, के प्रति कितने गम्भीर हैं ? इसका आभास इस तथ्य से सहजता से हो जाता है कि जैन मन्दिरों की अलमारियों में रखे हुए ग्रंथों को जिनवाणी माता मान कर उसके सम्मुख श्रद्धावनत होकर उसका मात्र स्तुतिज्ञान कर स्वयं को धन्य और अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। कहीं कहीं कोई जिनवाणी भक्त लक्ष्मीपति अपनी अथाह धन राशि में से कुछ राशि दान स्वरुप जिनवाणी के संरक्षण-संवर्धन के निमित्त निकाल देते हैं। जिससे किसी ग्रंथ का मुद्रण-प्रकाशन हो जाता है। वस्तुतः आगम या श्रुत के संरक्षण अथवा संवर्धन के लिए जो गम्भीर प्रयास होना चाहिये वह नहीं हो पा रहा है। वस्तुतः इस प्रकार का कार्य या प्रयास किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत कार्य

क्षमता के बाहर है। इसके लिए तो समन्वित प्रयास अपेक्षित है जो मात्र किसी संस्था के माध्यम से किया जाना ही सम्भव है।

इसके अतिरिक्त इस दिशा में सतत शोध एवं अनुसन्धान भी अपेक्षित हैं जो मात्र किसी संस्था के माध्यम से ही किया जा सकता है। दिगम्बर जैन समाज में इस प्रकार की शोधाभिमुख प्रवृत्ति परक संस्थाएं नगण्य हैं। यद्यपि वर्तमान में अनेक तथा कथित मुनिभक्तों के द्वारा अनेक नगरों में विभिन्न साधुओं के प्रवचनों पर आधारित विभिन्न पुस्तकों का प्रकाशन किया गया है, किया जा रहा है जिससे समाज लाभान्वित भी हो रहा है। इसके अतिरिक्त कतिपय विद्वानों के द्वारा भी अपनी ज्ञान राशि एवं विद्वत्ता के आधार पर ग्रंथों/पुस्तकों का प्रणयन किया गया एवं किया जा रहा है जो समाज के लिए, हमारे धर्म और संस्कृति के लिए एक शुभ लक्षण है। किन्तु इस सबके बावजूद क्या हम अपनी उस अमूल्य निधि जो हमारी प्राचीन धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत है को संरक्षित/संवर्धित करने में सफल हुए हैं-यह विचारणीय गम्भीर प्रश्न हमारे सम्मुख आज भी विद्यमान है। वस्त्रावेष्टित हस्तलिखित ऐसे अनेक ग्रंथ आज भी या तो विभिन्न शास्त्र भण्डारों में अथवा जिन मंदिरों की अलमारियों में भरे पड़े हैं जो अपने अनावृत होने की प्रतीक्षा में हैं। अनेक ग्रंथ तो असूर्यम्पश्य बने हुए हैं। अनेक हस्तलिखित ग्रंथों की पाण्डुलिपियां हमारे देश की सीमा से बाहर इंग्लैण्ड आदिदेशों के ग्रंथालयों की शोभा बढ़ा रहे हैं

आज हमारी समाज में अन्धभक्ति और अन्ध श्रद्धा का बोलबाला चरमोत्कर्ष पर है। उसी के परिणाम स्वरुप आज विभिन्न स्थानों पर पंच कल्याणकों, विधानों, गजरथों और अन्य विभिन्न प्रकार के आडम्बर पूर्ण आयोजनों की भरमार है जिनमें समाज के धनी-मानी सम्पन्न वर्ग द्वारा पानी की तरह पैसा बहाया जा रहा है। उन सभी आयोजनों की रचनात्मक परिणति समाज में लगभग शून्य ही है, क्योंकि उनसे समाज के लोगों की मानसिकता में न तो किसी प्रकार का बदलाव आया है, न राग-द्वेष कम हुआ है और न ही उनकी परिग्रह वृत्ति पर अंकुश लगा है। इसके विपरीत समाज में जितनी अधिक जागृति आई है, धार्मिक भावना (मात्र दिखावा) विकसित हुई है उतना ही अधिक उसके विलासिता पूर्ण जीवन यापन और तदर्थ संचय परिग्रह वृत्ति में वृद्धि हुई है। यह विचारणीय है कि इन सभी प्रकार के धार्मिक आयोजनों कार्यक्रमों में प्रतिवर्ष जितनी धनराशि अनावश्यक रुप से व्यय की जा रही है, क्या उसका एक प्रतिशत भी प्राचीन ग्रंथों की खोज, रखरखाव, संशोधन, सम्पादन व प्रकाशन पर खर्च किया जा रहा है ? इस समय इस कार्य में यदि अपेक्षित धन राशि व्यय की जाती है तो यह संचित धन राशि का सर्वोत्तम सदुपयोग माना जायेगा और वह होगी जिनवाणी माता के प्रति हमारी सच्ची आस्था, श्रद्धा और भक्ति।

आगम जो तीर्थंकर महावीर स्वामी की दिव्य देशना के प्रतीक हैं के अंशभूत ग्रंथराज मात्र हमारी धरोहर या विरासत ही नहीं है, अपितु वे हमारी पहचान हैं। वे हमारी आस्था के

प्रतीक और श्रद्धा के आधार मात्र ही नहीं है। अपितु अगाध ज्ञान राशि के अक्षय भण्डार होने से हमारे आराध्य हैं और साधनभूत हैं उस ध्येय या लक्ष्य को प्राप्त करने के जो आत्म कल्याण या मुक्ति रुप हैं। यदि उन ग्रंथों का ही लोप हो गया तो न तो हमारा धर्म बचेगा और न बचेंगे हमारे संस्कार। अत: यह आवश्यक है कि प्राचीन जीर्ण शीर्ण जिन मंदिरों के जीर्णोद्धार, पुरातात्वीय संरक्षण तथा तीर्थ क्षेत्रों के उद्धार एवं संरक्षण के प्रति समाज में जो जागृति आई है और इस दिशा में लोग जिस तत्परता से उन्मुख हुए हैं उसी तत्परता एवं उत्साह से प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की उपलब्धता, लिप्यन्तरण, अनुवाद, संशोधन, सम्पादन एवं प्रकाशन के कार्य में भी लग जाना चाहिये।

जहां तक मूल आगम की बात है वे सम्पूर्ण चराचर जगत के तीनों कालों के समस्त विषयों के सम्पूर्ण ज्ञान के अक्षय भण्डार हैं। उनकी रचना के विषय में कहा जाता है कि तीर्थंकर महावीर की जो वाणी दिव्य देशना (दिव्य ध्वनि) खिरी वह अर्थ रुप थी जिसे गणधर देवों ने ग्रहण किया। तीर्थंकर की वाणी (दिव्य ध्वनि) को ग्रहण करने की योग्यता, पात्रता या क्षमता उनके गणधर देवों में ही होती है। इसके अतिरिक्त अर्थ रुप में ग्रहीत उस दिव्य ध्वनि को शब्दों के माध्यम से अपने शिष्यों, प्रशिष्यों तक पहुंचाने का सामर्थ्य भी उन्हीं को है। अत: गणधरों श्रुत केवलियों ने अर्थ रुप दिव्य देशना (जिनागम) के आधार पर अंग और पूर्वों की रचना कर मानव समाज का उपकार किया। उनके शिष्यों प्रशिष्यों द्वारा सुदीर्घ काल (लगभग एक सहस्र वर्ष) तक गुरु-शिष्य परम्परा के द्वारा कंठस्थ कर उस अगाध ज्ञान राशि को जीवित रखा गया क्योंकि अपरिग्रही दिगम्बर जैन साधु किसी लिखित ग्रंथ को अपने साथ नहीं रखते हैं, इसीलिये वे निर्ग्रन्थ कहलाते रहे हैं। तत्पश्चात आरातीत आचार्यों ने काल दोष के प्रभाव वश क्षीण हुई आयु, बुद्धि, बल, शरीर आदि वाले मनुष्यों के ज्ञानार्थ एवं उपकारार्थ विविध ग्रंथों की रचना की। इस सम्पूर्ण जिनागम के तीन प्रवक्ता मुख्य रुप से हुए सर्व प्रथम सर्वज्ञ जो तीर्थंकर का सामान्य केवली होते हैं, द्वितीय गणधर श्रुत केवली और तृतीय आरातीय आचार्य। श्री पूज्यपाद स्वामी ने सर्वार्थ सिद्धि में उक्त आशय का प्रतिपादन करते हुए कहा है -

''कि कृतोऽयं विशेष: ? वक्तृ विशेष कृत:। त्रयोवक्तार: सर्वज्ञस्तीर्थंकर इतरो वा श्रुत केवली आरातीयश्चेति। तत्र सर्वज्ञेन परमर्षिणा परमाचिन्त्य केवल ज्ञान विभूति विशेषेण अर्थात आगम उष्टि: । तस्य प्रत्यक्षदर्शित्वात्प्रक्षीणदोषत्वाच्च प्रामाण्यम् । तस्य साक्षाच्छिस्यैर्बुद्धयतिशयर्द्धियुक्तैगणधरै: श्रुतकेवलिभिरनुस्मृत ग्रंथ रचनमंगपूर्वलक्षणम्। तत्प्रमाणम् तत्प्रामाण्यात्। आरातीयै: पुनराचार्यै: कालदोषात्संक्षिप्तायुर्मतिबलशिष्यानुग्रहार्थं दशवैकालिकाद्युतपनिबद्धम्। तत्प्रमाणर्मतस्तदेवेदमिति क्षीरार्णव जलं घटगृहीतमर्थ।''

अर्थात् यह भेद किंकृत है ? समाधान यह भेद वक्ता विशेषकृत है। वक्ता तीन प्रकार के हैं - सर्वज्ञ (तीर्थंकर या सामान्य केवली) तथा श्रुतकेवली और आरातीय। इनमें से परम ऋषि

सर्वज्ञ उत्कृष्ट और अचिन्त्य केवल ज्ञान रुपी विभूति विशेष से युक्त हैं, इस कारण उन्होंने अर्थ रुप से आगम का उपदेश दिया। ये सर्वज्ञ प्रत्यक्षदर्शी और दोष मुक्त हैं, इसलिए प्रमाण हैं। इनके साक्षत् शिष्य और बुद्धि के अतिशय रुप ऋद्धि से युक्त गणधर श्रुत केवलियों ने अर्थरुप आगम का स्मरण कर अंग और पूर्व ग्रंथों की रचना की। सर्वज्ञ देव की प्रमाणता के कारण ये भी प्रमाण हैं तथा आरातीय आचार्यों ने काल दोष से जिनकी आयु, मति और बल घट गया है ऐसे शिष्यों के अनुग्रहार्थ दशवैकालिक आदि उपनिबद्ध किए। अर्थ रुप से वह भी यह ही है, अत: प्रमाण है। जैसे क्षीर सागर से घट में लिया गया जल।

इस प्रकार जिनागम या जिनवाणी के तीन प्रमुख प्रवक्ता हुए। इनमें भी गणधर श्रुतकेवली का स्थान महत्वपूर्ण है। क्योंकि उन्होंने सर्वज्ञ (तीर्थंकर या सामान्य केवली) द्वारा दिए गए अर्थरुप से आगम के उपदेश को जन कल्याण की दृष्टि से सर्व सामान्य को सुलभ कराने हेतु स्मरण कर उसे शब्द रुप देकर द्वादशांग श्रुत एवं पूर्वों की रचना की। तीर्थंकर महावीर के ग्यारह गणधर या प्रमुख शिष्य थे। जो सभी महापण्डित प्रत्युत्पन्नमति एवं सम्पूर्ण श्रुत के धारक श्रुत केवली थे। इनमें से नौ गणधर तो तीर्थंकर महावीर के जीवन काल में ही मोक्ष गमन कर गए। उनका शिष्य समुदाय शेष दो गणधरों के आचार्यत्व के अधीन कर दिया गया। क्योंकि उन नौगणधरों के स्थान, पर नए गणधर बनाए जाने की परम्परा का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। भगवान महावीर के निर्वाण के साथ ही गौतम स्वामी को केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई और वे मौन साधना में लग गए। अत: श्रुतकेवली श्री सुधर्मास्वामी चतुर्विध संघ के प्रथम पट्टाचार्य पद पर अभिषिक्त हुए। गणधर सुधर्मास्वामी के उपरान्त जम्बू स्वामी पट्टाचार्य हुए जो केवल ज्ञान प्राप्त करने वाले अंतिम पट्टाचार्य थे। उनके पश्चात जो पांच पट्टाचार्य हुए वे सम्पूर्ण द्वादशांग श्रुतकेवली तो थे किन्तु उन्हें केवलज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकी। दिगम्बर और श्वेतांबर उभय परम्पराओं के अनुसार अंतिम श्रुत केवली 'भद्रबाहु' थे। दिगम्बर-श्वेताम्बर दोनो परम्पराओं में भद्रबाहु स्वामी को समान रुप से मान्यता प्राप्त है।

पं. फूलचन्द्र सिद्धांत शास्त्री के अनुसार भगवान महावीर स्वामी के मोक्ष गमन के पश्चात तीन अनुबद्ध केवली और पांच श्रुतकेवली हुए। इनमें अंतिम श्रुत केवली भद्रबाहु थे। इन तक सम्पूर्ण अंग श्रुत अपने मूल रुप में आया। उसके बाद उत्तरोत्तर बुद्धि बल और धारणा शाक्ति के क्षीण होते जाने से तथा पुस्तकारुढ़ किए जाने की परिपाटी नहीं होने से वह क्रमश: विच्छिन्न हो गया। इस प्रकार एक ओर जहां अंग श्रुत का अभाव होता गया वहां दूसरी ओर श्रुत परम्परा को अविच्छिन्न बनाए रखने के लिए और उसका सीधा सम्बन्ध भगवान महावीर की वाणी से बनाए रखने के लिए प्रयत्न भी होते रहे हैं।

(सर्वार्थसिद्धि में पं. फूलचंद्र जी की प्रस्तावना)

जैन धर्म के अनुसार ज्ञान के धारको में दो प्रकार के ज्ञानी महत्वपूर्ण माने जाते है-एक

प्रत्यक्ष ज्ञान के धारक और दूसरे परोक्ष ज्ञान के धारक। प्रत्यक्ष ज्ञानियों में केवल ज्ञानी का और परोक्ष ज्ञानियों में श्रुतकेवली का पद महत्वपूर्ण होता है। केवल ज्ञानी समस्त चराचर जगत् को प्रत्यक्ष जानते और देखते हैं तथा श्रुत केवली शास्त्र में वर्णित प्रत्येक विषय को स्पष्ट जानते हैं। जैन धर्म के अनुसार ज्ञान के पांच भेद होते हैं - मतिज्ञान, श्रुतज्ञान अवधि ज्ञान, मनः पर्यय ज्ञान और केवलज्ञान। इनमें प्रथम दो ज्ञान मतिज्ञान और श्रुतज्ञान परोक्ष ज्ञान हैं तथा शेष तीनों अवधिज्ञान, मन:पर्यय और केवलज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान हैं। इनमें श्रुतज्ञान के दो भेद हैं-अंगबाह्य (अनंगप्रविष्ट) और अंग प्रविष्ट। श्रुतज्ञान के भेदों का वर्णन विस्तार पूर्वक सर्वार्थ सिद्धि में निम्न प्रकार से किया गया है -

"द्विभेदमनेक भेदं द्वादश भेदमिति। द्विभेदं तावत् अंगबाह्यमंगप्रविष्टमिति। अंग बाह्यमनेकविधं दशवैकालिकोत्तराध्ययनादि। अंग प्रविष्टं द्वादशविधम्। तद्यथा आचारः सूत्रकृतं स्थानं समवायः व्याख्या प्रज्ञप्ति, ज्ञातृधर्म कथा उपासकाध्ययनं अन्तकृद्दश अनुत्तरौपपादिकदशं प्रश्नव्याकरणं विपाक सूत्रं दृष्टिवाद इति। दृष्टिवादः पञ्चविधः - परिकर्म सूत्रं प्रथमानुयोगः पूर्वगतं चूलिका चेति। तत्र पूर्वगतं चतुर्दश विधम् उत्पादपूर्वं अग्रायणीयं वीर्यानुप्रवादं अस्तिनास्ति प्रवादं सत्यप्रवादं आत्मप्रवादं कर्मप्रवादं प्रत्याख्याननामधेयं विद्यानुवाद प्रवादं कल्याणनामधेयं प्राणावायं क्रियाविशालं लोकबिन्दुसारमिति। तदेतत् श्रुतं द्विभेदमनेकभेदं द्वादश भेदं मिति।

- सर्वार्थसिद्धि, प्रथम अध्याय, 20/210

अर्थात् दो भेद, अनेक भेद और बारह भेद। श्रुतज्ञान के दो भेद अंगबाह्य और अंग प्रविष्ट हैं। अंग बाह्य के दशवैकालिक और उत्तराध्ययन आदि अनेक भेद हैं। अंग प्रविष्ट के बारह भेद हैं। यथा-आचार सूत्रकृत, स्थान, समवाय, व्याख्याप्रज्ञप्ति, ज्ञातृधर्मकथा, उपासकाध्ययन, अन्तकृद्दश, अनुत्तरौपपादिक दश, प्रश्न व्याकरण, विपाक सूत्र और दृष्टिवाद दृष्टिवाद के पांच भेद हैं- परिकर्म, सूत्र, प्रथमानुयोग, पूर्वगत और चूलिका। इनमें से पूर्वगत के चौदह भेद है - उत्पाद पूर्व, आग्रायणीय, वीर्यानुवाद, अस्तिनास्तिप्रवाद, ज्ञान प्रवाद, सत्यप्रवाद, आत्मप्रवाद, प्रत्याख्याननामधेय, विद्यानुवाद, कल्याण नामधेय, प्राणावाय, क्रिया विशाल और लोक बिन्दुसार। इस प्रकार यह श्रुत दो प्रकार का अनेक प्रकार का और बारह प्रकार का है।

जयधवला सहित कसाय पाहुड में अनंग प्रविष्ट (अंगबाह्य) श्रुत के चौदह अर्थाधिकार प्रतिपादित किए है। यथा-

तं जहा णाणस्स पंच अत्थाहियारा- मइणाणं सुदणाणं ओहिणाणं मणपज्जवणाणं केवलणाणं चेदि। सुदणाणे दुबे अत्थाहियारा अणंग पविट्ठ मंग पविट्ठं चेदि। अणंग पविट्ठस्स चौदस अत्थाहियारा-सामाइयं चऊ वीस त्थओ वेदणां पडिक्कमणं वेणइयं किदियम्मं

दसवेयालिया उत्तरज्झयणं कप्पववहारो कप्पाकप्पियं पुण्डरीयं महापुण्डरीयं णिसीहिय चेदि। कसाय पाहुड, भाग 1 पेज्जदोस विहत्ति, गाथा 2/233.

अर्थात् ज्ञान के पांच अर्थाधिकार है- मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन:पर्ययज्ञान और केवल ज्ञान। श्रुतज्ञान के दो अर्थाधिकार है-अनंगप्रविष्ट और अंग प्रविष्ट। अनंग प्रविष्ट के चौदह अर्थाधिकार है। यथा सामायिक, चतुर्विंशतिस्तव, वन्दना, प्रतिक्रमण, वैनयिक, कृतिकर्म, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, कल्पव्यवहार, कल्प्याकल्प्य, पुण्डरीक, महापुण्डरीक और निद्धिका।

श्रुत के उपर्युक्त समस्त भेदप्रभेदों के अनुसार ग्रंथों महाग्रंथों की गणना और कल्पना की जाय तो श्रुत की विशालता का आभास सहज ही हो जाता है। वर्तमान में उस श्रुत की उपलब्धता हेतु जो भी प्रयास किए जा रहे है वह ''ऊंट के मुंह में जीरा'' या ''सागर की बूंद'' की भांति हैं। तथापि वर्तमान में जैन वाङ्मय के अन्तर्गत जो भी ग्रंथ उपलब्ध हैं उनमें कितने और कौन से हैं जो मूलश्रुत के अनुरुप है-यह विचारणीय है ये अंतिम श्रुतकेवली भद्रबाहु अंग श्रुत के अंतिम धारक और अंतिम प्रवक्ता थे। उनके पश्चात मूल अंगश्रुत और अनंग श्रुत को परिस्थिति वश लिपिबद्ध नहीं किया जा सका। किन्तु कालान्तर में ऐसे आचार्य हुए हैं जिन्होने अंगश्रुत का आश्रय लेकर ग्रंथों की रचना की और इस प्रकार श्रुत की रक्षा करने का प्रयास किया। षट्खण्डागम और कषाय प्राभृत इसी श्रेणी के ग्रंथ हैं जिनकी रचना क्रमश: आचार्य पुष्पदन्त भूतबलि विक्रम की प्रथम द्वितीय शताब्दी और आचार्य गुणधर ने की। इसी क्रम में आचार्य गुणधर के पश्चात आचार्य यतिवृषभ (विक्रम की द्वितीय शताब्दी) ने कषाय प्राभृत की चूर्णि की रचना की। विक्रम की प्रथम शताब्दी के मनीषी आचार्य कुन्दकुन्द ने तो अपने ग्रंथ समय पाहुड में वोच्छामि समय पाहुड मिणमो सुयकेवली भणियम्। इत्यादि गाथा के द्वारा समय पाहुड को श्रुतकेवली भणित कहा है जिससे इस ग्रंथ का सीधा सम्बन्ध श्रुत से प्रतिभासित होता है। श्री कुन्दकुन्दाचार्य के ही समकालीन या परवर्ती आचार्य वट्टकेर ने मूलाचार (आचारंग), आचार्य शिवार्य ने मूलाराधना, श्री गृद्ध पिच्छाचार्य उमास्वामी ने तत्वार्थ सूत्र की रचनाकर श्रुत परम्परा को जीवंत रखने का प्रयास किया। इसके पश्चात भी परवर्ती अनेक आचार्यों ने विविध विषयों को अधिकृत कर अनेक ग्रंथों की रचना की जिनमें विषयों का प्रतिपादन श्रुत का ही अनुसरण करते हुए किया गया था। ऐसे ग्रंथों की संख्या भी प्रचुर है। उनमें से कुछ ग्रंथों का अनुवाद और सम्पादन किया जाकर मुद्रण एवं प्रकाशन भी किया जा चुका है। फिर भी अभी भी अनेक ग्रंथ असूर्यम्पश्य हैं।

ऐसा कहा जाता है कि वस्तुत: विक्रम की प्रथम द्वितीय शताब्दी में श्रुतावतार हुआ था, प्राप्त विवरण के अनुसार दिगम्बर जैन परम्परा में ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी वीर नि.सं. 601 (75 ईसवी) को आचार्य पुष्पदंत भूतबलि द्वारा प्रणीत पूर्वों के एक अंश पर आधारित षट्खण्डागम ग्रंथ को पुस्तकारुढ़ कर के चतुर्विध संघ के द्वारा विधिवत् उसकी पूजा की गई थी। उस समय

पुस्तक साथ में लिए हुए ज्ञान की देवी सरस्वती का अवतरण हुआ था। इससे षट्खण्डागम की महती प्रभावना और श्रुतांश होने का आभास मिलता है। यद्यपि षट् खण्डागम की रचना किए जाने से पूर्व कषाय पाहुड भगवती आराधना, मूलाचार तथा कुन्दकुन्दाचार्यकृत समय पाहुड आदि ग्रंथों की रचना हो चुकी थी, अत: षट् खण्डागम श्रुत आगम पर आधारित दिगम्बर परम्परा का आद्यग्रंथ तो था नहीं, तथापि उसे इतना अधिक महत्व दिया गया और श्रुत पंचमी को उसकी पूजा अर्चना की गई। इसका कारण सम्भवत: यह था कि श्रुत पंचमी के दिन किसी आगमिक ग्रंथ को सर्वप्रथम लिपिबद्ध करके पुस्तकारुढ़ किया गया। इस प्रकार ग्रंथों को लिपिबद्ध करके ग्रंथ/पुस्तक के रुप में निबद्ध करने और उसे संरक्षित करने के अभियान का सूत्रपात हुआ और इसके पश्चात पूर्वाचार्यों द्वारा अनेक वर्ष पूर्व रचित शास्त्र। ग्रंथ भी लिपिबद्ध कर पुस्तकारुढ़ किए जाने लगे। इससे पूर्व वे समस्त ग्रंथ गुरु-शिष्य परम्परा से कण्ठस्थ किए जाकर मौखिक रुप से आदान प्रदान के द्वारा ही चले आ रहे थे।

हमारे लिए यह गर्व की बात है कि काल प्रभाव वश, परिस्थितिवश तथा भीषण आघात आदि के कारण हमारे विपुल ग्रंथों के नष्ट या विलुप्त होने के बावजूद अभी भी मुद्रित/अमुद्रित/अप्रकाशित विशाल ग्रंथ राशि विद्यमान है जिसके संरक्षण एवं प्रकाशन की समुचित व्यवस्था किए जाने हेतु समन्वित प्रयास अपेक्षित है। इसके लिए उन संस्थाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये जो इस कार्य में सर्वतो भावेन समर्पित होकर संलग्न है। यथाशक्य प्रयासरत है, तथापि **अभी कुछ वर्ष पूर्व ही, मध्यप्रदेश के बीना नगर में स्थापित अनेकांत ज्ञान मंदिर एवं शोध संस्थान ने साधनाभाव होते हुए भी अल्प समय में हस्तलिखित ग्रंथों की पाण्डुलिपियों का संकलन कर उनके संरक्षण का श्रम साध्य प्रयास किया है वह निश्चय ही सराहनीय है। हमारा कर्तव्य है कि ऐसी संस्था को हम अपना पूर्ण सहयोग देकर उसे सतत प्रोत्साहित करें। क्योंकि जो कार्य हम स्वयं (एकाकी) नहीं कर सकते वह कार्य यदि कोई संस्था करती है तो निश्चय ही वह हमारी बधाई एवं सहयोग की पात्र है।**

अनेकान्ताष्टक

श्री अनेकान्त ज्ञान मंदिर परिचायक काव्य-प्रसून

- डा. महेन्द्र सागर प्रचंडिया

शोध ज्ञान मंदिर बना,
बीना में संस्थान।
नई पुरानी पोथियां,
संग्रह है प्रतिमान ॥

॥ 1 ॥

भैया जी संदीप का,
सफल हुआ श्रमदान।
रखे सुरक्षित ग्रंथ सब,
है विद्या - वरदान ॥

॥ 2 ॥

सुलभ यहां पर कर दिये,
दुर्लभ ग्रंथ तमाम।
यहां ठहर कर बांचिये,
है प्रबन्ध अभिराम ॥

॥ 3 ॥

दूर दूर से पहुंचकर,
करते खोजी खोज।
जिनवाणी के सूर से,
खिलता ज्ञान सरोज ॥

॥ 4 ॥

अनेकान्त सार्थक दिया,
नाम सरल अभिवृन्द।
त्वरत शमन होते यहां,
वैचारिक सब द्वन्द ॥

॥ 5 ॥

कथन सभी का श्रवणकर,
करे अर्थ सत भंग।
यहां अपेक्षा से सदा,
सच है सभी प्रसंग ॥

॥ 6 ॥

हर पदार्थ में व्याप्त हैं,
नित्य अनेकों धर्म।
अनेकान्त से समझिये,
छिपे हुए सब मर्म ॥

॥ 7 ॥

स्याद्वाद शैली करें,
नीर-क्षीर का काम।
इसके सतत् प्रयोग से,
होय शान्त संग्राम ॥

॥ 8 ॥

"बुन्देलखण्ड क्षेत्र में विशाल श्रुत भण्डार"

ब्र. संदीप जैन 'सरल'

मुद्रणालय के विकास के पूर्व आध्यात्मिक, सैद्धांतिक, दार्शनिक, आयुर्वेदिक, वैयाकरणिक, ज्योतिष, कर्मकाण्ड, पूजन विधान आदि विषयों से सम्बन्धित हस्तलिखित ग्रन्थ ही प्रचलित थे, तथा दैनिक अध्ययन अध्यापन, चिन्तन-मनन, पूजन विधान आदि में इन्हीं ग्रन्थों का प्रयोग किया जाता था। पहले हस्तलिखित ग्रन्थों का लिखना-लिखाना और प्रत्येक जिनालय में पहुंचाना पुण्य का कार्य माना जाता था।

मुद्रणालय के अविष्कार के साथ ही हस्तलिखित ग्रन्थों का प्रकाशन प्रारम्भ हो गया और सामान्य जन को मुद्रित ग्रन्थ उपलब्ध होने लगे। जो सभी को पढ़ने में आसान लगे, धीरे धीरे स्थिति यह हुई कि हस्तलिखित ग्रन्थों के पढ़ने वालों की संख्या कम होने लगी और ग्रन्थों को अलमारियों में बंद करके रख दिया गया और ग्रन्थों को पढ़ने की बात तो बहुत दूर रही, उन ग्रन्थों को सम्हालने वाले भी नहीं रहे और वे ग्रन्थ उपेक्षा के शिकार बनने लगे। हमने अपने ही प्रमाद एवं उपेक्षावृत्ति के कारण अनेक शास्त्रभण्डारों को चूहों और दीमकों से नष्ट होते देखा है। वर्तमान में जिन मंदिरों में रखी हुई हस्तलिखित जिनवाणी का उपयोग एवं महत्व भले ही स्थानीय समाज को न हो लेकिन ये हस्तलिखित ग्रन्थ हमारी अमूल्य सम्पदा हैं। इन ग्रन्थों में तात्कालिक देश की भौगोलिक, ऐतिहासिक, सामाजिक स्थिति का वर्णन मिलता है। शोधार्थियों एवं मनीषियों के लिए तो उनकी साहित्यिक साधना में ये ही ग्रन्थ मील के पत्थर बनते हैं। इन गन्थों को सुरक्षित रखने के लिए विशेष सुरक्षा व्यवस्था एवं साज सम्हाल की जरुरत है जो कि प्रत्येक स्थल पर सम्भव नहीं है, इस दृष्टि से उत्तर भारत का विशाल केन्द्रीय संग्रहालय बनाने की दृष्टि से बुन्देलखण्ड क्षेत्र के प्रसिद्ध रेलवे जंकशन **बीना (सागर) म.प्र. में 20 फरवरी 1992 को संतशिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के परम शिष्य मुनि श्री 108 सरल सागर जी महाराज के पुनीत सानिध्य में "अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान"** पाण्डुलिपि संग्रहालय की स्थापना की गई। शोधार्थियों, व्रतियों एवं विद्वानों के लिए समुचित आवास, आहार आदि की व्यवस्था के साथ-साथ लगभग 6000 मुद्रित ग्रन्थों का संकलन भी किया है।

"शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान" का प्रणयन कर देश के कोने-कोने में जाकर हस्तलिखित ग्रन्थों की संरक्षा का बिगुल बजाया। सम्पूर्ण देश में व्यापक रुप से व्याप्त माँ जिनवाणी की उपेक्षणीय दशा को दूर करने के लिए देश के 10 प्रांतों के लगभग 300 शहरों, कस्बों में लगभग 50 से भी अधिक मुनि संघों के सानिध्य में पाण्डुलिपि प्रदर्शनी एव जिनवाणी संरक्षण पर धर्म सभाओं का आयोजन किया जा चुका है। फलत: अनेक स्थलों से जिनवाणी संरक्षण की प्रायोजनायें प्रारम्भ हुई है। अनेक शास्त्रभण्डारों को सुव्यवस्थित रुप दिया जा चुका है। **ग्रन्थ संरक्षण की इस पवित्र योजना में 24 मार्च 95 से 10 जनवरी 2000 के मध्य**

देश के 8 प्रांतों के लगभग 200 स्थलों से 5500 हस्तलिखित पाण्डुलिपियां प्राप्त हुई हैं। इसके साथ ही लगभग 50 बहुमूल्य ताड़पत्र पाण्डुलिपियां भी हैं। इस पुनीत कार्य से प्रभावित होकर श्री शिवलाल रामचंद वाचनालय, माढ़ा (सोलापुर) के संचालक जीवदया प्रेमी श्री विलास जी शहा ने अपना सम्पूर्ण भण्डार संस्थान के लिए सुपुर्द कर दिया। इसी श्रृंखला में भानपुरा (मंदसौर) म.प्र. का विशाल हस्तलिखित भण्डार जिसमें 1000 से भी अधिक संस्कृत, प्राकृत और हिन्दी भाषा की पाण्डुलिपियां थीं, वह भी ज्ञान मंदिर में आ चुका है। विश्वप्रसिद्ध सेठ भागचन्द्र सोनी जी नसियां, अजमेर (राज.) से सरस्वती भण्डार की लगभग 1300 हस्तलिखित पाण्डुलिपियां सेठ निर्मलचन्द्र प्रमोदकुमार सोनी एवं सरस्वती भण्डार के व्यवस्थापक इन्दरचंद जी पाटनी के उदार सहयोग से प्राप्तकर अनेकान्त ज्ञान मंदिर गौरान्वित हुआ है। न्यायाचार्य डॉ. दरबारीलाल कोठिया बीना, पं. बंशीधर व्याकरणाचार्य बीना एवं पं. दामोदर जी शास्त्री, सागर ने अपने अपने शास्त्र भण्डारों के ग्रन्थ प्रदान कर दिये हैं। अनेक स्थलों के श्रावकों ने रेलवे पार्सल द्वारा भी सहर्ष ग्रन्थ भेजकर हमारी योजना का सम्मान किया है।

जिनवाणी संरक्षण-सम्बर्द्धन की इस योजना से प्रभावित होकर इसकी समृद्धि एवं विकास हेतु देश के 30 से भी अधिक आचार्य संघों ने अपना लिखित आशीर्वाद प्रदानकर जिनवाणी शिशुओं के उत्साह को प्रफुल्लित किया है। **परम पूज्य मुनि श्री सरल सागर जी, परम पूज्य मुनि श्री ब्रम्हानंद सागर जी, पूज्य मुनि समयसागर जी, पूज्य मुनि क्षमासागर जी, पूज्य मुनि प्रमाण सागर जी, पू. मुनि निर्णय सागर जी आदि मुनि संघों के अतिरिक्त आचार्य श्री 108 विराग सागर जी एवं आचार्य श्री 108 दयासागर जी का पदार्पण ज्ञान मंदिर में हो चुका है।**

देश के शीर्षस्थ उच्चकोटि के शताधिक मनीषी विद्वानों एवं श्रीमंतों ने इस कार्य की सराहना ही नहीं की अपितु इसके विकास में हर प्रकार का सहयोग प्रदान किया है। इसके साथ ही देश के विभिन्न स्थलों से प्रकाशित होने वाले पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों ने अनेकान्त ज्ञान मंदिर सम्बन्धी समाचार अत्यधिक मात्रा में प्रकाशित कर इसके प्रचार-प्रसार में महती भूमिका अदा कर रहे हैं।

अनेकान्त ज्ञान मंदिर के समुचित निर्माण कार्य में, ग्रन्थों के संरक्षण में वाहन सुलभ कराने में, साहित्य प्रकाशन आदि के क्षेत्र में समूचे भारत वर्ष की जैन समाज का अच्छा सहयोग प्राप्त हो रहा है। अनेकान्त ज्ञान मंदिर में ग्रन्थों के संरक्षण एवं अन्य समुचित उपयोग के लिए **श्री लक्ष्मीनारायण जी एडवोकेट भरतपुर (राज.) ने मोदी जेरोक्स मशीन एवं श्री कमलेश कुमार जैन कानपुर ने कम्प्यूटर प्रदानकर महान सहयोग किया है।**

आगामी समय में अनेकान्त ज्ञान मंदिर ''श्रुतधाम'' के रुप में अग्रसर होगा। जहां पर त्यागी व्रतियों एवं सेवानिर्वृत्त प्रज्ञापुरुषों के लिए ज्ञानाराधन, आत्मसाधना हेतु अनेकान्त प्रज्ञाश्रम,

(पेज ३६ देखें)

जैन तीर्थों पर तीर्थंकरों के समवशरण और उनकी देशना का प्रभाव

✍ रामजीत जैन, ग्वालियर

प्राकृतिक सुषमा से परिपूर्ण बुन्देलखण्ड की भूमि, शैल मालाएं, नदी तट, झरने, वनवीथियां साधकों को आत्मसाधना हेतु बड़ी अनुकूल रही हैं। यही कारण है कि करोड़ों मुनिराजों की आत्मसाधना यहां सफल हुई। वे तपश्चरण कर केवली हुए और अन्त में मोक्ष पधारे। वे निर्वाण भूमियां ही सिद्धक्षेत्र कहलायीं। यहां के सोनागिर द्रोणगिर रेशंदीगिरि आदि ऐसे ही विश्रुत क्षेत्र हैं। बुन्दलेखण्ड में जैन तीर्थक्षेत्रों की बहुलता है।

यहां की पावन धरा तीर्थंकर भगवन्तों के मंगल बिहारों से भी पावन हुई है। उन्होंने तथा अन्य केवलज्ञानी अर्हन्त भगवन्तों ने लोक हितकारी दिव्य उपदेशों से लोकजीवन को बड़ी गहराई तक प्रभावित किया था जिसके साक्ष्य आज भी यहां सर्वत्र परिलक्षित होते हैं। भ.ऋषभदेव, भ.चन्द्रप्रभ, भ. पार्श्वनाथ एवं भ. महावीर के लोकवाणी प्रभावों का चिन्तन इस आलेख में दृष्टव्य है।

भारतीय संस्कृति में तीर्थों का बड़ा महत्व है। प्रत्येक धर्म और सम्प्रदाय में तीर्थों का प्रचलन है। प्रत्येक धर्म के अनुयायी अपने तीर्थों की वन्दना यात्रा के लिये भक्ति-भाव से जाते हैं और आत्मशान्ति प्राप्त करते हैं। तीर्थस्थान पवित्रता, शान्ति और कल्याण के धाम माने जाते हैं। तीर्थ के प्रवर्तक, उद्धारक एवं व्यवस्थापक तीर्थंकर कहलाते हैं। और जो इस अपार संसार समुद्र को पार करे उसे तीर्थ कहते हैं।

जैन तीर्थ क्षेत्र भाव तीर्थ के भौतिक पावन स्थल हैं जहां तीर्थंकरों का गर्भावतरण, जन्मोत्सव, अभिनिष्क्रमण, तपश्चरण, केवलज्ञान, प्राप्ति निर्वाण लाभ हुआ हो, पारणा बिहार आदि हुए हों, जहां कोई विशिष्ट धार्मिक घटना घटी हो, कोई अतिशय हुआ हो या अतिशय पूर्ण जिनबिम्बादि हों, अथवा जो प्राचीन सांस्कृतिक केन्द्र या प्रसिद्ध कलाधाम रहे हों। ऐसे बुन्देलखण्ड के पवित्र स्थलों में सोनागिर, रेशंदीगिर जैसे क्षेत्र भी हैं, खजुराहों और देवगढ़ जैसे विश्वविख्यात कलाधाम भी है, और अनेक प्रसिद्ध अतिशय क्षेत्र भी है। जैन संस्कृति के ये कलापूर्ण प्रतीक वस्तुत: विंध्य भूमि के गौरव हैं। धार्मिक जनता के लिये धर्म प्रेरणा के स्रोत हैं तो कला प्रेमी पर्यटकों के लिये दर्शनीय स्थल हैं और कला मर्मज्ञों एवं पुरातत्वज्ञों के लिये सामान्य इतिहास की तथा मुख्यता वहां जैन संस्कृति की प्रचुर सामग्री उपलब्ध है।

बुन्देलखण्ड की भूमि वीर प्रसूता है, परन्तु वहां की प्राकृतिक स्थिति, सुरम्य शैलमालायें,

नदियों के तट, कलकल निनाद झरनें और वन-वीथियां भव्य ज्ञानी जनों को आत्म कल्याणार्थ तपस्या करने को और ध्यानमग्न होकर आत्म स्वभाव में विभोर होने को आकर्षित करती हैं। करोड़ों निर्ग्रन्थ मुनियों की आत्म साधना इस प्रदेश के पर्वत शिखाओं पर गुफाओं और नदी तटों पर ध्यान करते हुई सफल हुई हैं। उन्होने केवल ज्ञान प्रगट होने पर जगत के जीवों को कल्याणकारी और हितकारी उपदेश दिया और आयु कर्म पूर्ण होने पर यही से मुक्त हुए। इस प्रदेश में ऐसे स्थान हैं जहां मुनियों का निर्वाण हुआ इसलिये वे सिद्धक्षेत्र कहे जाते हैं। बुन्देलखण्ड में सिद्धक्षेत्र अन्यत्र से यहां बहुतायत में पाये जाते हैं।

अतिविशिष्टता :-

यहां भगवान ऋषभदेव, चन्द्रप्रभु, पार्श्वनाथ और महावीर स्वामी का बिहार तो हुआ ही पर एक तथ्य विशिष्ट तौर पर ध्यान देने योग्य है कि सोलहवें तीर्थंकर भगवान शान्तिनाथ का इस बुन्देलखण्ड प्रदेश से कोई साक्षात् प्रत्यक्ष सम्बंध नहीं रहा, परन्तु ये तीर्थंकर इस प्रदेश में सर्वाधिक लोकप्रिय और इष्टदेव रहे हैं, इस प्रदेश में विशाल मनोज्ञ एवं चमत्कारी प्रतिमाएं भगवान शान्तिनाथ की प्रचुर मात्रा में पाई जाती है। पांचवी छठी ई. शताब्दी में बुन्देलखण्ड भू-भाग पर बर्बर हूगों ने आक्रमण किया और विध्वंस लीला की। अराजकता के दौर में त्राहि-त्राहि करती जनता ने शान्ति प्रदाता भगवान शान्तिनाथ की प्रतिष्ठा एवं उपासना को प्रोत्साहन दिया। चांर-पांच सौ वर्ष के देशीय शासन के पश्चात् मुसलमानों का प्रवेश हुआ और अशांति की स्थिति पुन: हो गई। उस समय यवन आक्रान्ताओं के आक्रमण प्रारम्भ हो गये थे। जब भी खड्ग से युद्ध क्षेत्र में संग्राम हो रहे थे, उस समय वह धर्मवीर पाडाशाह भव्य देवालयों का निर्माण करके धर्म क्षेत्र में स्थायित्व प्रदान कर रहा था। इस कारण भगवान शान्तिनाथ की पूजा की सार्थकता बनी रही। बुन्देलखण्ड के प्राचीन जिन मंदिरों में पाडाशाह द्वारा प्रतिष्ठित भगवान शान्तिनाथ की प्रतिमाओं के बारे में अनेक कहानियां प्रचलित हैं। पूरे प्रदेश में अतिशय क्षेत्रों की प्रधानता रही है और अधिकांशत: भगवान शान्तिनाथ की प्रतिमायें हैं।

ऋषभदेव :-

अहिंसा प्रधान एवं आध्यात्मिक श्रमण संस्कृति के इस युग के प्रारम्भकर्ता भगवान ऋषभदेव थे। वे भारत के प्रथम राजा, प्रथम मुनि, प्रथम केवली, प्रथम तीर्थंकर और प्रथम धर्म चक्रवर्ती थे। उन्होने बावन जनपदों का निर्माण किया था उनमें चेदि और वत्स जनपद भी थे। इन्हीं दो जनपदों को मिलाकर कालान्तर में मध्यप्रदेश बना। हिमालय और विंध्याचल के बीच का देश मध्यप्रदेश कहा गया है। इस मध्यप्रदेश के चेदि जनपद को वर्तमान बुन्देलखण्ड कहा गया है। इसमें 14 जिले हैं। इनमें पांच जिले-हमीरपुर, बांदा, जालोन, झांसी, ललितपुर उत्तरप्रदेश दतिया, गुना, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, सतना, दमोह, मण्डला और सागर मध्यप्रदेश

राज्य में हैं। भिण्ड, मुरैना, ग्वालियर और शिवपुरी, रीवा और जबलपुर जिले को भी इसी बुन्देलखण्ड में सम्मिलित कर लिया जाता है।

ऋषभदेव ने मानवीय अस्तित्व का अनुसंधान किया कि बिना तप और अहिंसा के मानवता का अस्तित्व स्थित और स्थिर नहीं रह सकता। अहिंसा तप ही मानव की संजीवनी शक्ति है। मानव जीवन की पवित्रता, आत्म शुद्धि के लिये सम्यक् आचार, सम्यकज्ञान की आवश्यकता है। ऋषभ ने इन क्रान्तिकारी विचारों को जीवन में प्रवेश पर बल दिया और तप तथा अपरिग्रह का सिद्धान्त अपनाया और सत्य की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया। यही समस्त भाव ऋषभ शब्द में निहित है। ऋषभ का अर्थ है अनुसंधान और प्रगति एवं उसके प्रकाश देने वाला आर्ष व्यक्तित्व ऋषभ।

ऋषभ देव ने समस्त भरत क्षेत्र में समवशरण सहित विहार किया और श्रमण धर्म का प्रचार प्रसार किया। भगवान को जिस स्थान पर केवलज्ञान हुआ और प्रथम दिव्य ध्वनि खिरी उस पुरिमताल को लोग प्रयाग कहने लगे और उसे तीर्थ भूमि मान लिया जिस वट वृक्ष के नीचे बैठकर भगवान ने तपस्या की, केवलज्ञान हुआ और धर्मचक्र प्रवर्तन किया, जनता ने उसे वट वृक्ष को प्रणाम किया और उसे अक्षय वट कहने लगे।

ऋषभदेव को लोक व्यापी प्रभाव :-

केवलज्ञान प्राप्ति के पश्चात् भगवान ने सम्पूर्ण देश में विहार किया। गृहस्थ अवस्था में उन्होने लोक को बदला, लोक व्यवस्था को बदला था। अब वे लोक मानव को बदलने के लिये उपदेश देने लगे। कौन सा देश था, जहां वे नहीं गये, कौन सा क्षेत्र था, जहां उनकी दिव्य गिरा में लोगों ने अवगाहन नहीं किया। धर्म की उस पावन मंदाकिनी में आलोड़न करके जन-जन के मन में शुद्धि प्रस्फुटित हो उठी। हिमालय के उतुंग शिखर उनके नाद से गूंज उठे। मैदानों में उनके उपदेशों की शीतल वयार बहने लगी। वे आर्य देशों में गये, अनार्य देशों में गये। उनके समवशरण में गरीब आते थे, अमीर आते थे। विभिन्नता में एकता और विरोधों में समन्वय का एक अलौकिक मंच था। अशान्त मन वहां जाकर शान्ति पाता था, क्रूरता की आग पर सौहार्द का शीतल जल बरस कर उसे शान्त कर देता था। उनके चारों और का वातावरण आनन्द और शान्ति से व्याप्त रहता था। वे मुख से नहीं बोलते थे, उनके रोमरोम से शांति और प्रेम बोलता था। उनका व्यक्तित्व अलौकिक था उपदेश अलौकिक था, उनका प्रभाव अलौकिक था।

भगवान विहार और उपदेश करते हुए एक दिन कैलाश पर्वत पर जा पहुंचे। वे कैलाश के उत्तुंग शिखर पर खड़े होकर ध्यानलीन हो गये। उनके मुख की दीप्ति निरंतर बढ़ती जा रही थी। यह दीप्ति बढ़ते-बढ़ते सूर्यप्रभा सी हो गई, करोडों सूर्य मानों एक स्थान पर आ गये। फिर वह आलोक आकाश पाताल को लोक-अलोक को प्रकाशित करता हुआ अदृश्य हो गया। भगवान

का निर्वाण हो गया।

भगवान का पवित्र रुप नहीं रहा, किन्तु उनकी स्मृति संजोये थे तीर्थ और पर्व लाखों करोड़ों वर्ष के अन्तराल को पारकर आज तक जन-जन के मन में भगवान को जीवित रखे हैं। भगवान का भौतिक शरीर तो नहीं रहा, किन्तु यश शरीर जब तक रहेगा, जब तक ये चांद सितारे आकाश में चमकते रहेंगे।

भगवान चन्द्रप्रभु :-

इसके बाद बुन्देलखण्ड में भगवान चन्द्रप्रभु के समवशरण के विहार का आख्यान मिलता है। भगवान चन्द्रप्रभु का विहार सोनागिर सिद्ध क्षेत्र पर आठ वार मतान्तर से पंद्रह वार हुआ। भगवान के समवशरण की रचना श्रमणगिरि पर हुई जिसमें गंधकुटी के अन्तर्गत अशोक वृक्ष की छाया, तीन छत्र और चमरों युक्त सिंहासन पर स्वर्ण कमलों से अछूते अंतरीक्ष तीर्थंकर प्रभु विराजमान हुए अपूर्व छटा बिखेर रहे है। सर्वत्र प्रेम, दया, सुख और शांति का साम्राज्य छाया हुआ है। सिंह और शावक परस्पर क्रीड़ा कर रहे हैं। धनंजय आदि राजा लोग अपूर्व दृश्य देखकर आश्चर्य चकित हो गये।

प्रभु का उपदेशामृत पाकर सभी निहाल हो गये। संसार दुख से छूटने के लिये धनंजय और अमृत विजय ने मुनिव्रत ले लिये। नंग और अनंगकुमारों ने जब उन राजाओं को मुनि होते देखा तो उन्होने भी मुनि दीक्षा ली।

समवशरण की दीप्तिवान प्रतिमा से सारा पर्वत स्वर्ण के समान प्रतीत होने लगा और श्रमणगिरि, स्वर्णगिरि हो गया। सभी लोग प्रभु के शरण में आये। जीव मात्र उनको पाकर सुखी हो गया, दुख का नाम न रहा। भगवान के उपदेशामृत के प्रभाव से साढ़े पांच करोड़ मुनिराजों ने स्वर्णगिरि से मोक्ष पद प्राप्त किया।

भगवान के उपदेशामृत का प्रभाव इतना प्रभावी एवं स्थिर रहा कि सोनागिर के प्रभाव से सम्राट अशोक भी विचलित हुआ उसने सोनागिर से जैन केन्द्र के प्रभाव को कम करने के लिये पहला कदम यह उठाया के उत्तर-दक्षिण के राजमार्ग को बदल दिया। पहले यह सोनागिर से होता हुआ जाता था उसको हटाकर कुछ फासले पर कर दिया। दूसरा कार्य यह किया कि सोनागिर के पास ही एक अन्य पहाड़ी पर बौद्ध विहार स्थापित कर दिया जिससे लोग बौद्ध धर्म की ओर आकर्षित हों। परन्तु सम्राट अशोक इसमें असफल रहा। इस क्षेत्र में बौद्ध प्रभाव नकारात्मक सिद्ध हुआ। सोनागिर आज भी जैन धर्म का केन्द्र पूर्णता के साथ है।

भगवान पार्श्वनाथ :-

भगवान पार्श्वनाथ का व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावक था। उनकी वाणी में करुणा, शुचिता और शान्ति का संगम था। उनके सिद्धान्त सर्व या व्यवहारिक थे। इसी कारण उनके व्यक्तित्व

और उपदेशों का प्रभाव जन-जन के मानस पर अत्यधिक पड़ा।

उस समय वैदिक सम्प्रदाय में पुत्रैषणा के लिये हिंसामूलक यज्ञ किये जाते थे और शरीर को केवल कष्ट देने को तप माना जाता था किन्तु पार्श्वनाथ के धर्म ने वैदिक धर्मानुयायियों के मानस को झकझोर डाला। यही कारण था कि महीपाल तपस्वी के सात सौ शिष्यों ने पार्श्वनाथ के चरणों में आकर श्रमण दीक्षा ले ली।

किन्तु इससे भी अधिक प्रभाव पड़ा मूल वैदिक मान्यताओं और विचारधारा पर जो अकल्पनीय है। पार्श्वनाथ के निर्ग्रन्थ वनों में रहते थे। उनके ध्यान के स्थानों को निषद्, निषदी आदि नामों से पुकारा जाता था। वैदिक आर्य उनके सिद्धान्तों और आचरण से आकर्षित होकर उनका उपदेश सुनने वहां जाते थे। उन निषदों के समीप बैठकर उन्होंने जो उपदेश ग्रहण किया और प्रकृति के तत्वों की पूजा के स्थान पर अध्यात्म को ग्रन्थों में गुम्फित किया उन ग्रन्थों का नाम ही उपनिषद रख दिया। उपनिषदों में जिस अध्यात्म की विस्तृत चर्चा की है उसका मूल स्त्रोत वेद न होकर पार्श्वनाथ के श्रमणों का उपदेश है।

पार्श्वनाथ ने भारत के अनेक भागों में विहार करके अहिंसा का जो समर्थ प्रचार किया, उससे अनेक आर्य और अनार्य जातियां जैन धर्म में दीक्षित हो गईं। नाग, द्रविड़ आदि जातियों को वेद विरोधी व्रात्य के रुप में उल्लेख मिलता है।

वस्तुतः व्रात्य श्रमण संस्कृति की जैन धारा के अनुयायी थे। इन व्रात्यों में नाग जाति सर्वाधिक शक्तिशाली थी। तक्षशिला उद्यानपुरी, अहिछत्र, मथुरा, पद्मावती, कान्तिपुरी, नागपुर आदि इस जाति के प्रसिद्ध केन्द्र थे। एक बार वे नागपुर (हस्तिनापुर) पधारें। न जानें कितने व्यक्ति जातियां और प्रदेश पार्श्वनाथ का उपदेश सुनकर उनके धर्म में दीक्षित हो गये।

भगवान पार्श्वनाथ का सर्वसाधारण पर कितना प्रभाव था, वह आज भी बंगाल, बिहार, उड़ीसा के लाखों सराग बंगाल के मेदनीपुर जिले के सदगोपो, उड़ीसा के रंगिया जाति के लोगों के जीवन व्यवहार को देखने से मिलता है। यद्यपि भगवान पार्श्वनाथ को लगभग तीन हजार वर्ष व्यतीत होने को आ गये और ये जातियां किन्हीं वाध्यतायों के कारण जैन धर्म का परित्याग कर चुकी हैं किन्तु आज भी ये जातियां पार्श्वनाथ को अपना कुल देवता मानती हैं। इन जातियों के अतिरिक्त सम्मेद शिखर के निकट रहने वाले भील जाति पार्श्वनाथ के अनन्य भक्त हैं। इस जाति के लोग मकरसंक्रांति के दिन शिखर की सभी टोंकों की वन्दना करते हैं। और उत्साहपूर्वक नृत्य करते हैं। सम्मेद शिखर का नाम भी पार्श्वनाथ हिल पुकारा जाता है।

सर्व साधारण के समान राज्य वर्ग पर भी भगवान पाश्वनाथ का व्यापक प्रभाव था। उस समय जितने व्रात्य क्षत्रिय राजा थे वे पार्श्वनाथ के उपासक थे। उनके नरेश पार्श्वनाथ के काल में और उनके पश्चात्य काल में पार्श्वनाथ को अपना इष्ट मानते रहे थे।

भगवान ने जिन देशों में विहार किया था। वहां सर्वसाधारण पर उनका व्यापक प्रभाव

पड़ा। उनके लोक व्यापी प्रभाव का ही परिणाम है कि तीर्थंकर की मूर्तियों में सर्वाधिक मूर्तियां पार्श्वनाथ की उपलब्ध होती हैं और उनके कारण पद्मावती देवी की भी उतनी ख्याति हुई कि आज भी शासन देवियों में सबसे अधिक मूर्तियां पद्मावती की ही मिलती हैं।

भगवान महावीर :-

भगवान महावीर के धर्म विहार और प्रभाव का इतिहास मिलता है। राजा श्रेणिक प्रतिदिन भगवान की सेवा करता था। उसने राजगृह नगर को जिन मंदिरों से व्याप्त कर दिया। राजा के भक्त सामन्त, महामंत्री, पुरोहित तथा प्रजा के अन्य लोगों ने समस्त मगध देश को जिन मंदिरों से युक्त कर दिया। वहां नगर, ग्राम, पर्वतों के अग्र भाग, नदियों के तट और वनों के अंत: प्रदेशों में सर्वत्र जिन मंदिर ही दिखाई देते थे। मगध के पश्चात् मध्यदेश की ओर गमन किया। मध्य देश में धर्म तीर्थ की प्रवृत्ति होने पर समस्त देशों में धर्म विषयक अज्ञान को दूर किया। जिस प्रकार भगवान ऋषभदेव ने अनेक देशों में विहार करके उन्हें धर्म युक्त किया था उसी प्रकार भगवान महावीर ने वैभव के साथ विहार कर अनेक देशों को धर्म युक्त किया।

भगवान महावीर ने अनेक देशों में विहार किया था। उन्होने जहां-तहां विहार किया था वहां जैन धर्म के मानने वालों की संख्या बहुत हो गई। भगवान के धर्मोपदेश का परिणाम बहुमुखी था। धार्मिक क्षेत्र में हिंसामूलक क्रिया काण्डों के प्रति जन मानस में क्षोभ हो गया। महावीर के समर्थ वाणी सत्वेषु मैत्री की उद्घोषणा करती हुई सारे देश और विदेशों में गूंज उठी

महावीर के उपदेशों का लोक जीवन पर जो प्रभाव पड़ा उसने तत्कालीन समाज में प्रचलित विभिन्न सम्प्रदाय और धर्म, देश और जातियां अछूते नहीं रहे। इतिहासकार भी ये स्वीकार करते हैं कि वैदिक ब्राह्मणों को महावीर के अहिंसा और जीवन सिद्धांतों से प्रभावित होकर यज्ञ योगादिक रुप बदलना पड़ा। तब जो वैदिक साहित्य निर्मित हुआ उसमें ज्ञान यज्ञ को प्रमुखता दी गई। कर्मयोग को महत्व दिया गया। आचार विचार दोनों ही क्षेत्रों में अहिंसा को प्रधानता मिली।

भगवान महावीर लोक में इतने प्रसिद्ध हुये कि जनसाधारण में यह बात प्रचलित हो गई कि जैन धर्म के संस्थापक भगवान महावीर थे और इस भ्रम को आज भी जैनानुयायी हटाने में सफल नहीं हुये हैं। विद्वत जन इस पर ध्यान देंगे इसी आशा के साथ।

(शेष पृ० 79 का)

हो गया।

17. 14 अगस्त 99 को पं. कमलकुमार शास्त्री 'कुमुद' खुरई का देहावसान हो गया।
18. 21 अक्टूबर 99 को सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन दिल्ली का निधन हो गया।
19. पुरातत्वविद डा. सतीशचन्द्र काला का इलाहाबाद में निधन हो गया संस्कृत के वयोवृद्ध प्रकाण्ड विद्वान आचार्य बलदेव उपाध्याय वाराणसी का निधन हो गया।
20. 28 मई ब्र. सम्यक्त्व भारती का इन्दौर में निधन हो गया।

षट्खंडागम का प्रकाशन और डॉ. हीरालाल जैन

लाल चन्द्र जैन, राकेश

1. श्री शिताबराय लक्ष्मीचन्द्र जैन साहित्योद्धारक फंड का जन्म और डा. हीरालाल जैन :-

अखिल भारतवर्षीय दिग. जैन परिषद का वार्षिक अधिवेशन सन् 1933 के दिसम्बर माह में इटारसी नगर में आयोजित हुआ। श्री जमना प्रसाद जी सब-जज उसके सभापति थे। प्रथम दिन के जलसे के पश्चात कुछ लोग, जिसमें डा. हीरालाल जी प्रमुख थे, एक कमरे में बैठे हुए जैन साहित्य के उद्धार के विषय में चर्चा कर रहे थे। जज साहब भी उसी कमरे में दिनभर की दौड़-धूप से थक कर सुस्त से लेटे हुए चर्चा सुन रहे थे। इसी बीच किसी ने आकर खबर दी कि भेलसा निवासी सेठ श्री लक्ष्मीचन्द्र जी भी अधिवेशन में आये हुए हैं और वे किसी धार्मिक कार्य में, संभवतः रथ चलाने में, कुछ द्रव्य लगाना चाहते हैं यह खबर सुनते ही जज साहब का चेहरा एक दम चमक उठा और उनमें न जाने कहां की स्फूर्ति आ गई। वे किसी से बिना कुछ कहे सुने वहां से चल दिये। उन्होंने जाकर सेठ लक्ष्मीचन्द्र जी को जैन साहित्य के उद्धार के लिये प्रेरणा दी उन्होने अपनी वाक्चातुरी से सेठ जी को 'गजरथ' चलाने के लिये तैयार कर लिया तथा रात के करीब एक बजे लौटकर अपने परममित्र डा. श्री हीरालाल जी को जगाकर एक पुर्जा उनके हाथ में दिया जिसमें लिखा था कि सेठ लक्ष्मीचन्द्र जी विदिशा ने साहित्य उद्धार के लिए दस हजार रुपये की राशि के दान की प्रतिज्ञा की है। यह पढ़कर डा. हीरालाल जी के हर्ष का ठिकाना न रहा। इस दान के उपलक्ष्य में दूसरे दिन प्रातःकाल उपस्थित समाज ने सेठजी को "श्रीमंत सेठ" की पदवी से विभूषित किया। यही नहीं इससे उन्हें और उनके बाद उनकी संतति को एक नहीं सोलह गजरथ चलाने का यश भाग मिला।आगामी गर्मी की छुट्टियों में जज साहब श्री डा. हीरालाल जी को लेकर विदिशा पहुंचे और वहां सेठ राजमल जी बड़जात्या और श्रीमान तख्तमल जी एडवोकेट के सहयोग से सेठजी के अनुदान का ट्रस्ट रजिस्टर्ड करा लिया गया तथा यह भी

निश्चय हो गया कि इस द्रव्य से श्री धवलादि सिद्धान्त ग्रन्थों के संशोधन - प्रकाशन का कार्य किया जाय।

श्रीमान् सेठ लक्ष्मीचन्द्र जी को तो दस हजार रुपये किसी न किसी धार्मिक कार्य में खर्च करना ही थे और वह धनराशि संभवत: रथ चलाने में व्यय हो जाती क्योंकि उन दिनों तक धार्मिक प्रभावना का इससे भी अधिक प्रभावक और उपयोगी अन्य आयोजन हो सकता है। इसकी ओर किसी की दृष्टि नहीं गयी थी, किन्तु श्रीमान जमनाप्रसाद जी जज और आगमोद्धारक, सरस्वती पुत्र श्रीमान डा. हीरालाल जी की सूझबूझ और तत्परता से उस वृहत् धनराशि का सदुपयोग ''ज्ञानरथ'' के आयोजन में किये जाने के निश्चय से धर्म, समाज, संस्कृति एवं शिक्षा का वह महनीय कार्य हो गया, जिसकी परमावश्यकता थी। इस प्रकार सन् 1934 में श्री शिताबराय लक्ष्मीचन्द्र जैन साहित्योद्धारक फण्ड की स्थापना में श्री जमना प्रसाद जज एवं डा. हीरालाल जैन की सत्प्रेरणा सफलीभूत रही।

2. साहित्योद्धारक फण्ड द्वारा षट्खंडागम का प्रकाशन और डा. हीरालाल जैन

1. ज्ञानरथ के सारथी डा. हीरालाल जैन -

जब सन् 1934 में श्री शिताबराय लक्ष्मीचन्द्र जैन साहित्योद्धारक फण्ड की विधिवत् स्थापना हो चुकी और षट् खंडागम एवं उसकी धवलादि टीका के संशोधन, अनुवादन और सम्पादन की बात चली तो इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए एकमत से किंग एडवर्ड कालेज अमरावती में संस्कृत के प्रोफेसर डा. हीरालाल जैन को ही यह उत्तरदायित्व सौपा गया क्योंकि डा. हीरालाल जी ही संस्कृत में निष्णात, जैन साहित्य पर शोध करने एवं जैन साहित्य के इतिहास की रुपरेखा पर गंभीर मनन-चिन्तन वाले तथा भिन्न-भिन्न प्राकृत भाषाओं के अधिकारी विद्वान थे। अत: वे ही इस कार्य सम्पादन में सक्षम थे।

दूसरे, इन ग्रन्थों को प्रकाश में लाने की डाक्टर साहब की पूर्व से ही हार्दिक इच्छा थी जैसा कि उनके निम्नांकित शब्दों से स्पष्ट होता है।

मूडबिद्री के धवलादि सिद्धान्त ग्रन्थों की कीर्ति मैं बचपन से ही सुनता आ रहा हूं। सन् 1922 में मैंने जैन साहित्य का विशेष रुप से अध्ययन प्रारंभ किया और उसी समय के लगभग इन सिद्धान्त ग्रन्थों की हस्तलिखित प्रतियों के कुछ-कुछ प्रचार की चर्चा सुनाई पड़ने लगी, किन्तु उनके दर्शनों का सौभाग्य मुझे पहले पहले तभी प्राप्त हुआ जब हमारे नगर के अत्यन्त धर्मानुरागी, साहित्यप्रेमी श्रीमान सिंघई पन्नालाल जी ने धवल और जय धवल की प्रतिलिपियां कराकर यहां के जैन मंदिर में विराजमान कर दी। अब हृदय में चुपचाप आशा होने लगी कि कभी न कभी इन ग्रन्थों के प्रकाश में लाने का अवश्य सुअवसर मिलेगा। अत: ''यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी'' के अनुसार जब आपको इन सिद्धान्त ग्रन्थों के उद्धार का सुयोग

प्राप्त हुआ तो आपने श्रीमंत साहब के दान पत्र की सद्भावना को क्रियात्मक रुप प्रदान करने के लिये इस ज्ञानरथ का सारथी बनना हृदय से स्वीकार कर लिया और सेठ साहब से कहा कि सेठ जी आपका एक गजरथ तो एक बार ही चलकर रह जाता और कुछ समय के बाद लोग उसे भूलने भी लग जाते, किन्तु अब तो दीर्घकाल तक आपके सोलह गजरथ ऐसे चलते रहेंगे कि जिन्हें कोई भी न भूल सकेगा। तब सेठ जी ने गद्-गद् होकर डाक्टर सा. से कहा था कि षट्खंडागम रुपी ये गजरथ तो इसीलिये निरंतर चलते रहेंगे, क्योंकि उन्हें आप जैसा कर्तव्यनिष्ठ अनुभवी विद्वान एवं कुशल सारथी जो मिल गया है और इसमें सन्देह नहीं कि दोनों के हृदय से निकले हुए ये शब्द सत्य सिद्ध हुये।

2. ज्ञानरथ गतिमान हुआ -

आज से 60-70 वर्ष पूर्व तक यह षट्खंडागम ग्रन्थ एक कौतूहल एवं दर्शनमात्र की वस्तु थी, क्योंकि इस ग्रन्थ की एक ही ताड़पत्री प्रति थी जो मूडबिद्री में तालों में शताब्दियों से बंद थी, तथा विशेष विनय किये जाने पर ही भक्तों को दर्शनार्थ रखी जाती थी। लोग उसे पढ़ना नहीं जानते थे तथा इनका पूजन, दर्शन करके ही अपने जन्म को सफल मानते थे। किन्तु आज न केवल उसके दर्शन सुलभ हैं अपितु पठन-पाठन अध्ययन-चर्चा के साथ ही साथ संगोष्ठियों तथा वाचनायों एवं शंका समाधानादि के माध्यम से उसकी विषय वस्तु को समझने का भी पुण्यावसर हमें प्राप्त है। यह सब श्रीमंत सेठ शिताबराय लक्ष्मीचन्द्र जैन साहित्योद्धारक फण्ड विदिशा तथा प्राच्य विद्याविशारद, प्रख्यात चिन्तक, जैन सिद्धान्त के प्रकाण्ड विद्वान डा. श्री हीरालाल जी के भागीरथ प्रयत्न, सतत श्रम एवं मूर्धन्य मनीषा का सुफल है। षट्खंडागम, साहित्योद्धारक फंड एवं डाक्टर हीरालाल जैन ये तीनों मिलकर एक ऐसे त्रिभुज का निर्माण करते हैं जिसकी तीनों भुजाएं समान महत्व रखती हैं। किसी भी एक भुजा के अभाव में त्रिभुज का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है।

साहित्योद्धारक फंड विदिशा एवं डा. श्री हीरालाल जैन के संयुक्त प्रयास में यह कार्य 1935 में प्रारंभ किया गया। सम्पूर्ण ग्रन्थ सोलह भागों में प्रकाशित हुआ, प्रथम भाग 1936 में एवं अंतिम सोलहवां भाग 1956 में। पूरे प्रकाशन के 20 वर्ष में सम्पादन और प्रकाशन के सूत्रधार प्राच्य विद्याजगत के मूर्धन्य मनीषी डा. हीरालाल जैन रहे। षट्खंडागम के धवल टीका सहित सोलह खंडो का प्रकाशन डा. हीरालाल की महान साधना, पांडित्य, स्वार्थत्याग, सेवा, साहित्य तथा धर्म के प्रति समर्पण एवं सतत श्रम का खास द्योतक है।

डा. श्री हीरालाल जी ने सन् 1935 में यह कार्य प्रारम्भ किया तो पहली चिन्ता धवल, जयधवल की प्रतिलिपि प्राप्त करने की हुई। उस समय इन ग्रन्थों को प्रकाशित करने के नाम से ही धार्मिक लोग चौकन्ने हो जाते थे और उस कार्य के लिये कोई प्रतिलिपि देने के लिए तैयार

नहीं थे। ऐसे समय में श्रीमान सिंघई पन्नालाल जी ने व अमरावती पंचायत ने सत्साहस करके अपने यहां की प्रतियां का सदुपयोग करने की अनुमति दे दी। (प्राक्कथन से) तदनन्तर डाक्टर सा. ने सम्पादन कार्य के विषय में विद्वानों की सम्मति से निर्णय कर कार्य प्रारम्भ किया, किन्तु जैन समाज में उस समय इसके विरुद्ध विद्रोहात्मकान्दोलन चल पड़ा क्योंकि परम्परा के अनुसार इस ग्रन्थ को पढ़ना गृहस्थों के लिए निषेध है। ऐसा पं. श्री मक्खनलाल जी मुरैना आदि का मत था किन्तु डाक्टर जैन अपने कार्य से विचलित नहीं हुये और सतत इस कार्य में 1956 तक जुटे रहे तथा इस महानग्रन्थ को 16 भागों में प्रकाशित किया। इसी बीच एक विवाद और छिड़ गया प्रथम खंड के 93 वें सूत्र के भाष्य को अनुकूल संगति देने के लिहाज से यह आवश्यक समझा गया कि प्राप्त शब्द सम्मामि... पज्जात्तियाओं के साथ एक शब्द अत्र 'संजद' इति पाठ शेषः प्रतिभाति जोड़ा जाना चाहिए, किन्तु आनुषांगिक उलझनों ने कतिपय पंडितों के मस्तिष्क को अव्यवस्थित कर दिया और उन्होने इस प्रकार के परिवर्द्धन को अनुचित करार दिया। परिणाम स्वरुप कई बार मौखिक चर्चायें हुईं। लिखित उत्तरों और प्रत्युत्तरों की लम्बी श्रृंखला चली। निश्चयात्मक सन्तोष प्राप्त करने के लिहजे से एम. एस. के ताड़पत्रों के पाठ को प्रत्याधिकता, सूक्ष्मता और विरल सावधानी से जांचा गया और यह निष्कर्ष निकला कि दो भिन्न पाण्डुलिपियों में सम्पादकों के द्वारा प्रस्तावित अत्र संजद इति पाठशेष प्रतिभाति, विद्यमान है। संवेदनशील आलोचकों को एक सीमा तक इससे सन्तोष हुआ - आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये का लेख, स्मारिका पृष्ठ 4 मेरा ज्ञान सखा मेरा मैत्री गुरु, हीरालाल इस प्रकार हम देखते हैं कि डा. हीरालाल जी के द्वारा 'धवला' का सम्पादन औ षट्खंडागम पर भाष्य उनके पाण्डित्य कर्म की अविस्मरणीय घटना है। कई रुपों में यह उनकी विद्वता की कसौटी और नैतिक शक्ति की परीक्षा भी जिसमें वे पूर्णतः सफल रहे।

3. प्रगति में बाधायें - (अ) प्रतिलिपि प्राप्ति में कठिनाई, (ब) प्रकाशन के प्रति विद्रोहात्मक आंदोलन, (स) संजद शब्द पर उहापोह, (द) पत्नी का वियोग, (इ) विषय की गंभीरता और ग्रंथ की विशालता एवं प्रतिलिपि में स्खलन स्थलों का आधिक्य।

उन्हें विषय की गंभीरता को समझने और प्रतियों में स्खलनों के संशोधनादि में जो अथक श्रम करना पड़ वह अकथनीय है। उन्हीं के शब्दों में -

वह भी विषय की दृष्टि और रचना से हिमाचल जैसा विशाल और महोदधि जैसा गंभीर है। उसके विवेचना की सूक्ष्मता और प्रतिपादन के विस्तार को देखने से हम जैसे अल्पज्ञानियों की बुद्धि चकरा जाती है और अच्छे अच्छे विद्वानों का भी गर्व खर्व होने लगता है। कार्य अत्यन्त कष्ट साध्य है, क्योंकि ग्रंथों का परिमाण बहुत विशाल, विषय अत्यन्त गहन और दुरुह, भाषा संस्कृत मिश्रित प्राकृत और प्राप्य प्रति अशुद्ध स्खलन प्रचुर ज्ञात हुई। हमें उनके एक एक शब्द के संशोधनार्थ न जाने कितनी मानसिक कसरतें करनी पड़ी हैं और कितने दिनों तक रात

के दो-दो बजे तक बैठकर अपने खून को सुखाना पड़ा है फिर भी हमने जो संशोधन किया उसका सोलाहों आने यह भी विश्वास नहीं है कि वे आचार्य रचित शब्द हैं।

- प्राक्कथन से

जब वे इस महनीय कार्य में तन मन से संलग्न थे तभी सन् 1938 में उनकी पत्नी का स्वर्गवास हो गया। उनकी पत्नी 1927 में हृदय रोग से ग्रसित हो गई थी। अनेक औषधि उपचार करने पर भी उनका यह रोग हटाया नहीं जा सका, किन्तु धीरे धीरे बढ़ता ही गया। बहुत बार मरण प्राय अवस्था में बड़े महंगे इलाजों के निमित से प्राण रक्षा की गई। किसी प्रकार ग्यारह वर्ष तक उसकी जीवन यात्रा चलाई। अंततः 1938 के दिसम्बर में उसका चिरवियोग हो गया तद्यपि वे इस महान कार्य में पूर्ण मनोयोग से लगे रहे। वे दुखद और अप्रिय घटनाओं में से भी कुछ अच्छाइयां खोज निकालते थे। पत्नी की मृत्यु पर उनका सोचना था कि वह लम्बी बीमारी से मुक्त हुई और मुझे आगमोद्धार के कार्य करने की अनुकूलता मिली। अग्निदाह के समय उन्होंने दृढ़ प्रतिज्ञा की कि मैं उनकी स्मृति में यावज्जीवन साहित्य सेवा करता रहूंगा और इसमें सन्देह नहीं कि वे इस प्रतिज्ञा का अंत तक अखंडव्रत के रुप में पालन करते रहे। सत्य है, मनस्वी कार्यार्थी न गणयति सुक्खं न च दुखं एवं इष्ट वियोग अनिष्ट योग में सहन शीलता दिखजायें को डाक्टर सा. ने अपने जीवन में पूर्णतः आत्मसात् कर लिया था। दूसरी ओर मूडबिद्री के भट्टारक जी को जब यह खबर मिली तो उन्होंने प्रतिक्रिया में सान्त्वना के बदले पत्र में लिखा कि रे हीरालाल तुझे अपने कर्म का फल मिल गया। यह पत्र पढ़कर भी डाक्टर साहब उत्तेजित नहीं हुए और उन्होंने संयत भाषा में ही जैन सिद्धान्तानुसार भट्टारक जी को उत्तर लिखा। भट्टारक जी जैन सिद्धान्त के अनुसार जो कार्य करता है, वही उसका फल पाता है। आप जैसे धर्मात्मा और विद्वान के मन में यह कैसे आया कि मेरे कर्म के फलस्वरुप मेरी पत्नी का देहान्त हो गया।

4. प्रकाशन पर प्रतिक्रिया -

सन् 1936 में जब इस ग्रन्थ का प्रथम भाग प्रकाशित हुआ तब अमरावती की जैन समाज के सहयोग से उसका पूजन किया गया और वही पूजित प्रति डाक्टर साहब द्वारा भट्टारक जी को पोस्ट से भेजी गयी। मूड़बिद्री मठ को भेंट की हुई प्रति के वहां पहुंचने पर उसे विमान में विराजमान करके जुलूस निकाला गया, श्रुतपूजन किया गया और सभा की गयी, जिसमें वहां के प्रमुख सज्जनों और विद्वानों द्वारा संशोधन, सम्पादन और प्रकाशन व्यवस्था की बहुत प्रशंसा की गयी और यह मत प्रकट किया गया कि आगे इस संपादन कार्य में वहां की मूल प्रति से मिलान की सुविधा दी जानी चाहिये, नहीं तो ज्ञानावरणी कर्म का बंध होगा। यह सभा मूडब्रिदी मठ के भट्टारक जी श्री चारुकीर्ति पंडिताचार्य वर्य के ही सभापतित्व में 4-11-39 को हुई। डाक्टर

साहब के पत्र को पढ़कर, पुस्तक का स्वागत और समाज का उत्साह देखकर भट्टारक जी का मोह भंग हो गया, क्रोध कषाय गल गया और गद् गद् होकर उन्होने डाक्टर साहब को पत्र लिखा। हीरालाल जी, जो कार्य आपने किया वह समाज और धर्म दोनों के हित में है। अब मैं उस कार्य से विलग नहीं रह सकता। आपको मुझ से जिस सहयोग की जरुरत पड़े लिखिये। मैं उसे अपना उत्तरदायित्व मानकर करुंगा। भट्टारक जी ने मूल ताड़पत्री प्रति से मिलान की व्यवस्थादि के लिए डाक्टर साहब को मूडबिद्री आमंत्रित किया। यह सुविधा मिल जाने से अनेक शंकायें और गुत्थियों के हल करने में लाभ हुआ। व्यर्थ के श्रम और समय की बर्बादी से बच गये।

इस प्रकार डाक्टर हीरालाल जी सन् 1936 से न केवल 1956 तक सम्पूर्ण सोलह भागों के प्रकाशन तक बीस वर्ष इस कार्य में जुटे रहे अपितु द्वितीय संस्करण के समय भी अपने जीवन की अंतिम श्वास 13-3-73 तक अनवरत समर्पित हो लगे रहे। 7-3-73 के आसपास मोतिया बिन्दु के कारण उनकी दूसरी आंख की शल्य चिकित्सा हुई थी, हृदय रोग से तो वे त्रस्त थे ही और साथ साथ ही मधुमेह भी उनको सता रहा था। अपने बिगड़े हुए स्वास्थ्य की परवाह किये बिना डाक्टरों की सलाह (कुछ सप्ताह पूर्ण विश्राम) के बावजूद उन्होंने लगातार अपने जी भर काम किया। किसी अच्छे उद्देश्य की पूर्ति में जीवन व्यतीत करें, तो वही सही जीवन है, उनकी तो यही धारणा थी।

5. श्री शिताबराय लक्ष्मीचन्द्र जैन साहित्योद्धारक फण्ड का कार्य जैन संस्कृति संरक्षक संघ सोलापुर को सौंपा जाना -

डा. श्री हीरालाल जैन सूझ बूझ के धनी एवं दूरदर्शी विद्वान थे। वे जानते थे कि यह समय साहित्य कला संस्कृति के लिए बड़े संकट का है। राजनैतिक विप्लव से हजारों वर्षों की सांस्कृतिक सम्पत्ति कदाचित मिनटों में भस्मसात हो सकती है। दैव रक्षा करें, किन्तु यदि ऐसा ही संकट यहां आ गया तो ये द्वादशांगवाणी के अवशिष्ट रुप फिर कहां रहेंगे। हब्बाधीन आदि देशों के उदाहरण हमारे सम्मुख हैं। प्राचीन प्रतिमायें खण्डित हो जाने पर नई कभी भी प्रतिष्ठित हो सकती हैं। पुराने मंदिर जीर्ण होकर गिर जाने पर नये मंदिर कभी भी निर्माण कराकर खड़े किये जा सकते हैं। धर्म के अनुयायियों की संख्या कम होने पर कदाचित प्रचार द्वारा बढ़ाई जा सकती है, किन्तु प्राचीन आचार्यों के जो शब्द ग्रन्थों में ग्रथित हैं, उनके एक बार नष्ट हो जाने पर उनका पुररुद्धार सर्वथा असंभव है। क्या लाखों, करोड़ो रुपया खर्च करके भी पूरे द्वादशांग श्रुत का उद्धार किया जा सकता है ? कभी नहीं,......... आजकल साहित्य रक्षा का इससे बढ़कर दूसरा कोई उपाय नहीं कि ग्रन्थों की हजारों प्रतियां छपाकर सर्वत्र फैला दी जांय ताकि किसी भी अवस्था में कहीं न कहीं उनका अस्तित्व बना ही रहेगा। अत: वे चाहते थे कि इन महान ग्रन्थों की प्रकाशन श्रृंखला अविच्छिन्न रखने के लिये किसी एक व्यक्ति पर अवलम्बित नहीं रहना

चाहिये। इसलिए जब इन सिद्धान्त ग्रन्थों के सम्पूर्ण सोलह भागों की प्रथमावृति निकल चुकी तब और आगे इस प्रकाशन योजना की कैसी व्यवस्था की, यह प्रश्न सेठ शिताबराय लक्ष्मीचन्द्र जैन साहित्योद्धारक फण्ड के ट्रस्ट बोर्ड के सम्मुख उपस्थित हुआ। अभी तक तो 1936 से 1956 तक पूरे 20 वर्ष तक सम्पादन-प्रकाशन के सूत्रधार एक मात्र डा. हीरालाल जैन थे। अब डाक्टर हीरालाल जी चाहते थे कि इन आगम ग्रन्थों को समुचित व्यवस्था से नई नई उपलब्धियों के अनुसार संशोधित करते रहने और उन्हें जिज्ञासुओं को सदैव उपलब्ध बनायें रखने की स्थायी उत्तरदायित्व की दृष्टि से किसी एक व्यक्ति पर आधारित न रखकर किसी ऐसी संस्था को सौंपा जाय जो सुदृढ़ नींव पर निर्मित हो और अपने उद्देश्यों को व्यवसायिक नहीं किन्तु धार्मिक सेवा भाव से प्रेरित और संचालित हो। अतः उन्होंने अपने चिरसहयोगी डा. आदिनाथ नेमीनाथ उपाध्ये के साथ इस समस्या पर सभी दृष्टियों से पूर्ण विचार कर यह निश्चय किया कि ब्र. जीव राज गौतमचन्द दोशी द्वारा स्थापित "जैन संस्कृति संरक्षक संघ सोलापुर" को सौंपा जाय।

उक्त निर्णयानुसार श्री डा. हीरालाल जी ने दोनों ट्रस्ट बोर्डों के अधिकारियों को अवगत कराया और हर्ष का विषय है कि दोनों ने ही उनके सत्परामर्श को स्वीकार कर लिया तथा कुछ अनुबन्धों के साथ सिद्धान्त ग्रन्थों की भावी व्यवस्था जैन संस्कृति संरक्षक संघ सोलापुर को सौंप दी गई। और जब इस ग्रन्थ राज की द्वितीय वृति, जैन संस्कृति संरक्षण संघ सोलापुर से प्रकाशित हुई तो प्रकाशकीय निवेदन इस प्रकार था। इस ग्रंथ का पूर्व प्रकाशन श्रीमंत सेठ लक्ष्मीचंद जैन साहित्योद्धारक सिद्धान्त ग्रन्थमाला विदिशा द्वारा हुआ है। उसे मूल ताड़पत्र ग्रन्थ से मिलानकर उसकी संशोधित पाठ सहित द्वितीयावृति प्रकाशनाधिकार प्राप्त जीवराज जैन ग्रन्थ माला द्वारा प्रकाशित करने में हम अपना सौभाग्य समझते हैं। इस प्रकाशन व्यवस्था से श्री डा. हीरालाल जी को भी संतोष हुआ। उन्हीं के शब्दों में...... उसके अन्तर्गत जो एक जीवराज जैन ग्रन्थ माला के संचालन का निश्चय किया था उसका मेरे प्रिय मित्र डा. आदिनाथ नेमीनाथ उपाध्ये और मेरे सम्पादकत्व में कार्य प्रारम्भ हो गया है ...... इस प्रकार यह सिद्धान्त उद्धार का अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य अब अनेक कन्धों द्वारा संभाला जा रहा है।

6. उपसंहार -

इस प्रकार डा. हीरालाल जी ने न केवल सम्पूर्ण ग्रंथराज के प्रथम संस्करण के सम्पादन का आदि से अन्त तक निस्वार्थ भाव से अपना सत्कर्तव्य निभाया अपितु उन्होंने उतनी ही तत्परता से द्वितीय संस्करण का भी उत्तरदायित्व झेलकर अपनी असाधारण दीर्घकालीन जिनवाणी की परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखा।

इस प्रकार धवल, जय धवल, और महाधवल नाम से प्रसिद्ध सिद्धान्त ग्रंथ जो शतियों

से दर्शन-पूजन की वस्तु बने हुए थे वे श्री शिताबराय लक्ष्मीचन्द्र जैन साहित्योद्धारक फण्ड विदिशा और डाक्टर हीरालाल जी के संयुक्त प्रयास से समस्त जिज्ञासुओं के स्वाध्याय हेतु सुलभ हो गए इसे हम जैन साहित्य के इतिहास में एक विशेष उत्क्रान्ति की संज्ञा दे सकते है। ऐसे, जिनवाणी के जिज्ञासुओं के लिये जमीन तैयार करने वाले, जैन साहित्य समुद्र के पारगामी, ज्ञान की विलुप्त, अनुपलब्ध एवं अप्रकाशित निधि के लिए सर्वतोभावेन समर्पित, विलुप्त प्राय जैनागम के अन्वेषक, शोधक, सम्पादक और अनुवादक, साहित्यसाधना में सतत संलग्न, ख्यातिप्राप्त, शिक्षाशास्त्री, बहुज्ञ, बहुभाषाविद, शतियोंसे अन्धेरी अलमारियों, जीर्ण-शीर्ण बेस्टनों और जंगलगे तालों में बन्द जिनवाणी को कारागृह से मुक्त कर जिनवाणी में जन-जन तक पहुंचाने वाले, विलक्षण प्रतिभा पुंज सिद्धान्त-शोध-चक्रवर्ती डाक्टर श्री हीरालाल जैन को उनकी जन्मशती पर हम हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पण पूर्वक उन्हें शतशः प्रणाम करते हैं।

हमें बहुमान हैं आदर्शता पर

सुश्री इन्द्रसेना जी जयपुर का नाम अनेकान्त ज्ञान मंदिर के आधार स्तम्भ के रुप में इसलिये लिया ज़ा सकता है कि जो मध्यम परिवार में रहते हुये न्याय नीति से बैंक में सर्विस करके अपने सादगीमय-जीवन को जीते हुये, अपनी संस्कृति के संरक्षण में जो योगदान उनका मिला है, वह अविस्मरणीय है। आपने अनेकान्त ज्ञान मंदिर के कार्य को बिना देखे ही सिर्फ पत्र पत्रिकाओं में समाचारों के आधार पर परखा और बिना किसी नाम लिप्सा के १२००००/- रुपयें चार किश्तों में प्रदान कर संस्था के उत्थान में महान योगदान दिया है। अनेकान्त ज्ञान मंदिर परिवार ऐसी निस्पृह दानदात्री सुश्री इन्द्रसेना जी का हार्दिक अभिनन्दन करता है।

व्रती सिद्धान्त शाला का निर्माण

ब्र. माणिकलाल गांधी अकलूज (महा.) निवासी, जिन्होने २४ फरवरी ९९ को आ. देवनंदी जी महाराज से क्षु. दीक्षा अंगीकार कर स्वयं को कल्याण पथ पर लगाया। आपके ही परिवार ने आपकी उदार भावनाओं के अनुसार अनेकान्त ज्ञान मंदिर में व्रती भोजनशाला के निर्माण हेतु ५१०००/- रुपये की राशि प्रदान कर २० फरवरी ९९ को भोजनशाला का शुभारम्भ किया। आपके सुपुत्र श्री बाबूभाई गांधी महासभा के श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं में से एक हैं। गांधी परिवार अकलूज सेवा भावी, मुनि भक्त परिवार है। अकलूज में श्री महावीर जिनालय का निर्माण आपके द्वारा ही किया जा रहा।

डॉ. हीरालाल जैन की श्रुत सेवा

(जैन गणित के विशेष सन्दर्भ में)

डा. अनुपम जैन

डॉ. हीरालाल जैन जन्म शताब्दी वर्ष (5 अक्टूबर 99 से 5 अक्टूबर 2000) में डा. अनुपम जैन का यह आलेख डा. हीरालाल जैन की श्रुत सेवा से सम्बन्धित जैन गणित के विकास, उद्धार एवं अध्ययन के क्षेत्र में डॉ. हीरालाल जैन के विशिष्ट अवदान को उद्घाटित करता है। आज विश्व क्षितिज पर जैनाचार्यों के उत्कृष्ट अवदान की चर्चा के मूल में डॉ. हीरालाल जैन की व्यापक दूरदृष्टि और सतत सार्थक प्रेरणा रही है। उनकी भावनाओं को विकसित करने में डा. ए.एन. सिंह डा. नेमीचन्द्र शास्त्री, प्रो. लक्ष्मीचन्द्र जैन और प्रो. राधाचरण गुप्त उनके विशेष सहयोगी रहे हैं।

जैन साहित्य जगत के देदीप्रयमान नक्षत्र डा. हीरालाल जैन का जन्म म.प्र. के गाड़रवारा जिले के गोगई गांव में 18 सितम्बर 1899 को हुआ था। आप श्री बालचन्द एवं भुतरोबाई दम्पत्ति की 7 सन्तानों में से तीसरे क्रम पर थे।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम गागई की पाठशाला एवं उपरान्त गाड़रवारा के मिडिल स्कूल तथा जिला नरसिंहपुर के मिशनरी हाई स्कूल में हुई। 15 वर्ष की आयु में आपका विवाह गोटेगांव के श्री जवाहरलाल जी जैन की पुत्री श्रीमती सोनाबाई से हो गया। आपने 1920 में B.A. परीक्षा एवं 1922 में M.A. (संस्कृत) एवं L.L.B. परीक्षा एक साथ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। उ.प्र. सरकार द्वारा प्राप्त अनुसंधान मूलक छात्रवृति के साथ आपने 1922-1925 के मध्य जैन साहित्य एवं इतिहास का विशेष अध्ययन किया। आपने इन्दौर के न्यायाधिपति श्री जे.एल.जैनी की गोम्मटसार के अंग्रजी अनुवाद में सहायता की, किन्तु सेठ हुकमचन्द जी के उनके पुत्र राजकुमार जी के शिक्षक रुप में 500/- प्रतिमाह के यावज्जीवन वृत्ति के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। तदुपरान्त आप किंग एडवर्ड कालेज अमरावती (विदर्भ-महाराष्ट्र) में संस्कृत के सहायक प्राध्यापक बन कर 1925 से संस्कृत प्राकृत की सेवा करने लगे। आपकी 5 पुत्रियां एवं 1 पुत्र के रुप में कुल 6 संतानें थी। जिनमें प्रो. प्रफुल्ल कुमार मोदी पूर्व कुलपति-सागर वि.वि. का नाम सम्मिलित है।

डा. जैन 1954 में इस पद से सेवानिवृत्त हुए। 1955 में डा. जैन ने बिहार सरकार के आमंत्रण पर जैनधर्म तथा प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा के अध्ययन हेतु वैशाली (बसाढ़) में एक शोध केन्द्र की स्थापना की जिसके आप 7-8 वर्ष निदेशक रहे। यह संस्थान कालान्तर में अनेक-अनेक ख्यातनाम विद्वानों का शोध केन्द्र रहा।

1961 में जबलपुर वि.वि. के आमंत्रण पर आपने वैशाली के संस्थान से नाता तोड़कर

गृह क्षेत्र में उपस्थित जबलपुर वि.वि. में शोध प्राध्यापक के रुप में शोध मार्गदर्शन तथा एम.ए. संस्कृत की कक्षाओं में अध्यापन प्रारम्भ किया। इस वि.वि. से वे 1969 तक सम्बद्ध रहे। अनेक शारीरिक रुग्णताओं के बावजूद ये यावत् जीवन प्राकृत अपभ्रंश की सेवा करते रहे। अंत में 13 मार्च 1973 को इस ज्योति पुंज का अवसान हुआ।

उनके कृतित्व का अब तक सम्यक मूल्यांकन न हो सका किन्तु जो कुछ भी प्रकाशित है, उसकी सूची भी बहुत लम्बी है।[1]

16 खण्डों में प्रकाशित षट्खण्डागम एवं उसकी धवला टीका जैनदर्शन का आधारभूत ग्रंथ है। विश्व अकादमिक समुदाय को आपने इस षट्खंडागम सहित 27 ग्रंथों एवं लगभग 14000 पृष्ठों की जो सामग्री उपलब्ध कराई है, उसमें से मैं केवल एक विषय का स्पर्श कर रहा हूं। गणित का विद्यार्थी होने के नाते यह मेरे लिये अधिक सरल, सहज और समीचीन भी है कि मैं जैन गणित के विकास, उद्धार एवं अध्ययन के क्षेत्र में डा. हीरालाल जैन के अवदान की ओर विद्वत् मंडली का ध्यान आकर्षित करुँ।

यह सत्य है कि बहुत समय तक लोग जैन धर्म को हिन्दू समाज की ही शाखा मानते थे। इस कारण जैन गणित को अलग से मान्यता नहीं मिली किन्तु यह भी सत्य है कि विशुद्ध रुप से जैन गणित की कोई कृति सर्वप्रथम 1908 में David Eugen Smith[2] द्वारा गणितसार संग्रह की पाण्डुलिपि प्राप्त होने की सूचना से पहले प्रकाश में नहीं आई थी। 1912 में मद्रास गवर्नमेंट द्वारा एम. रंगाचार्य द्वारा किये गये अंग्रेजी अनुवाद तथा उन्हीं के द्वारा संपादित गणित सार संग्रह का प्रकाशन किया गया।[3] लेकिन उसके बाद जैनाचार्यों द्वारा गणित के विकास में दिये गये योगदान को प्रकाश में आने का काम अवरुद्ध हो गया। कलकत्ता वि.वि. के प्राध्यापक प्रो. विभूतिभूषणदत्त, जो बाद में हिन्दू परम्परा के दीक्षित होकर मुख्यत: इसी अजमेर के समीप पुष्कर तीर्थ में स्वामी विद्यारण्य[4] बनकर (1933-1958) रहे थे, ने हिन्दू गणित शास्त्र के इतिहास के लेखनक्रम में लिखे गये आलेख The Jaina School of Mathematics[5] में उत्तराध्ययनसूत्र, अनुयोगद्वारसूत्र, स्थानांगसूत्र, त्रिलोकसार आदि ग्रंथों को आधार बनाया था। डा. हीरालाल जैन ने सर्वप्रथम लखनऊ वि.वि. के प्राध्यापक एवं गणित विभागाध्यक्ष प्रो. अवधेशनारायण सिंह को धवला पुस्तक-3 (द्रव्यप्रमाणानुगम) में निहित गणित का विशेष अध्ययन करने की प्रेरणा दी और उसी के प्रतिफल के रुप में Mathematics of Dhavala लेख प्रकाश में आया।[6] यह लेख धवला पुस्तक - 4 तथा इसका हिन्दी अनुवाद धवला पुस्तक - 5 में प्रकाशित हुआ है। डा. हीरालाल जी के ही प्रयासों का प्रतिफल था कि डा. ए.एन.सिंह जैसे चोटी के गणितज्ञ द्वारा लिखित भारतीय गणित इतिहास के जैन स्त्रोत[7] शीर्षक आलेख प्रकाश में आया। 1945 में तिलोयपण्णति का प्रकाशन[8] भी जैन धर्म एवं साहित्य की एक विशिष्ट घटना है। डा. जैन ने उन दिनों नागपुर/जबलपुर में कार्यरत जैन गणित के सुप्रसिद्ध विद्वान प्रो. लक्ष्मीचन्द जैन को तिलोयपण्णति के दो भागों में निहित गणित के अध्ययन की प्रेरणा दी और तिलोयपण्णति का गणित शीर्षक 104 पृष्ठीय विस्तृत आलेख, जो जम्बूद्वीपपण्णतिसंगहो (1958) ग्रंथ के साथ प्रकाशित हुआ,[9] लिखा गया। लगभग 1952 में प्रो. हीरालाल जैन ने प्रो. लक्ष्मीचन्द्र जैन को विगत अनेक वर्षों से अनुपलब्ध आचार्य महावीर

(850 ईस्वी) कृत गणितसार संग्रह के हिन्दी अनुवाद की प्रेरणा दी है। आज प्रो. लक्ष्मीचन्द्र जैन की लेखनी से हमें जैन गणित से सम्बद्ध लगभग सौ आलेख प्राप्त हुये हैं जो देश-विदेश की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं[10]। लेकिन प्रयुक्त गणित (Applied Mathematics) के इस विद्वान को जैन गणित के अध्ययन की ओर उन्मुख करने का श्रेय यदि किसी को जाता है तो निर्विवाद रुप से डा. हीरालाल जैन को जाता है। शायद यदि डा. जैन, प्रो. बी.बी. दत्त एवं एल.सी. जैन को जैन गणित के अध्ययन की ओर प्रवृत्त न करते तो जैन गणित के नाम़ पर हमें केवल स्थानांगसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र, अनुयोगद्वारसूत्र, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, तत्वार्थाधिगमसूत्रभाष्य, जैसे श्वेताम्बर परम्परा के ग्रंथों में निहित गणित ही प्राप्त होता एवं दिगम्बर जैन परम्परा के प्राचीन आगम ग्रंथों में लोक के स्वरुप के विवेचन तथा कर्म सिद्धान्त की व्याख्या में सरल, सहज रुप में आये उत्कृष्ट गणित से आज के गणित इतिहासज्ञ वंचित रह जाते। डा. हीरालाल जी की यह भावना थी कि विशाल जैन साहित्य में निहित वैज्ञानिक तथ्यों को विषय के अधिकारी विद्वानों के माध्यम से प्रकाश में लाया जाना चाहिये। भारत के राष्ट्रपति महामहिम डा. शंकरदयाल शर्मा (तत्कालीन शिक्षामंत्री, म.प्र.) की अध्यक्षता में दिये गये डा. हीरालाल जैन के 4 व्याख्यानों (7, 8, 9, 10 मार्च 1960) का संबंर्धित रुप भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान[11] शीर्षक पुस्तक में प्रकाशित है। इस पुस्तक में पृष्ठ 93 से 98 के मध्य करणानुयोग विषयक साहित्य का विवेचन करते हुए आपने अनेक ऐसे ग्रंथों का विस्तार से परिचय दिया है, जिसमें गणितज्ञों की रुचि की विपुल सामग्री निहित है। गणितीय साहित्य में डा. जैन की विशिष्ट अभिरुचि का प्रमाण जैन सिद्धान्त भास्कर (आरा) में प्रकाशित आपका आलेख आठवीं शताब्दी से पूर्ववर्ती गणित शास्त्र संबंधी संस्कृत एवं प्राकृत ग्रंथों की खोज है।[12] मुझे यह कहते हुए अफसोस है कि आज इस लेख के प्रकाशन के 58 वर्षों बाद भी हम वहीं खड़े हैं। जिन अनुपलब्ध ग्रंथों की चर्चा डा. हीरालाल जैन ने 1941 में की थी उनमें से एक भी हम नहीं ढूंढ़ पाये। मैंने 1980 में दिल्ली वि.वि. में दिये अपने व्याख्यान में डा. जैन द्वारा इंगित तथा विशाल जैन वांङ्मय में जिनके संदर्भ मिलते हैं, ऐसे अनेकानेक ग्रंथों का हवाला दिया था।[13] जिनकी खोज बहुत आवश्यक है। कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ इन्दौर द्वारा सत्श्रुत प्रभावना ट्रस्ट, भावनगर के सहयोग से जैन साहित्य के सूचीकरण की परियोजना का कार्य चल रहा है। मुझे कोई ऐसी पाण्डुलिपियों की जानकारी इस कार्य की श्रृंखला में प्राप्त हुई है जिनसे गणित इतिहास के गुत्थियों के सुलझने की आशा है। महान दिगम्बर जैनाचार्य श्रीधर को जैनेत्तर सिद्धकर 60 वर्षों तक जिनकी उपेक्षा होती रही। आज उनका गणितसार (त्रिंशतिका) मूल स्वरुप में शीघ्र ही प्रकाश में आने वाला है। बहुत सारे विषय हैं जिनकी यहां चर्चा की जा सकती है किन्तु मैं तो सिर्फ इतना कहना चाहूंगा कि आज विश्व क्षितिज पर जैनाचार्यों के उत्कृष्ट गणितीय अवदान की यदि चर्चा है तो उसके मूल में डा. हीरालाल जैन की व्यापक दूरदृष्टि और सतत् सार्थक प्रेरणा रही है और उनकी भावनाओं को विकसित करने में जो सहभागी रहे हैं उनमें स्वर्गीय डा. ए.एन.सिंह, डा. नेमीचन्द जैन शास्त्री, आरा, प्रो. लक्ष्मीचन्द्र जैन, प्रो. राधाचरण गुप्त का अमूल्य योगदान है। जन्मशताब्दी वर्ष में डा. हीरालाल जैन के प्रति यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी कि हम जैनगणित के क्षेत्र में अब तक प्रकाशित से अधिक शोध पत्रों को संकलित कर गणित के विकास में जैनाचार्यों के

योगदान को सम्यक् रुप से रेखांकित करने वाले एक ग्रंथ का सृजन एवं प्रकाशन करें।

सन्दर्भ :-

1. प्रफुल्ल कुमार मोदी, डा. हीरालाल जैन व्यक्तित्व एवं कृतित्व, प्राच्य श्रमण भारती, मुजफ्फरनगर, 1999।

2. Smith, D.E., Ganita Sara Samgraha of Mahaviracarya. B.M. (Leipzing), 3 106-110, 1908.

3. महावीराचार्य, गणितसार संग्रह, अंग्रेजी अनुवाद सहित सम्पादित, एम. रंगाचार्य मद्रास सरकार, मद्रास 1912

- गणितसार संग्रह, हिन्दी अनुवाद सहित सम्पादित, लक्ष्मीचन्द्र जैन, जैन संस्कृति संरक्षक संघ शोलापुर 1963

- गणितसार संग्रह, हिन्दह, अंग्रेजी एवं कन्नड़ अनुवाद सहित प्रकाशित, कन्नड़ अनुवादक-प्रो. पद्मावथम्मा (मैसूर) मुद्रणाधीन।

4. Dutt, Sukomal, Bidhuti Bhushan Dutt or Swami Vidyaranya, Ganita Bharti (Delhi) 10 (1-4), 3-15, 1980

5. Dutt, B.B., The jaina School of Mathematics, B.C.M.S. (Calcutta) 21 115-143, 1929

महावीराचार्य एवं नेमिचन्द्राचार्य के गणितीय अवदान पर भी आपने लेख लिखे हैं। विस्तृत विवरण हेतु देखें A Brief Survey of Workdone on Jaina Mathematics, by A. Jain Tulsiprajna, (Landnun) II (1-3), PP 15-27, 1973

6. Singh, A.N. Mathematics of Dhavala, Dhavala Book IV Amravati-1941

धवला का गणित, धवला पुस्तक-5 के साथ प्रकाशित अमरावती 1945

7. Singh, A.N., History of mathematics in India from Jaina Sources, The Jaina Antiquary (Arrah) 15 (II) 46-53, 16 (II) 55-69, 1949, 1950

8. यतिवृषभ (आचार्य), तिलोयपण्णत्ति भाग-2 संपादक डा. हीरालाल जैन, आ.ने.उपाध्ये, सोलापुर 1948, 1953. आर्यिका विशुद्धिमती कृत टीका सहित, कोटा भाग-1-3, 1984-1988

9. लक्ष्मीचन्द्र जैन, तिलोयपण्णत्ति का गणित, अन्तर्गत जम्बूद्वीप-पण्णत्ति-संग्रहो, सोलापुर, 1958

10. See Bio-data of Prof. L.C. Jain attached with the 'Tao of Jain Sciences' Arihant International, Delhi 1992, XVII-XXIV. यह सूची 1992 तक की है। अब यह सूची 100 का आंकड़ा स्पर्श कर रही है।

11. डा. हीरालाल जैन, भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान, म.प्र. शासन साहित्य परिषाद, भोपाल1962

12. डा. हीरालाल जैन, आठवीं शताब्दी से पूर्ववर्ती गणित सम्बन्धी संस्कृत एवं प्राकृत ग्रंथो की खोज जैन सिद्धांत भास्कर (आरा) 8 पृ. 105-111 1941.

13. अनुपम जैन, कतिपय अज्ञात जैन गणित ग्रंथ गणित भारती (दिल्ली) 4 (1-2) पृ. 61-71, 1981

जैन गणितीय साहित्य, अर्हत्वचन, इन्दौर 1 (1) पृ. 19-40, 1988

प्राकृत भाषा में निबद्ध गणितीय ग्रंथ, तुलसीप्रज्ञा 26, जुलाई-सितम्बर 1999 PP 35-43

देव निर्मित (वोद्धथूभे) जैन स्तूप

ले. कुन्दनलाल जैन

'Slip of Pen' की वजह से द्वे की जगह द्धे हो जाने से महान ऐतिहासिक एवं पुरातात्वीय भ्रांति पूर्व में हो चुकी है। फलतः पुरातत्वीय अभिलेखों में मथुरा के प्राचीन जैन स्तूप को बौद्धस्तूप सिद्ध कर दिया गया है। विद्वान लेखक ने इतिवृत्तमनीषियों, पुरातत्ववेत्ताओं पुरातत्वीय साक्ष्य, प्राचीन इतिहास तथा विज्ञ मनीषायों के कथन निष्कर्षों के आधार पर सिद्ध किया है कि मथुरा के प्राचीन स्तूप जैनस्तूप ही है, बौद्धस्तूप नहीं। लेखक के तर्क सबल व प्रमाण अकाट्य हैं।

तित्थयर के इस अप्रैल सितम्बर 1999 के महावीर विशेषांक में पृ. 109-121 तक तथा ऋषभ सौरभ 1992 के पृ. 58 पर आदरणीय श्री डा. रमेशचन्द जी शर्मा का विस्तृत आलेख माथुरा के जैन साक्ष्य शीर्षक से पढ़ने को मिला, लेख आधिकारिक प्रमाणों सहित अति उत्तम है तथा शोध परक एवं उच्चकोटि का है, नये शोधार्थियों को पर्याप्त जानकारियों से भरा पड़ा है पर एक जरा सी घुंडी ने दो ऐतिहासिक संस्कृतियों के ज्ञान में आमूल चूल परिवर्तन सा कर दिया है, जिससे पीड़ा हुई है और 'उद्वाहुरिववामन:' की उक्ति को चरितार्थ कर रहा हूं। हो सकता है यह Slip of Pen हो या अनजाने ही द् में मिश्रित व पर घुंडी चढ़ गई हो और वह वोद्वे शब्द बोद्धे में परिवर्तित हो गया हो जो प्राचीन जैन स्तूप को प्राचीन बौद्ध स्तूप की सिद्धि में महान ऐतिहासिक और पुरातात्विक भ्रान्ति का कारण बना, जो नहीं होना चाहिए था इससे भावी शोधार्थी भ्रान्ति में फंस जायेगें और गलत निर्णय अपनी भावी पीढ़ी को छोड़ जावेगें।

सचाई यह है कि यह कि स्तूप वोद्वे (VODVE) नाम से ही प्राचीन पुराविदों में, (भले ही वे भारतीय हों या पाश्चात्य विद्वान) विख्यात रहा है और प्राचीन ब्राह्मी की अल्पज्ञतावश वे इस वोद्व शब्द का खुलासा नहीं कर सके और वोद्वे-वोद्वे ही प्रचलित रहा और इसके खुलासा समाधान की ओर किसी का ध्यान ही नहीं गया और इसके प्राचीन लिपिकाल तथा थूभे शब्द से संतुष्ट होते रहे।

चूंकि यह जैन स्तूप है अतः इसकी प्राचीनता तथा अन्य जैन जानकारियों के प्रचार प्रसार हेतु स्व. डा. कामता प्रसाद जी ने अपनी अहिंसा वाणी शीर्षक शोधपत्रिका के महावीर विशेषांक के लिए स्व. डा. के.डी. वाजपेयी सा. से इस स्तूप से संबंधित अच्छा शोध परक लेख माँगा तो स्व. संपादक जी महोदय ने उसे सहर्ष प्रकाशित कर दिया यह बहुत पुरानी बात है मै चूंकि उपर्युक्त दोनों ही विद्वानों की शोध परक प्रवृत्तियों से भली भांति परिचित रहा हूं तथा दोनों के साक्षात् दर्शन भी किए है। मैं वाजपेयी सा. के बौद्वे शब्द की व्युत्पत्ति को जानने के लिए अति व्याकुल रहा अतः मैनें दिल्ली के तथा बाहर के मूर्धन्य पुरातत्वविदों और खासकर

प्राचीन ब्राह्मीलिपि विशेषज्ञों से संपर्क साधा और बौद्वे शब्द के विषय में चर्चा एवं विशद विचार विमर्श किए पर सभी का कहना हुआ कि प्रतिभालेख की मूल छाप (फोटो प्रति) देखे बिना कोई निश्चित निर्णय नहीं किया जा सकता फलत: वाजपेयी सा. के लेख की फोटो प्रतिलिपि मंगवाई उसमें वह छाप भी विद्यमान थी। मैने आनन फानन उस छाप की फोटो प्रति सभी विद्वानों को भेजी फलत: कुछ तो मौन रह गये पर डा. कृष्ण देवजी तथा श्री बहादुर चंद्र जी छावड़ा प्रभृति मूर्धन्य प्राचीन ब्रह्मी लिपि विशेषज्ञों ने बताया कि वोद्वे जैसा कोई स्पष्ट शब्द नहीं पढ़ा जाता अपितु द्वे बिल्कुल स्पष्ट और साफ पढ़ा जाता है तथा वो का झुकाव प्रतिमा की तरफ पढ़ा जाता है। अत: स्पष्ट पाठ प्रतिभाओं द्वे थूभे प्र. होता है मुझे कुछ शान्ति हुई कुछ दिनों बाद अचानक स्व. श्री उमाकान्त प्रेमानन्द शाह का आलेख कहीं पढ़ने को मिल गया और उसमें उपर्युक्तपाठ देखकर पूर्ण शान्ति प्राप्त हुई इस पर सारे नोट्स जो अब तक छितरे बिखरे पड़े थे उन्हें भली भांति संभालकर इस वोद्वे पर लेख लिखकर पाठकों को आश्चर्य चकित करना चाहता था पर दुर्भाग्य कि अस्वस्थता वश वह कार्य रुका सो रुका ही रहा अब श्री शर्मा जी का उससे संबंधित लेख को देखा तो भूचाल सा दिमाग में आया, मैने शर्मा जी को व्यक्गित पत्र भी लिखा संभवत: इस पर अजमेर संगोष्ठी में भी चर्चा हुई होगी और स्मारिका छपने की तैयारी हो रही होगी अत: पू. उपाध्याय ज्ञान सागर जी महाराज को यथार्थ स्थिति से अवगत कराया साथ ही संशय निवारण हेतु तित्थयर पत्रिका को यह लेख भेज रहा हूँ।

यह समस्या जब से मथुरा के कंकाली टीले से खुदाई में प्राप्त प्रतिभा लेख से अब तक वोद्वे रुप में ही प्रचलित चली आ रही है। श्री शर्मा जी को लगा कि इतनी बड़ी समस्या का चमत्कारिक समाधान एक जरा ही घुंडी के परिवर्धन से बड़ी सहजता और सरलता से संभव है और इसमें न सांप मरे और न लाठी टूटे की उक्ति भली भांति चरितार्थ हो सकती है। अत: उन्होने वोद्वे के द्वे में मिश्रित ० के ऊपर एक और चमत्कारिक घुंडी चढ़ाकर ० ध में परिवर्तित कर दिया और बड़ी सरलता और सहजता से पूरा शब्द वोद्वे (VODVE) न रहकर वोद्वे वन गया, रही बात व और ब की सो प्राचीन लिपिकारों में इन दोनों अक्षरों में कोई विशेष अन्तर नहीं माना जाता रहा फलत: वोद्वे में बदल जाने से किसी को कोई आपत्ति न रहेगी भले ही एक संस्कृति का अभ्युदय और दूसरी संस्कृति को क्षति पहुंचती रहे। पर पूरे प्रतिमा लेख में छिपे आंतरिक जैन तथ्यों के प्रति श्री शर्मा जी की दृष्टि नहीं पहुंची।

नद्यावर्त (डा. के.डी. वाजपेयी का पाठ मुनिसुव्रतस) श्राविका, गण, गच्छ, शाखा आदि जैन अन्तर्साक्ष्यों के प्रति शर्मा जी की दृष्टि ओझल ही रही, और यह जैन बौद्ध स्तूप में निर्णायक रुप से घोषित कर दिया गया। इस भूल को विगत सात वर्षों में भी संशोधन नहीं किया जा सका।

इन गणगच्छों के प्रचलन का बहुत पुराना जैन इतिहास विद्यमान है आचार्य अहर्द्वली ने

एक बार पुण्ड्रवर्धन पुर में समस्त श्रमण संघ के मुनियों के सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें सभी श्रमण सम्मिलित हुए, सम्मेलन के प्रारंभ से पूर्व आचार्य अर्हद्वलि ने पूछा सभी मुनिजन आ गये है ? तो उत्तर मिला हम सब अपने गणों गच्छों सहित उपस्थित हो गये हैं। तब आचार्य श्री को आभास हुआ कि अब जैन धर्म विभिन्न वर्गों में ही बंटकर रह सकेगा अत: उन्होने जो जहां से आये थे उनकी तदनुरुप संज्ञायें सुनिश्चित कर दी जैसे जो गुहाओं से आये थे उन्हें कुछ को नंदि तथा कुछ को वीर अंत संज्ञा दे दी, जो अशोक वाटिका से पधारे थे उनमें से कुछ को अपराजित और कुछ को देव अंत संज्ञा दे दी, जो पंच स्तूप से आये थे उन्हें पंच स्तूपान्वयी कहा उनमें से कुछ को सेन और कुछ को भद्र अंत संज्ञा दे दी इसी तरह विभिन्न संघों, गणों गच्छों और शाखाओं की स्थापना सुनिश्चित हो गई। विस्तार के लिए इन्द्रनंदी आचार्य के श्रुतावतार ग्रंथ में 90 से 102 श्लोकों को देखा जा सकता है।

एक शब्द देव निर्मित है जो हर तीर्थंकर के समोशरण की रचना देवाधिपति इन्द्र ही करता है अत: यह देव निर्मित कहलाया भगवान पार्श्वनाथ के समवशरण की मथुरा में रचना हुई हो और उसका ही अंश रुप यह स्तूप बाकी बचा रह गया हो और यह देवनिर्मित कहलाया जो सोने व रत्नों का देवों ने बनाया था। जिन्होंने इसका जीर्णोद्धार कराया उन तक को भी इसकी प्राचीनता का ज्ञान नहीं था, वप्पभट्टसूरि ने भी मथुरा के जैन स्तूपों की चर्चा की है इस तरह अकबर के शासन काल तक यहां जैन स्तूप बनते रहे। अकबर की टकसाल के प्रमुख अधिकारी कोलभटानिया (अलीगढ़) के साहु टोडर जब जम्बूस्वामी की निर्वाण स्थली के दर्शनार्थ पधारे तो यहां के दस-बीस नहीं अपितु इन से अधिक जैन स्तूपों की जीर्ण शीर्ण दशा देखकर उन्हें बड़ा कष्ट हुआ और उन्होंने उन सभी जीर्ण-शीर्ण स्तूपों का जीर्णोद्धार कराया तथा जैन पौराणिक कथा के अनुरुप कुल 514 जैन स्तूपों का निर्माण कराया विस्तार के लिए अर्हद्वचन में प्रकाशित मेरा पुरस्कृत लेख देखें। यदि यह बौद्ध स्तूप है तो फिर इसे जैन साक्ष्यों में सम्मिलित कर लेने का भी तो कुछ कारण होना चाहिए ?

इस तरह प्रतिभावों द्वे थूपे देव निर्मिते प्र. (तिष्ठिता:) से ऐसा प्रतीत होता है कि दो जैन स्तूपों में दो जैन प्रतिमाएं प्रतिष्ठित हुई हो ऐसा मेरा अनुमान है कि इनके अतिरिक्त तीन स्तूप और रहे होंगे जिन्हें कराल काल ने कबलित कर डाला अन्यथा यह पंच स्तूप कहलाता रहा हो इन सब तर्कों और अकाट्य प्रमाणों से श्री शर्मा जी सहमत होंगे और उस एक छोटी से घुंडी का व्यामोह त्याग कर पिछले सौ वर्षों से चली आ रही वोद्वे की कठिन समस्या के सरल समाधान बोद्धे ढूंढ़ लेने के आग्रह से विमुक्त होकर प्राचीन इतिहास और पुरातत्व को भ्रष्ट होने से बचा लेगें। सधन्यवाद।

ज्ञानोपासक डा. कोठिया की नैनागिर से नेमावर तक की जीवन यात्रा

(जैन न्याय के सूर्य डा. दरबारी लाल कोठिया 3 जनवरी को देहातीत)

✍ ब्र. संदीप जैन 'सरल'

श्री अनेकान्त ज्ञान मंदिर के संस्थापक युवा मनीषी विद्वान ब्र. संदीप भैया जी द्वारा सारगर्भित सुबोध शैली में प्रस्तुत जैन दर्शन सिद्धान्त और न्यायशास्त्र के यशस्वी प्रकाण्ड विद्वान डा. श्री दरबारीलाल जी कोठिया बीना के जन्म से समाधिमरण तक के जीवन की। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की अपूर्व झांकी प्रेरक एवं सत्पथ दर्शक है।

मध्यप्रदेश के पावन तीर्थ नयनागिरि की पवित्र भूमि में वि.सं. 1968 सन् 1911 में जन्मे बालक दरबारीलाल को किसने जाना था कि विन्ध्या की बीहड़ में खेतों में सिलों बीनने वाला बालक बौद्धिक स्तर पर ज्ञान के दरवाजे खोलता हुआ महावीर जैन विद्यालय साढूमल में प्रवेशिका में प्रवेश पाकर स्याद्वाद महाविद्यालय वाराणसी से शास्त्राचार्य, न्यायाचार्य एवं पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त कर सकता है। इसके जीवन्त उदाहरण है - न्यायाचार्य डा. दरबारीलाल कोठिया। उदीयमान अभावग्रस्त प्रतिभासम्पन्न छात्र, छात्राओं के लिए डा. कोठिया से बड़ा प्रेरणा-दीप कौन हो सकता है ?

लगभग सप्त दशक की दीर्घ साहित्यक ज्ञान यात्रा में डा. कोठिया ने लेखन ग्रन्थ सम्पादन, अध्यापन जिनवाणी का प्रचार प्रसार समाज सेवा देश विदेश के शोधार्थियों के लिये मार्गदर्शन, अभावग्रस्तों को अपनी सीमित आय से भी निरन्तर आर्थिक सहयोग और सम्बन्धों के निर्माण का जो कीर्तिध्वज स्थापित किया है, उसके प्रतिफल जो न्यायालंकार, न्याय रत्नाकर, न्याय वाचस्पति, न्याय सिन्धु आदि उपलब्धियां वीर निर्माण भारती, नई दिल्ली 2500 वां निर्वाण महोत्सव समिति दिल्ली, कुन्दकुन्द पुरस्कार-सोलापुर, राष्ट्रपति पुरस्कार से भी पुरस्कृत होने का गौरव प्राप्त करने वाले एवं अनेक ग्रन्थों का शोध करने वाले जो अंत में स्वयं शोध के विषय बने, डा. दरबारी लाल कोठिया ने अपने सम्पूर्ण ज्ञानोपासक जीवन का असीमित पुरस्कार तो तब पाया जब वे संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के पास 22 दिसम्बर 99 को नेमावर पहुंचे और सल्लेखना की याचना की। आचार्य श्री ने भी उनकी शारीरिक मानसिक स्थिति को देखा और 3 जनवरी को प्रात: 9.45 पर परिग्रहत्याग प्रतिमा के व्रत ग्रहण कराये और उसी दिन सायंकाल 3.45 मि. पर पूर्ण सजगता पूर्वक देहातीत हो गये। डा. दरबारीलाल कोठिया का पार्थिव शरीर हमारे बीच से तो उठ गया किन्तु उन्होने साहित्यिक

अवदान में जो कीर्ति स्थापित की है वह सदैव विद्वत जगत में स्मरण की जाती रहेगी।

यह सत्य है कि डा. दरबारीलाल कोठिया को विद्वत्ता उत्तराधिकार मैं अपने पूज्य पिता पं. हजारीलाल जी कोठिया से मिली थी। डा. कोठिया जी को अपने पिता की छत्रछाया मात्र 6 वर्ष तक रही और पूज्या माता श्रीमती चिरोंजीबाई का स्नेह वात्सल्य मात्र 12 वर्ष तक ही रह पाया। इसके बाद इनका लालन पालन अपने चाचा पं. बंशीधर जी व्याकरणाचार्य के साथ हुआ है। पूज्य क्षु. गणेश प्रसाद जी वर्णी की असीम कृपा इनके ऊपर सदैव रही कि इन्होने अपने जीवन को सदैव सद्जीवन बनाये रखा और अपने ज्ञान को पैसे में नहीं बेचा। सन् 1936 में सहधर्मिणी श्रीमती चमेलीबाई से विवाह हुआ और श्रीमती जी का साथ 1985 तक रहा। इस बीच श्रीमती चमेलीबाई जी ने न सिर्फ पारिवारिक दायित्वों का निर्वाह किया अपितु कोठिया जी की साहित्यसाधना और समाज सेवा में भी उनका पूरा सहयोग दिया। वे एक विदुषी महिला थीं।

श्रद्धेय पं. जुगलकिशोर जी मुख्तार साहब ने कोठिया जी के व्यक्तित्व को परखा और उन्हें एक प्रौढ़ लेखक साहित्यकार बनाकर सन् 1960 में वीर शासन जयंती के अवसर पर दिल्ली में अपना उत्तराधिकारी भी चुना।

डॉ. कोठिया जी की सेवाएं :-

डॉ. दरबारीलाल कोठिया ने 1937 में वीर विद्यालय पपौरा से अपनी सेवाएं देना प्रारम्भ की और मथुरा, सरसावा, समन्त भद्र संस्कृत विद्यालय दिल्ली, बड़ौत आदि में अपनी सेवाएं देते हुए 1960 से 1974 तक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी में जैन बौद्ध दर्शन के रीडर पद से निवृत्त हुए। इस बीच स्याद्वाद महाविद्यालय वाराणसी, गणेश प्रसाद वर्णी जैन ग्रन्थमाला, गणेश वर्णी संस्थान, वीर सेवा मंदिर ट्रस्ट, अ.भा.दिग. जैन विद्वत् परिषद, प्राकृत जैन शोध संस्थान वैशाली, जैन संदेश, मथुरा, अनेकान्त, जैन प्रचारक, जैन विद्या संस्थान श्री महावीर जी आदि सामाजिक संस्थाओं में भी अपनी सेवाएं देते रहे।

कृतियां :-

डा. कोठिया ने यूं तो 1937 से लेखन कार्य शुरु कर दिया था और उनके शोधालेख जैन सिद्धांत भास्कर एवं अनेकान्त में छपने लगे थे। 1944 में अध्यात्म कमल मार्तण्ड, 1945 में न्याय दीपिका, 1949 में आप्त परीक्षा, श्रीपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र, शासन चतुस्त्रिंशतिका, 1950 में स्याद्वाद सिद्धि, प्राकृत पद्यानुक्रमणी 1961 में प्रमाण प्रमेय कलिका, 1964 में द्रव्य संग्रह, 1969 में जैन तर्क शास्त्र में अनुमान विचार 1977 में प्रमाण परीक्षा, 1980 में जैन दर्शन और प्रमाण शास्त्र परिशीलन 1983 में जैन तत्वज्ञान मीमांसा, पत्र परीक्षा, जैन न्याय की भूमिका, जैन पुराण कोश आदि ग्रन्थों के सम्पादन, प्रणयन में लगे रहे।

बीना कर्मस्थली :-

सन् 1985 में श्रीमती चमेलीबाई के निधन होने पर आपके चाचा पं. श्री बंशीधर जी व्याकरणाचार्य ने आपको बीना बुला लिया था और अपना शेष जीवन उन्हीं के परिवार के मध्य अनुकूल वातावरण में व्यतीत किया। सन् 1991 एवं 1992 में पूज्य मुनि श्री सरल सागर जी महाराज ने बीना में चातुर्मास किया एवं डा. कोठिया जी से अष्टसहस्री जैसे किलिष्ट ग्रन्थों का अध्ययन किया। पं. जी भी पूर्ण विनम्रता के साथ अध्यापन के कार्य में रुचि लेते थे। 1995 में आचार्य श्री 108 विराग सागर जी महाराज एवं 1998 में पूज्य क्षमासागर जी ने बीना में चातुर्मास किया इसमें कारण रहे डा दरबारी लाल जी कोठिया।

मेरा लगभग एक दशक कोठिया जी के साथ :- सन् 1990 में पू. गुरुवर श्री 108 सरल सागर जी के साथ बीना आगमन पर प्रथम परिचय कोठिया जी से हुआ। न्याय का आद्यग्रन्थ परीक्षामुख कोठिया जी से पढ़ा उनके स्नेह वात्सल्य एवं व्रतियों के प्रति विनम्रता एवं निरहंकारता ने सदैव के लिए उनसे जोड़ दिया। 20 फरवरी 1992 को बीना में श्री सरल ग्रन्थालय के रुप में अनेकान्त ज्ञान मंदिर की स्थापना का सौभाग्य मेरे लिये मिला। फिर तो कोठिया जी से सम्पर्क बढ़ता ही गया। वे सदैव सृजनात्मक कार्य करने के लिए प्रेरित करते रहते थे। अनेकान्त ज्ञान मंदिर की गतिविधियों से उनका चेहरा सदैव खिला रहता था और हर आने वाले व्यक्ति से ज्ञान मंदिर की चर्चा करते रहते थे। अपनी अमूल्य ज्ञान निधि का बहुभाग ज्ञान मंदिर को ही प्रदान कर दिया था। डा. कोठिया जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन आ. विद्यानंद के दार्शनिक ग्रन्थों के सम्पादन में ही पूर्ण किया था किन्तु एक कार्य उनका अपूर्ण था **अष्ट सहस्री ग्रन्थ का सम्पादन**। इस कार्य को अर्द्ध शताब्दी से पूर्ण करना चाह रहे थे किन्तु योग नहीं बन पा रहा था और सन् 95 में तो उम्मीद ही छोड़ दी थी।

22 फरवरी 95 को इन पंक्तियों के लेखक को डा. कोठिया ने परखा और सजल नेत्रों से निहारा एवं अन्तस् की पीड़ा को कहा कि ब्र. संदीप जी, मेरी अंतिम इच्छा है अष्टसहस्री ग्रन्थ के सम्पादन की, क्या मेरा साथ निभा सकोगे ? पण्डित जी मै समर्पित हूं, यदि योग्यता समझते हैं तो मेरा उपयोग कर सकते हैं। 5 मई 95 से 10 जुलाई 97 तक का समय मेरे जीवन का सुवर्णयुग रहा इस बीच प्रतिदिन 4-5 घण्टे कोठिया जी के साथ बैठा और अष्टसहस्री ग्रन्थ के सम्पादन में सम सम्पादक बनने का सौभाग्य मुझे मिला। जैन विद्या संस्थान श्री महावीर जी से अष्टसहस्री ग्रन्थ के प्रकाशन को देखकर कोठिया जी के हर्ष का पारावार नहीं रहा।

विगत 2-3 वर्षों से उनका शरीर काफी शिथिल हो गया था किन्तु स्मरण शक्ति प्रौढ़ थी। प्रतिदिन दोप. 1.30 से 3.00 तक का समय मेरा उनके बीच स्वाध्याय तत्वचर्चा में व्यतीत होता था। कोठिया जी सदैव कहा करते थे कि 'भैया' हमारी समाधि करवाना। इष्टोपदेश, समाधितंत्र, समयसार, नियमसार, मरण कण्डिका ग्रन्थ का पारायण उनके लिए करा चुका था और पंचास्तिकाय ग्रन्थ चल रहा था कि मैं 12 दिसम्बर 99 को गुजरात प्रांत के

टूर पर निकल गया था 21 को वापिस आया ज्ञात हुआ कि कोठिया जी नेमावर जा रहे हैं और मुझे याद कर रहे हैं। पण्डित जी से मिला। प्रसन्नता पूर्वक पण्डित जी ने कहा कि भैया हम नेमावर जा रहे हैं। हमने सद्भावनायें प्रदान की कहा कि पण्डित जी आप तो सब विकल्पों को छोड़कर सिर्फ पंच परमेष्ठी का ध्यान करो। अंतिम संदेश के रुप में डा. कोठिया जी ने मुझसे कहा था कि आपने बहुत कठोर परिश्रम करके ज्ञान मंदिर की स्थापना करके ग्रन्थान्वेषण का जो कार्य किया है उसको जारी रखते हुए युक्त्यनुशासनालंकार, प्रमाण निर्णय आदि ग्रन्थों का सम्पदान करके शीघ्र प्रकाश में लाना है। तुम्हें पं. जुगलकिशोर जी मुख्तार, पं. नाथूराम प्रेमी जैसा चिरस्थायी कार्य करना है। संघर्षों से कभी घबड़ाना नहीं है। यह कहते हुए पण्डित जी नेमावर चले गये थे, यही मेरी उनसे अंतिम मुलाकात थी।

3 जनवरी को रात्रि 8 बजे ज्ञात हुआ कि पण्डित जी का समाधिमरण हो गया है तो एक ओर हर्ष हुआ कि एक जिनवाणी सपूत ने ज्ञान की साधना का वह अक्षुण्ण फल प्राप्त कर नर भव को सफल कर लिया। दूसरे क्षण मन में विचारों ने उथल पुथल की कि अरे ! डा. कोठिया जी के जाने के बाद मैं न्यायाचार्य मनीषी विद्वान से रहित हो गया। अब मुझे ज्ञान की वे सब बातें नहीं मिल पायेंगी जो सहज में ही पण्डित जी से मिल जाती थीं।

डा. कोठिया जी के अंतिम समय तक श्री विभव कुमार कोठिया सपरिवार ने अनुकूल वातावरण बनाकर खूब सेवा की। क्या कोठिया परिवार बीना एवं समूची भारतवर्षीय दिगम्बर जैन समाज से यह आशा की जा सकती है कि उनकी रिक्तता की पूर्ति हो और उन द्वारा रहे शेष कार्यों को अशेष किया जावे। यदि ऐंसा होता है तो अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना का सहयोग पूरा मिलेगा और मैं स्वयं सहयोग करके गौरान्वित होऊंगा।

अनेकान्त ज्ञान मंदिर परिवार के सदस्यों को अद्वितीय उपहार

वर्ष २००० एवं अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान के अष्टम स्थापना समारोह २० फरवरी के उपलक्ष्य में शोध संस्थान से जुड़े हुये शिरोमणि संरक्षक सदस्यों, परम संरक्षक सदस्यों, संरक्षक सदस्यों, जिनवाणी सदस्यों एवं स्थाई सदस्यों के लिये उपहार स्वरुप परम पूज्य मुनि श्री १०८ सरल सागर जी महाराज की लेखनी से लिखित ''समाधि समीक्षा'' एवं ''त्यौहार समीक्षा'' पुस्तकें प्रदान की जावेंगी। अनेकान्त ज्ञान मंदिर की अविरल ज्ञान धारा में आपके सराहनीय सहयोग की सहृदय से प्रतीक्षां करते हैं। अनेकान्त ज्ञान मंदिर से जुड़े सभी जिनवाणी उपासकों से सानुग्रह निवेदन है कि एक पोस्ट कार्ड पर अपना पूर्ण पता लिख कर भेजें। ताकि साहित्य भेजा जा सके।

धन्यवाद।

शाकाहार की आपवादिकता व्यक्ति और समाज

✍ ज्ञानचन्द्र बिल्टीवाला

जैन धर्म-दर्शन-आगम के निष्णात मनीषी विद्वान श्री बिल्टी वाला जी ने जैनधर्म एवं आगम के आलोक में शाकाहार की अपवादिता को प्रामाणिक तथ्यों से तर्कपूर्ण वैज्ञानिक शैली में तात्विक प्रतिपादन किया है। आत्मा के लोक में प्रवेशेच्छु को मांसाहार तो सर्वथा त्याज्य है ही पर शाकाहार करना भी उसकी विवशता है, लाचारी है। धर्म साधनार्थ शरीर को टिकाये रखने हेतु शाकाहार लेने को उसे विवश होना पड़ता है। ध्यातव्य है कि जैन धर्म में शाकाहार की विवशता के रहते केवल ज्ञान स्वीकार नहीं किया गया है। केवली की देह कोटि पूर्व काल तक अकवलाहारी रहते हुए प्रतिसमय चारों ओर व्याप्त सूक्ष्म आहार वर्गणा जगत से आहार ग्रहण करती रहती हैं। मुनिजनों की देह का तपश्चरण से रुपान्तरण होता जाता है। बादर निगोद जीव राशि हटती चलती है और देह प्रत्येक शरीर वर्गणा बनती चलती है। आलेख पठनीय चिन्तनीय है।

संसार में हमें दो प्रकार के प्राणी मिलते है-शाकाहारी एवं मांसाहारी। गाय, हाथी आदि शाकाहारी हैं तो शेर, भेड़िया आदि मांसाहारी हैं। मानव समाज में अन्न, साग सब्जी तो सभी होते है, कुछ लोग मांसाहार भी करते हैं। जो शुद्ध शाकाहारी हैं, जिसे मांस देखते ही घिनौनी होती है, उसे खाने की तो बात ही छोड़ें, वह मांसाहारियों के साथ बैठकर एक टेबिल पर भोजन नहीं कर सकता। शाकाहारियों के साथ बैठकर वह अपना भोजन सानन्द करता है। इस प्रकार समाज दो वर्ग में विभाजित हो जाता है - शाकाहारी एवं मांसाहारी। दोनों प्रकार की भोजन शैलियों में परस्पर गुणावगुण को लेकर समाज में काफी ऊहोपोह हुआ है। आज **चिकित्सा विज्ञान** की शोध खोज मांसाहार को अनेक रोगों एवं मानव स्वभाव में विकृतियों का कारण बता रही है और शाकाहार को मानव के तन मन के लिये लाभकारी कर रही है। आर्थिक दृष्टि से वातावरण में प्रदूषण की दृष्टि से भी मांसाहार हानिकारक स्वीकार किया जा रहा है और शाकाहार निरापद।

अब हम देखेंगे कि जैन धर्म-दर्शन में शाकाहार का प्रतिपादन और मांसाहार के वर्जन का क्या इतना ही आधार है अथवा उसमें कुछ तात्विक विशेष गहराई है, क्या शाकाहार औत्सार्गिक रुप से मानव का भोजन स्वीकार किया गया है या आपवादिक रुप से विवश होकर स्वीकृत है, क्या मानव पराश्रयता का दायरा/सीमा शाकाहार करते हुये लांधता है अथवा उसे छोड़कर। उल्लेख है, अठारह दोषों से रहित केवली परमात्मा शाकाहारी नहीं है, वे कवलाहार नहीं करते। इसीलिये उनकी देह भी निर्दोष है और उन्हें कोई पराश्रय प्रकरत: नहीं है। बारहवें

गुणस्थानवर्ती मुनिराज की देह निर्दोष नहीं है। उनकी देह में अभी बादर निगोद राशि विद्यमान है। केवली परमात्मा की देह में अब निगोद राशि नहीं है। उनका शरीर प्रत्येक वर्गणा के रुप में शास्त्रों में स्वीकृत हुआ है और बारहवें गुणस्थान के क्षपक का शरीर बादर निगोद वर्गणा के रुप में। मानव की निर्दोष, शुद्ध स्थिति केवली भगवान में प्रकट होती है और यह स्थिति आयु पर्यन्त बनी रहती है, आयु लाखों वर्षों की क्यों न हो। वे आहारी तो हैं, पर कवलाहारी/शाकाहारी नहीं हैं। चारों ओर आकाश में सूक्ष्म आहार वर्गणायें ठसाठस भरी हुई हैं और उनके प्रदेश-परिस्पन्दन के द्वार से अत्यन्त शक्तिमान आहार वर्गणायें उनकी देह में प्रविष्ट हो रही हैं और उसे पुष्ट रख रही हैं। देह का परमाणु जो क्षरित होता है अपने विस्रसोपचय में से अन्य को स्थान दे देता है, और इस प्रकार देह पोषण निराबाध आयु पर्यन्त चलता रहता है।

मानव देह के पोषण का यह शुद्ध रुप है जिसमें तिल तुष मात्र भी अन्य जीव को बाधा नहीं है अन्यथा, जिसे लेकर हिंसादि पांचों पापों के दौर में मानव को विवश होकर गुजरना होता है और परिणाम स्वरुप पाप कर्मों का आश्रवबंध होता है। मांसाहार करे तो बहुत होता है, शाकाहार करे तो कम होता है, पर होता अवश्य है। अत: जैन धर्म में शाकाहार आपवादिक रुप से ही स्वीकार है और साधक मानव उसे भी लांघकर अकवलाहारी बनने का उद्यम करता है।

शाकाहार की सदोषता मांसाहार के मुकाबले कम है, पर है अवश्य। वह भी अपनी प्रक्रिया और परिणाम में संतोष है। इस संतोषता को हजार वर्ष पूर्व De Abtentia (मांसाहार वर्जन पर एक पुस्तक) के यूनानी लेखक पोराफिरी ने अपने शिष्य, जो ईसाई धर्म ग्रहण कर पुन: मांसाहारी हो गया था, को समझाते हुये स्वीकार किया है। उसका कहना है कि जिसे आत्मा के लोक में प्रवेश करना है उसे मांसाहार छोड़ना होगा। वह कहता है शाकाहार में हिंसा कम है और उसका वश चले तो वह शाकाहार भी छोड़ दे, पर देह को टिकाये रखने हेतु आवश्यक होने से ऐसा करना शक्य नहीं है और आत्मा के लोक में प्रवेश करने के इच्छुक को विवश होकर उसे करना होता है। जैन धर्म में इस विवशता के रहते केवल ज्ञान स्वीकार नहीं किया गया है। शाकाहार से पोषित सदोष को बादर निगोद वर्गणा में परिगणित करते हुये उसे केवल ज्ञान के साथ बेमेल स्वीकार किया गया है। केवल ज्ञानी की देह को प्रत्येक शरीर वर्गणा कहा गया है किंचित भी बादर निगोद राशि विद्यमान नही है। परमात्म लोक तक यात्रा कर आने वाले साधक ने अपनी देह को उपवास, कायक्लेश आदि से क्रम क्रम से बादर निगोद वर्गणा से मुक्त कर अन्तरंग घातियां कर्मनाश के साथ साथ देह की भी शुद्धि कर स्वयं को केवल ज्ञान का पात्र बना लिया है। शाकाहार करते हैं क्षुधा, तृष्णा, निद्रा, थकान आदि अठारह दोषों से वह अनिवार्यत: ग्रस्त था, जैसे कि संसार के सभी मानव हैं और अन्य औदारिक देहधारी त्रस जीव हैं। ज्ञान के लोक में आत्मजागरण के साथ मानव देह का भी बादर निगोद वर्गणा के स्थान पर प्रत्येक शरीण वर्गणा (निगोद राशि रहित) के रुप में परिवर्तित होना आवश्यक है। यह जितनी

मात्रा में होता है उतनी ही मात्रा में ही आत्म विशुद्धि में वृद्धि, कोष्ठ बुद्धि आदि ऋद्धियों की प्राप्ति संभव है। सम्पूर्ण रुप से देह के शुद्ध प्रत्येक शरीरी वर्गणा बनने पर केवल ज्ञानोदय हो जाता है। यह सही है कि कोई व्यक्ति बाह्य में तो शाकाहार घटाये, उपवास आदि तप करे पर ज्ञानादि चतुष्टय रुप अन्तरंग आत्म वैभव के जागरण का मार्ग न जाने, उस पर न चलें तो शरीर क्षीण ही होगा, वह देह को बांदर निगोद वर्गणा से रहित प्रत्येक शरीर वर्गणा नहीं बना सकेगा

अन्तरंग बहिरंग, तप करते हुये मुनिजनों के देह क्षीण नहीं होती वरन् देह का रुपान्तरण होता चलता है, बादर निगोद राशि हटती चलती है और देह प्रत्येक वर्गणा बनती चलती है। केवली की देह कोटि पूर्वकाल तक अकवलाहारी रहते हुये प्रति समय जैसा पूर्व में कहा जा चुका है, चारों ओर व्याप्त सूक्ष्म आहार वर्गणा जगत से आहार ग्रहण कर रही है। नीचे के गुणस्थानवर्ती भी उस आहार वर्गणा जगत से अपनी देह का पोषण प्रति समय प्राप्त करते हैं जैन धर्म विग्रह गति को छोड़कर छद्मस्थ प्राणियों को प्रति समय आहारक मानते हैं। उपवास के दिन भी हम आहार को ग्रहण न करते हुये आहारक हैं, क्षीण कुछ तो उपवास से हम यह नहीं जानते कि हमें प्रति समय सूक्ष्म आहार वर्गणाओं का ग्रहण हो रहा है, हो जाते है और कुछ इससे कि वीर्याल्पता के कारण हमारी खर्च के अनुसार आमद नहीं हो पाती। मुनिजन ध्यान में अनन्त शक्तिमाला के अहसास से वीर्यान्तराय का क्षयोयशम करते जाते हैं और तपस्या से क्षीणता आने के स्थान पर कायबली बन जाते हैं कि उन्हें देव व दानव मिलकर भी हिला नहीं सकते। देह आत्मा न्यारी न्यारी, जहां सत्य का एक पक्ष है वहां वर्तमान में जल दूध की भांति एक हो रहे देह आत्मा की दो पटरियों पर ही आत्म विकास की गाड़ी चलती है। शाकाहार से ही पोषण को पोषण मानकर बादर निगोद राशि को अपने में रखती देह के साथ जीने वाला मानव रत्नत्रय की पूर्णता की तो बात ही छोड़े, ऋद्धि सम्पन्नता के पूर्व पड़ावों को भी प्राप्त नहीं कर सकता। मांसाहार करने वाले के तो रत्नत्रय का तिल-तुष मात्र भी जैन आचार्य स्वीकार नहीं करते और मद्य-मांस-मधु का त्याग पाक्षिक श्रावक के मूल गुणों में गिनते है। विवशता से शाकाहार करता रत्नत्रय धारी इसे सदोष मानकर ही स्वीकार करता है और क्रम क्रम से इसे लांघता हुआ एक दिन पूरा लांघ जाता है।

मांसाहार तीव्र कषाय है, शाकाहार मंद कषाय है और शाकाहार से परे आ जाना अकषाय है, वीतरागता है जिसके बिना कैवल्य प्राप्ति संभव नही, संसार से मुक्ति संभव नही।

रत्नत्रय की साधना से आत्मशोधन एवं उपवासादि तपों से देह शोधन कर मुनिजन केवल ज्ञानी परमात्मा बन जाते हैं, उनकी देह परमौदारिक, प्रत्येक शरीरी हो जाती है। मंजिल तक न पहुंच पाये तो वे बादर निगोद राशि से मुक्त वैक्रियिक देहधारी महर्धिक देव बन जाते हैं और पुनः मनुष्य बन मंजिल की शेष दूरी अपनी तप साधना द्वारा तय कर लेते हैं। जो जन शाकाहारी बने जीवन पूरा कर लेते हैं और रत्नत्रय की आराधना एवं तप साधना द्वारा देह एवं

आत्मा का शोधन नहीं करते वे बादर निगोद राशियुक्त मनुष्य तिर्यंच की देह में पुनर्जन्म कर भ्रमण करते रहते हैं। मांसाहारी का जीवन जीने वाले को पाप फल भोगने हेतु मानव तिर्यंच की बादर निगोद राशि वाली देह को प्राप्त न होकर नारकी की प्रत्येक शरीरी वैक्रियिक देह को अकेले दुख भोगने हेतु प्राप्त होती है। उनके पाप फल भोग में सहभागी बनने जितना साधारण निगोद जीव पाप नहीं करते। अपने पाप फल के अतिरेक को भोगकर फिर वे निगोद राशि युक्त मानव पशु की देह प्राप्त करते हैं।

मांसाहार मानव को दुख के गहरे गर्त में डालता है तो शाकाहारी भद्र जीवन भी दुख को नि:शेष करने में समर्थ नहीं है। इस हेतु मानव को इससे भी ऊपर उठना होगा। मांसाहार से मुक्त शाकाहारी जीवन भद्र संसारी की समतल भूमि जिसमें वह अन्यों को कम से कम कष्ट देकर अपना जीवन यापन करता है और साथ ही उसके परिणामों में अन्यों के प्रति सेवा का भाव उभरने का अवकाश होता है। इस प्रकार शाकाहार मानव के बीच सेवाभाव और पशुओं के प्रति दयाभाव की पौध को भूमि प्रदान करता है। रत्नत्रय की आराधना के साथ इसका एक देश त्याग समाज को मुनिजन प्रदान करता है और सम्पूर्ण त्याग परमौदारिक देहधारी अर्हन्त परमात्मा प्रदान करता है। अर्हन्त परमात्मा और मुनिजनों के अभाव में स्वस्थ मानव समाज की कल्पना संभव नहीं है। वे शाकाहारी भद्रजनों को शांतिमय लौकिक जीवन जीने की विधि बताते हैं तथा पारलौकिक हित की उसे प्रेरणा देते हैं और प्रयास किये बिना मानव जीवन पाना अर्थहीन हो जाता है।

जैन दर्शन के अनुसार एक छोर पर अनन्तानन्त साधारण जीव राशि नित्य एवं इतर निगोद की है, दूसरी ओर अनन्त सिद्धों की है। एक ओर महादुखी श्वास श्वास में 18 बार तक जन्म मरण करती जीव राशि है तो दूसरी ओर जन्म मरण से मुक्त परमात्म दशा है। निगोद से निकलकर जीव संसार राशि में प्रवेश करता है साधारण से प्रत्येक बनता है, स्थावर से त्रस बनता है, द्वीन्द्रिय से पंचेंद्रिय तक बनता है। सम्यग्दर्शन प्राप्त करता है, अपने प्रत्सगात्मन स्वरुप को पहचानता है और संसार शरीर भोगों की व्यर्थता को समझता है, सिद्ध दशा की प्राप्ति अपना लक्ष्य बनाता है, मानव देह मिलने पर तप संयम की साधना से सिद्ध दशा की प्राप्ति करता है। जो सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र रुप रत्नत्रय की आराधना से लक्ष्य पूर्ति नहीं कर पाते वे 2000 सागर के काल तक में वापिस लौटकर एकेन्द्रिय बन जाते हैं। ऐसा प्रत्येक संसारी अनेक ही बार अतीत में कर चुका है। परावर्तन के रुप में कर्मों की गणित का जैन शास्त्रों में विस्तार से वर्णन है जिसे पढ़कर संसार चक्र के क्लेशमय जाल के बीच से मानव मुक्ति पाने हेतु छटपटा उठता है। उसे इस जाल में फसाने वाले मिथ्यात्व, हिंसादि रुप अविरति और कषाय शत्रु लगने लगते हैं। वह मांसाहार ही क्या, शाकाहार भी क्रम क्रम से छोड़ने हेतु कमर कस लेता है और एक दिन प्रत्येक शरीर बन केवली परमात्मा बन जाता है। अब उसे पुन:

निगोद, एकेन्द्रिय आदि महान क्लेशमय हीन दशाओं को नहीं लोटना होगा, सदा सुखमय अमृत रस का परमात्मा रुप में पान करता रहेगा। क्या इस महान लाभ के आगे मांसाहार को सर्वथा छोड़ शनै: शनै: शाकाहार से भी ऊपर उठ जाना, उसे त्याग देना कोई कीमत का चुकारा है

एक बात और देव नारकी कवलाहार नहीं करते और उनकी देह आहार वर्गणाओं से योग द्वारा निर्मित होती चलती है। मानव देह भी बहुभाग उन्ही सूक्ष्म आहार वर्गणाओं से निर्मित होती है। शाकाहार द्वारा हम रह गयी कमी की पूर्ति करते हैं। यह कमी वीर्याल्पता के कारण है जो चक्रवर्ती तक में होती है। उसे भी कवलाहार करना होता है। जो महान वीर्यवान हो, जिनकी योगशाक्ति महान हो कि पूज्य आचार्य आदिसागर जी महाराज अंकलीकर की भांति 2 ½ किलो मावे का आहार कर हजम कर ले वही 7-8 दिन निराहार रहने की भी सामर्थ्य वाले होते हैं। सामर्थ्यवान, वीर्यवान लोग ही अंपने प्रति व अन्यों के प्रति न्याय कर पाते हैं, अन्यो के शोषण/हिंसा से स्वयं को बचा सकते हैं। सूक्ष्म आहार वर्गणायें सर्वजीव राशि की देह निर्माण हेतु प्रकृति के विधान में नियत हैं। योग द्वारों से उन्हें ग्रहण करें तो कोई द्रोष नहीं। पर्याप्त न कर पाये और कमी पूर्ति एकेन्द्रियादि का तन भक्षण कर करें तो यह अन्याय है और ज्ञानावरणादि कर्मबन्ध इसके परिणाम हैं। मांसाहार कर बड़े प्राणियों को हानि पहुंचायें तो उससे भारी पाप बन्ध रुप होना युक्तियुक्त है। हमारी दुर्बलता अन्यों को शोषण का हमें अधिकार नहीं देती। आज हम उनका शोषण करते हैं, कल वे बलवान होकर हमारा शोषण करेंगे और हम दुर्बलता हो जायेंगे। जैसे सचित्त जगत के प्रति न्याय का तकाजा है कि हम शाकाहार से भी ऊंचा उठें, अपनी सामर्थ्य बढ़ाये, अचित्त जगत के प्रति भी न्याय का तकाजा है कि हम उनका स्वामित्व छोड़ें, अपरिग्रही बनने की अपने में सामर्थ्य पैदा करें। यह सामर्थ्य हम क्रमश: ही पैदा कर सकते हैं, पर दिशा बोध तो हमें हो। निगोद परस्पराश्रय रुप सम्बन्धों का जगत है और सिद्धों का जगत पूरा स्वाश्रय का है। धर्म का मार्ग परस्पराश्रय कम करते हुए स्वाश्रय प्राप्त करने का है।



(पेज १० का) आरोग्यधाम आदि के रुप में अपनी सेवायें देने के लिए संकल्पित है। सिर्फ आवश्यकता है आपके भावनात्मक सहयोग की। हम सम्पूर्ण भारतवर्षीय जैन समाज से यह अपेक्षा करते हैं कि इस रचनात्मक, सृजनात्मक कार्य में आपका सहयोग मिलता है तो निश्चित अनेकान्त ज्ञान मंदिर का लक्ष्य अशेष अवश्य ही होगा।

मंदिरों एवं शास्त्र भण्डारों के व्यवस्थापकों से हमारी विनम्र अपील है कि जिन शास्त्रभण्डारों में हस्तलिखित ग्रन्थ उपेक्षित हैं व्यवस्थित करें और हमारे संस्थान को सूचित करें ताकि कार्यकर्त्तागण उस स्थल पर पहुंचकर ग्रन्थ सर्वेक्षण का कार्य पूर्ण कर सकें। जिनवाणी का संरक्षण-सम्वर्द्धन कीजिये और बुन्देलखण्ड के विशाल श्रुत भण्डार में अपना महनीय सहयोग कीजिये।

(शेष पृ. 50 का)

चित्रकार ने चित्र बड़ी चतुराई और होशियारी से कैमरे में पकड़ा है कि **सातों मुखों के संकेत स्पष्ट रुप से दिखाई दे जाते हैं पर पृष्ठ मुख का चित्र तो केमरे की पकड़ में आना संभव** ही नहीं है अत: तार्किक विद्वान इसे सप्तमुखी प्रतिमा भी कह सकते हैं, पर कला में तर्क की गुंजाइश बहुत ही थोड़ी रहती है। अस्तु प्रबुद्ध पाठक जो भी समझे पर केमरे की विवशता को तो समझना ही पड़ेगा। चित्र में दोनों दायें बायें ओर के अंतिम मुख की झलक केवल नाक और चिबुक (ठोडी) मात्र से ही मिल पाती है।

इस प्रतिमा के पाद पीठ पर अंकित तीन पंक्ति के लेख से इतना तो सुस्पष्ट रुप से प्रमाणित होता है कि इसकी विधिवत् पूजा प्रतिष्ठा हुई होगी और सामान्य जन इसकी ओर आकर्षित भी हुए होंगे पर जब प्रतिष्ठा पाठ के विशेषज्ञ पंडितों में इसके विधि विधान के विपरीत निर्माण के विषय में गंभीर ऊहापोह और चर्चा हुई होगी तो इसे अवैध करार दिया होगा और भविष्य में ऐसी प्रतिमाओं के निर्माण पर विराम चिन्ह एवं प्रतिबंध लग गये होंगे और अकेली यही एक प्रतिमा मूर्तिकला के इतिहास की अनूठी एवं अद्भुत प्रतिमा होकर रह गई। आज लोग इसके सौन्दर्य और कला वैभव को परखने और जांचने के लिए लालायित रहते हैं।

अंधकार में एक दीप - ब्र. श्री संदीप 'सरल'

✍ डॉ. नीलम जैन

डा. नीलम जैन ने श्री अनेकान्त ज्ञान मंदिर के संस्थापक ब्र. भैया श्री संदीप 'सरल' जी के सुवासित प्रेरक व्यक्तित्व एवं कृतित्व की अपूर्व झांकी यहां प्रस्तुत की है। वस्तुत: भैया संदीप जी श्रुत संरक्षण के पर्याय दृढ़संकल्पी, कर्मठ, युवा मनीषी, अदम्य साहस और अपूर्व उत्साह के धनी सभी के प्रेरणा स्रोत हैं। अपने दृढ़ संकल्प, अपूर्व लगन, अनवरत अथक प्रयास फलस्वरुप उन्होने आठ वर्षों के अल्प समय में ही सीमित साधनों के होते हुए भी अनेकान्त मंदिर को प्रगति की जिन ऊंचाईयों पर पहुंचाया, वह अकल्पनीय और सराहनीय है नि:सन्देह वे समाज के गौरव है।

मझला कद, गौर वर्ण, श्वेत वेशभूषा, वाणी में गांभीर्य, दृढ़ विचार शक्ति, आत्म विश्वास से भरपूर, कोमल, संवेदनशील हृदय, परंतु मुख मण्डल पर कुछ कर गुजरने का संकल्प, यथार्थ के ठोस धरातल पर दृढ़ता से रखे कदम यही है बाह्य स्वरुप उन युवा मनीषी, काल से भी आगे बढ़ते हुए आयु को बहुत पीछे धकेल कर, प्रौढ़ चिन्तन में दमदमाते ब्र. भैया संदीप 'सरल' जी का आज जिनका नाम जिनवाणी संरक्षक का पर्याय बन चुका है।

20 फरवरी 1992 को अपने परिश्रम, लगन, दृढ़ विचार शक्ति, कर्मठता और कबीरी

आध्यात्मिकता की बेवाक, निश्छल और मौलिक चिन्तन में विशिष्ट छवि को संजोये ब्र. श्री संदीप जी ने देश के कोने कोने में भ्रमण कर जिनवाणी मां की दुर्दशा और अस्त व्यस्तता पर अपनी करुणार्द्रता से सबको झकझोर दिया, भारतीय जातक ग्रंथों के अनुसार 20 फरवरी प्रायः फाल्गुन का प्रथम पक्ष होता है, यह धरती की सृजनात्मक शक्ति के उत्थान का समय है, पूरी सृष्टि में एक आनन्द छा जाता है, फूल खिल जाते हैं, पेड़ों पर सृजन का प्रतीक झलकने लगता है उनमें रस का नवसंचार होता है, क्या जलचर, क्या नभचर और क्या धरती पर रहने वाले प्राणी, घास, पेड़ पौधे सभी प्रफुल्लित होते हैं, नवान्न में दूध पड़ जाता है, सरसों खिल उठती है, मधुमक्खियां पराग संचय करने लगती हैं, ऐसे शुभ अवसर पर **''अनेकान्त ज्ञान मंदिर''** की स्थापना कर समाज को वह सब कुछ दिखाने, बताने, सिखाने का प्रयत्न किया, जिसकी ओर से समाज प्रायः उदासीन था। कहना न होगा **ब्र. भैया ने सीमित साधनों में अपनी साधना का दीप जलाकर धूप के उजालेपन के लिए खिड़की खोली जिससे जनसमुदाय को ज्ञात हो सके अनजाने ही हम अपनी उदासीनता और आगम से आत्मीयता के अभाव में अथवा जीर्ण शीर्ण होती जा रही प्राचीन ज्ञान संपदा के प्रति कर्तव्यविमुख होकर अपने पांव पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं अपने रत्नों को समुद्र में फेंक रहे हैं सचमुच अनेकान्त ज्ञान मंदिर की स्थापना हम सब के लिए शुभ संकेत है।**

ब्र. भैया ने ऐसी विकट और विषंम परिस्थिति में जब जागते हुओं को जगाने का श्रम साध्य कार्य करना था तब एक सुनियोजित योजना और आत्मविश्वास की पूंजी को एकत्र कर यह जाना और मन में ठाना कि इसके लिए एक जगह ठहर कर प्रगति नहीं होगी, वे घर-घर, गली-गली, द्वारे-द्वारे गये, अपनी वाणी से समाज को कटुसत्य से अवगत कराया कि जैन समाज की प्राचीनता, अस्मिता और रचना धार्मिता का सीधा सम्बन्ध इन्हीं शास्त्रों से है **ये हैं तो हम हैं शास्त्रों की सम्पदा का विनाश जैन संस्कृति और जैनत्व का विनाश है इसका संरक्षण हमारी अस्मिता का पोषण है।** सभी ने इस युवा बटुक की गुहार शांति से सुनी और समझी। यही कारण है कि सुदूर महाराष्ट्र, कर्नाटक से लेकर उत्तर भारत से उन्हें सभी प्रकार का सहयोग मिला है, मिलता रहेगा, उनका वर्तमान में किया जा रहा कार्य पीढ़ियों को सीढ़ियां चढ़ते समय बल और अदम्य साहस जुटायेगा, इनका कार्य समय सापेक्ष औचित्य अनौचित्य के रुप में यथार्थपरक युगबोध के साथ विद्यमान है जो सभी के लिए प्रकाश स्तम्भ है ऐसा प्रकाश स्तम्भ जिसमें गुण-ग्राहकता, शास्त्र भक्ति, समाज प्रेम, धर्म निष्ठता कर्तव्यबोध आदि की किरणें विकीर्ण हो रही हैं, इनके पास पूर्व संस्कारों की कड़ी धूप में तथा अनुभवों का विपुल भण्डार है वे जिनवाणी संरक्षण के लिए जितने व्यग्र हैं उतने ही स्थान स्थान पर अलमारियों में दीमक भोजन बनी सामग्री को देखकर दुःखी भी, उनकी पीड़ा हम सबकी पीड़ा है। हमारा भी कर्तव्य है कि हम अज्ञान अथवा अहंकारवश अभी भी सुप्त और तन्द्रालु दशा में हैं तो तत्काल

इस दु:स्थिति से बचना होगा, ब्र. भैया के आत्संघर्ष से हमें भी इतनी प्रेरणा तो लेनी ही चाहिए कि स्थानीय स्तर पर हम जितने शास्त्रों की सुरक्षा कर सकते हैं करें, न कर पा रहे हों तो भैयाजी को सौंप दें, तन, मन धन से हमारा सहयोग ऐसे समर्पित सार्वभौमिक ब्र. संदीप जी के लिए होना ही चाहिए। जिनवाणी की दशा हमारी ही दुर्दशा का संकेत दे रही है। हमें इस सच को समझना ही होगा और तत्काल सावधान होकर स्थिति परिवर्तन करना ही होगा। जिनवाणी संरक्षण की लगन प्रत्येक जन-जन के मन में उत्पन्न हो, वह यही प्रयास कर रहे हैं वे पाप-पुंण्य से नहीं डराते अपितु हितैषी बनकर, जिनवाणी शिशु बनकर चुपके से कान में कहते हैं और अपनी मधुरवाणी की प्रतिध्वनि छोड़ जाते हैं, एक जागरुक, संयमी और संवेदनशील परामर्शदाता के रुप में। इस क्रांतिकारी एवं पवित्र कार्य को सम्पन्न करने में अपने अन्दर रोशनी का एक बिन्दु लिए चारों ओर से शीशे के मार्ग पर चल रहे है इनकी यात्रा की यह जाह्नवी अविराम है उन्हें अपने इस आयोजन में न केवल सफलता ही मिली अपितु देश भर में उन्होने **जिनवाणी संरक्षण के प्रति ऐसी अलख जगाई कि अनेक स्थानों पर उनसे प्रेरणा लेकर श्रुत संवर्द्धन व संरक्षण का कार्य प्रारंभ हुआ है, जिनवाणी के प्रति उनकी अगाधश्रद्धा साधना और समर्पण युग युग में युग युग तक उनकी यश कीर्ति का सफल संवाहक रहेगा। अनेकान्त ज्ञान मंदिर में शास्त्र संरक्षण की शिल्पगत नवीनता, कल्पना-प्रवणता दर्शनीय है** अल्प समय में ही एक विशाल वटवृक्ष के सदृश अपनी घनी एवं शीतल छाया से अनेक बुद्धिजीवियों आगम-स्नेहियों को शांति, शीतलता एवं सृजन की प्रेरणा दे रहे हैं।

आज चतुर्दिक उन्हें सम्मान और प्यार मिलता है, उनके चिर युवा और क्रांतिकारी विचार कार्य करने और कराने की पद्धति युवा दिलों में उमंगे भर देते हैं, पग पग पर वे युवा शक्ति को प्रोत्साहन और मार्गदर्शन देते हैं उन्होंने जो पथ निर्मित किया, उस पर कारवाँ बढ़ता ही जा रहा है। जो चिंगारी उन्होने अंधेरे रास्तों में हमें दिखाई है वह धीरे धीरे दिया बनकर हमारा मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। उनके सुवासित प्रेरक व्यक्तित्व को निम्न पंक्तियों में व्यक्त करना समीचीन होगा -

चल पड़ा कोई तो रास्ता बन गया।
पहल की उसने तो कारवाँ बन गया।
उम्र भर वो अंधेरे में चलता रहा।
दूसरों के लिए पर दिया बन गया।

बुन्देलखण्ड को ही नहीं, समस्त भारत की जैन समाज को अपने इस सौम्य, सहज, सरल, स्वभाव के धनी सपूत पर वस्तुत: गर्व है।

अनेकान्त ज्ञान मंदिर में कतिपय विशिष्ट अप्रकाशित ग्रंथ

ब्र. संदीप सरल

यह सर्वविदित है कि समूचे भारतवर्ष में हमारे शास्त्र भण्डार जैनागम से समृद्ध हैं। आज मुद्रण युग में हस्त लिखित ग्रंथों की घोर उपेक्षा हो रही है, सैकड़ों ग्रंथ तो असूर्यम्पश्य हैं और काल कोठियों में बंद होकर अपनी जीवन-लीला समाप्त कर रहे हैं, ऐसे विषम संक्रांति के क्षणों में प्राचीन विलुप्त पाण्डुलिपियों के संकलन, संरक्षण, संवर्द्धन एवं प्रचार-प्रसार की दृष्टि से अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना को केन्द्र बनाकर अनेक आचार्यों मुनिराजों के पावन आशीष से एवं अनेक जिनवाणी सपूतों के परम सहयोग से 24 मार्च 1995 की पावन सुप्रभात की मंगल बेला में "शास्त्रोद्धार, शास्त्र-सुरक्षा अभियान" का प्रणयन किया गया।

अभियान के अन्तर्गत देश के लगभग दस प्रांत के लगभग 300 शास्त्र भण्डारों में ग्रंथ सर्वेक्षण का कार्य संपन्न किया गया। 30-12-99 तक अभियान के 69 दौरों के माध्यम से 5,500 हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को संकलित किया जा चुका है। इन बहुमूल्य पाण्डुलिपियों में अनुक पाण्डुलिपियां अप्रकाशित हैं, जिनका प्रस्तावना सहित संपादन, प्रकाशन ज्ञान अन्वेषण का महत् कार्य अपेक्षित है। प्रस्तुत लेख में श्री सहस्त्रकूट चैत्यालय सोनीजी की नसियां अजमेर से प्राप्त 1300 हस्तलिखित पाण्डुलिपियों से कतिपय विशिष्ट 40 अप्रकाशित पाण्डुलिपियों की सूची संलग्न की जा रही है इसके पूर्व अनेकान्त दर्पण प्रवेशांक 99 में 42 अप्रकाशित ग्रन्थों की सूची प्रकाशित की गई थी। विद्वानों से यह अपेक्षा की जाती है कि इन पाण्डुलिपियों के संपादन हेतु अपना मानस बनायें। अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्था बीना में विद्वानों के आवास-प्रवास, भोजन आदि का समुचित प्रबंध किया गया। हम विद्वानों से यह अपेक्षा करेंगे कि जो भी विद्वान अप्रकाशित ग्रन्थों के सम्पादन, अनुवाद आदि का कार्य करने के इच्छुक हैं वे संस्था से सम्पर्क स्थापित करें।

क्र.	ग्रन्थ भण्डार क्र.	ग्रन्थ का नाम	लेखक का नाम	भाषा
1.	3508	प्रायश्चित समुच्चय	नंदिगुरु	संस्कृत
2.	3534	मंत्र महोदधि	महीधर	संस्कृत
3.	3605	सिंहासन द्वात्रिंशतिका		संस्कृत
4.	3661	जैन तत्वादर्श	पं. चिमनलाल	संस्कृत
5.	3672	प्रतिष्ठायंत्र सचित्र		संस्कृत
6.	3735	भुवन दीपक	हेमप्रभसूरि	संस्कृत
7.	3960	मनमोहन पंचशती	आनंदघन	हिन्दी
8.	4034	सार चतुर्विंशतिका	--	संस्कृत
9.	4036	सुख निधान	पं. जगन्नाथ	संस्कृत
10.	4081	चन्द्रोन्मीलन	--	संस्कृत
11.	4082	मरकत विलास	मरकत कवि	हिन्दी
12.	4084	जिनसंहिता	एक संधि आचार्य	संस्कृत
13.	4159	अरिष्टाध्याय		प्राकृत
14.	4168	अध्यात्म तरंगनि	आचार्य सोमदेव	संस्कृत
15.	4247	सभातरंग	-------	संस्कृत
16.	4249	जिनमुखावलोकन		संस्कृत
17.	4255	व्रतकथाकोश	भट्टारक देवेन्द्र कीर्ति	संस्कृत
18.	4263	व्रतसार		प्राकृत
19.	4279	होलधूलिपर्व चरित्र	पं. जिनदास	संस्कृत

लिपिकाल सम्वत्	प्राप्ति स्थल का नाम	पृष्ठ	आकार ल.xचौ. प्र.पृ.पं.	पूर्ण/अपूर्ण
	श्री सहस्रकूट चैत्यालय, अजमेर	90	23 x 14.13	पूर्ण
1941	,, ,,	172	30 x 10.12	,,
1792	,, ,,	53		,,
--	,, ,,	19	23x14.13	,,
1626	,, ,,	38	16x30	,,
1986	,, ,,	43	23x12.13	,,
1956	,, ,,	65	22x13.13	,,
1910	,, ,,	162	18x10.11	,,
1870	,, ,,	46	20x11.12	,,
---	,, ,,	27	23x13.13	,,
1988	,, ,,	205	22x14.14	,,
----	,, ,,	115	23x14.13	,,
-----	,, ,,	24	22x15.8	,,
-----	,, ,,	49	21x13.13	,,
-----	,, ,,	41	22x10.13	,,
1831	,, ,,	241	21x8.10	,,
1893	,, ,,	89	26x10.13	,,
----	,, ,,	86	18x8.7	,,
1802	,, ,,	24	25x10.15	,,

20.	4281	ऋषभनाथ पुराण	भट्टा.सकलकीर्ति	संस्कृत
21.	4284	शीलविलास	शुभचन्द्राचार्य	संस्कृत
22.	4300	सप्तव्यसन कथासार	आ. सोमकीर्ति	संस्कृत
23.	4362	सम्मेदाचल मार्ग गमन कथा	पं. गिरधारीलाल	हिन्दी
24.	4369	जयपुर मंदिर जिनयात्रा वर्णन	पं. गिरधारी लाल	हिन्दी
25.	4399	शांति पुराण	असग कवि	संस्कृत
26.	4426	भाव संग्रह	वामदेव	प्राकृत
27.	4488	प्रीतंकर चरित्र	ब्र. नेमीदत्त	संस्कृत
28.	3518	विद्यानुशासन	------	संस्कृत
29.	3519	सम्यक्त्वप्रकाश	पं. डालूराम	हिन्दी
30.	3530	बाजीकरण		हिन्दी
31.	3551	चम्पाशतक	पं. चम्पालाल	हिन्दी
32.	3600	श्रावककर्म	--	संस्कृत
33.	3626	दर्शनसार वचनिका	पं. शिवजीलाल	हिन्दी
34.	3652	पाक्षिक श्रावकचंन्द्रिका	मरकत रक्त	हिन्दी
35.	3724	माणिकविलास	माणिकलाल	हिन्दी
36.	3790	आनंद वर्द्धन	पं. जौहरीलाल	हिन्दी
37.	3794	सूर्यप्रज्ञप्ति		प्राकृत
38.	3795	चन्द्रप्रज्ञप्ति	मलयागिरि	प्राकृत
39.	3854	जैनागार शुद्धाम्नाय प्रक्रिया	पं. दुलीचंद जैन	हिन्दी
40.	4011	पूजासार समुच्चय	इन्द्रनंदी	संस्कृत

1807	श्री सहस्रकूट चैत्यालय, अजमेर		169	23x11.13	पूर्ण
----	”	”	36	19x8.10	”
1526	”	”	76	26x9.11	”
1907	”	”	6	26x11.13	”
1900	”	”	2	26x11.13	”
1862	”	”	75	26x9.11	”
1760	”	”	16	25x9.15	”
1710	”	”	25	20x11.11	”
-----	”	”	312	23x15.13	”
1946	”	”	152	24x15.13	”
----	”	”	10	24x9.12	”
----	”	”	39		”
--	”	”	83	17x8.12	”
1923	”	”	94		”
1987	”	”	78	25x13.13	”
1983	”	”	29	23x15.13	”
---	”	”	27	21x9.8	”
1932	”	”	35	21x7.11	”
1932	”	”	200	19x9.12	”
1966	”	”	72	22x13.13	”
1933	”	”	103	20x9.10	”

भ. चन्द्रप्रभु की अष्टमुखी अद्‍भुत प्रतिमा

कुन्दनलाल जैन

कुन्दकुन्द भारती, दिल्ली में भ. चन्द्रप्रभ की अष्टमुखी प्रतिमा के चित्र (फोटो) को देखकर लेखक बड़े विस्मित और प्रसन्न हुए। उसी चित्र के आधार पर उस प्रतिमा का यहां परिचय कराया गया है। भारत में निर्मित होते हुए भी यह प्रतिमा वर्तमान में ब्रिटिश म्यूजियम लन्दन में विद्यमान है।

भारत की मूर्तिकला संसार की बेजोड़ विशिष्ट कला में जगत प्रसिद्ध है, यहां के मूर्तिकारों ने अपनी छैनी हथोड़ी से जो अनुपम और अद्‍भुत कलाकृतियां उकेरी हैं, उनसे विश्व के कला जगत में उनकी ख्याति स्वर्णाक्षरों में अंकित है यहां हम ऐसी ही एक अद्‍भुत कलापूर्ण प्रतिमा का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं, जो जिन प्रतिमा है, भारत में बनी, गढ़ी एवं उकेरी गई पर आज भारतवर्ष में विद्यमान नहीं है और लगता है यह प्रतिमा अपने ढ़ंग की एक अनूठी और अकेली ही कलाकृति है, ऐसी अन्य कोई दूसरी प्रतिमा का विवरण कहीं भी पढ़ने, सुनने या देखने को नहीं मिला है, इसके कुछ चित्र अवश्य भारत की प्रमुख जैन संस्थओं में विद्यमान हैं यथा भारतीय ज्ञान पीठ तथा कुन्द कुन्द भारती दिल्ली आदि।

एक दिन **कुन्द कुन्द भारती दिल्ली में** बैठा था कि अकस्मात् इस **अद्‍भुत कलाकृति के चित्र के दर्शन हुए,** चित्र बड़ा आकर्षक और लेखयुक्त है अत: विशिष्ट जिज्ञासा जागी पर समयाभाव वश उस समय उसका गंभीर बारीक अध्ययन नहीं कर सका फलत: दूसरीबार केवल इसी निमित्त ही वहां जाने का संयोग बना और यह टिप्पण लिखने का संयोग जुटा, सौभाग्य से एकान्त मिल गया और किसी तरह की बाधा व्यवधान न होने से मनोयोग पूर्वक चित्र का गंभीर अध्ययन कर सका, पर मूल प्रतिमा की प्रामाणिक कला कहां तक सिद्ध हो सकेगी यह बहुत कुछ संदेहास्पद है। काश कि, मूल कला कृति के दर्शन हो पाते तो हर्ष की सीमा न रहती।

यद्यपि ऐसी प्रतिमा जैन प्रतिमा विज्ञान के विधि, विधान एवं नियम, उपनियमों के अनुकूल नहीं है फिर भी शिल्पी कलाकार की छैनी हथोड़ी को कौन बंधन में बांध सका है अत: उस सिर फिरे कलाकार ने एक अनुकृति तो बना ही दी जो आज कला प्रेमियों के आकर्षण का केन्द्र बन रही है और खास तौर से विदेशी कलाप्रेमी विद्वान इसकी सुन्दरता और निर्माणकला से प्रभावित हो इसे भारत से उठाकर विदेश में ले गये और यह **कलाकृति आजकल ब्रिटिश म्यूजियम लंदन की शोभा बढ़ा रही है** और अपनी विचित्रता एवं अजूबेपन से कलाप्रेमियों को आकर्षित कर रही है।

जैन प्रतिमा विज्ञान के विधि विधानानुसार तीर्थंकर का शरीर सम चतुरस्र संस्थान संहनन होता है फलत: एक शरीर पर एक ही मुख तथा नियमानुसार अन्य अंग उपांग उत्कीर्णित होना

चाहिए पर सिर फिरे उस कलाकार ने एक सिर पर आठ मुख उतीर्णित कर जैन विधि, विधान की उपेक्षा तो की ही पर ऐसा प्रतीत होता है कि कलाकार जैन इतिहास के स्वामी समन्तभद्र प्रकरण से इतना अधिक अभिभूत दिखाई देता है कि उसने जो कुछ पढ़ा सुना और वाराणसी के राजा के शिवकोटि के शिवालय में जंजीरों से बंधी शिवपिंडी से स्वामी समंतभद्र द्वारा चन्द्रप्रभं चंद्र मरीचि गौरं चन्द्रं द्वितीयं जगतीव कान्तम्....... आदि शीर्षक स्तुतिपाठ से भ. चन्द्रप्रभु की सुन्दर धवल प्रतिमा के प्रकटित होने संबंधी प्रकरण ने कलाकार को इतने अधिक गहरे तक झकझोर दिया हो कि वह ऐसी सुन्दर कलाकृति को गढ़ने के लिए विवश हो गया हो और सारे विधि विधान ताक में रख दिये हों।

प्रतिमा को मूलरुप से न देख पाने से **चित्ररुप में जो कुछ देख सका और समझ सका तदनुरुप ही वर्णन प्रस्तुत है।** चित्र के अनुमान से लगता है प्रतिमा पद्मासन मुद्रा में विराजमान है और इसकी ऊंचाई लगभग 60-70 से.मी. ऊंची लगती है तथा चौड़ाई 30-40 से.मी. चौड़ी अनुमानित की जा सकती है। छाती पर वत्स चिन्ह उत्कीर्णित है। नीचे पाद पीठ पर बीचों बीच अर्द्ध चन्द्र का चिन्ह चमक रहा है जो भ. चन्द्रप्रभु का लांछन है। साथ में तीन पंक्तियों का मूर्ति लेख भी उत्कीर्णित है जो चित्र में पढ़ा नहीं जाता संभवत: मूल प्रतिमा में पढ़ा जा सके, यदि किसी कृपालु पाठक का लंदन से कुछ संपर्क हो तो ब्रिटिश म्यूजियम के केट्लाग (Catalogue) से या वहां के किसी रिकार्ड से इस मूर्ति लेख का पूर्ण परिचय प्राप्त किया जा सकता है, और वे सज्जन सर्व जन हिताय भारतीय जिज्ञासुओं को उस परिचय से अवगत कराने का कष्ट करें।

उपर्युक्त चित्र के लेख से जो कुछ समझ सका वह निम्न प्रकार है :-

लेख के प्रारंभ में संवत् 1436 या 1426 जैसा पढ़ा जाता है पर कई लोगों का कहना है कि 14 की जगह 11 का अंक पढ़ा जाता है इस तरह 14 और 11 के अंकों से कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता है, **प्रतिमा मध्यकाल की मूर्तिकला का एक विशिष्ट नमूना है।** आगे 'सुध' शब्द पढ़ा जाता है जो सुदी या शुक्ल पक्ष का निर्देश करता है, बाकी शब्दावली बड़ा यत्न करने पर भी पकड़ नहीं आ सकी, सूक्ष्म वीक्षण यंत्र का बार बार प्रयोग करने पर भी सुस्पष्ट रुप से बाकी पंक्तियां पढ़ी नहीं जा सकीं। इन पंक्तियों में निश्चय ही महीने का नाम, प्रतिष्ठाचार्य, प्रतिष्ठा कराने वाले तथा उसके पारिवारिक जन, मूर्ति निर्माता, प्रतिष्ठा का स्थान, वहां के शासक आदि बहुत से महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्य छिपे पड़े हैं।

इस मूर्ति की निर्माण तकनीक खजुराहों, महोबा या देवगढ़ (उ.प्र.) की मूर्तिकला की तकनीक से मिलती जुलती है। आंख नाक मुख तथा भावभंगिमा आदि सभी वैशिष्ट्य इसी क्षेत्र की मूर्तिकला जैसी सुन्दर सौम्य और आकर्षक है। इस प्रतिमा के अष्ट मुखों से आगे पीछे के दो मूल मुख स्पष्ट रुप से उकेरे गये हैं पर पृष्ठ मुख चित्र में स्पषट रुप से नहीं देखा जा सकता है बाकी छ: मुखों में से तीन मुख दाहिनी ओर और तीन मुख बायीं ओर उकेरे गये हैं।

(शेष पृ. 51 पर)

आचार्य चाणक्य का धर्म

✍ डा. (श्रीमती) कुसुम पटोरिया

कतिपय इतिहास विज्ञों द्वारा चाणक्य और कौटिल्य को एक ही व्यक्ति मान लिए जाने से इतिहास जगत में यह भ्रान्ति हो गई है कि चाणक्य जैन धर्मानुयायी नहीं हो सकता। विदुषी लेखिका डा. श्रीमती कुसुम पटोरिया जी ने विभिन्न इतिहास विशारदों उनके शोधग्रन्थों, प्राचीन एवं आधुनिक देशी विदेशी विद्वानों तथा अनेक ग्रन्थों के साक्ष्यों के आधार पर सप्रमाण सिद्ध किया है कि चाणक्य और कौटिल्य दोनों पृथक थे। चाणक्य चन्द्रगुप्त मौर्य था और कौटिल्य अर्थशास्त्र का रचयिता एक परवर्ती लेखक था। कौटिल्य जिसका अपरनाम चित्रगुप्त था, ईसा की तीसरी शताब्दी में हुआ था जबकि चाणक्य ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में। दोनों के बीच लगभग छह वर्षों का अन्तराल रहा है। अत: चाणक्य को जैन धर्मानुयायी मानने में कोई सन्देह नहीं है। चन्द्रगुप्त को जैनधर्म की ओर उन्मुख करने का श्रेय भी चाणक्य को ही है।

आचार्य चाणक्य के विषय में अनेक शोध निबन्ध प्रकाशित हो चुके हैं। मुनि न्यायविजयजी का ''चाणक्य एंड हिज धर्म'' प्रो.सी.डी. चटर्जी का ''अर्ली लाइफ ऑफ चन्द्रगुप्त मौर्य'', डा. ज्योतिप्रसाद जैन के ''द जैन सोर्सेज आफ द लाइफ स्टोरी आफ चन्द्रगुप्त चाणक्य'', ''चन्द्रगुप्त एंड चाणक्य'' तथा ''भारतीय इतिहास एक दृष्टि'' नामक पुस्तक बाबू कामता प्रसाद जैन की पुस्तक द रिलीजन आफ तीर्थंकराज आदि में विस्तार से यह प्रतिपादित किया है कि श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों परम्परायें इस विषय पर एकमत हैं कि चाणक्य जैन धर्मानुयायी माता-पिता की संतान और स्वयं आजीवन जैन धर्मानुयायी था। उनका अन्त भी जैन आचार्य के रुप में समाधिमरण से हुआ था। मुनि महेन्द्रकुमार प्रथम ने जैन स्रोतों से पुन: इसका प्रतिपादन किया है।

चन्द्रगुप्त जैसे प्रथम भारतीय ऐतिहासिक सम्राट पर डा. राधाकुमुद मुकर्जी के स्वतंत्र प्रामाणिक ग्रंथ के पश्चात् डा. श्रीराम गोयल का चन्द्रगुप्त मौर्य ग्रंथ प्रकाशित हुआ है, जो नवीनतम शोधों से सम्पन्न है। चन्द्रगुप्त को यद्यपि इतिहासकारों ने जैन स्वीकार किया है, तथापि कुछ इतिहासकारों को अर्थशास्त्र के आधार पर चन्द्रगुप्त को जैन मानने में कठिनाई प्रतीत होती थी। चाणक्य को जैन मानने में भी यही विरोध प्रतीत होता है। आधुनिक शोध से यह बात स्पष्ट हुई कि चाणक्य और कौटिल्य भिन्न व्यक्ति थे। अत: अर्थशास्त्र की बाधा भी दूर हो जाती है। इस निबन्ध में उसी का विवेचन है।

जैन अनुश्रुतियां निर्विवाद रुप से चन्द्रगुप्त व चाणक्य को जैन मानती हैं। चाणक्य को जात्या ब्राह्मण व पारम्परिक जैन कुल में उत्पन्न मानती हैं। जैन धर्म की ओर चन्द्रगुप्त को उन्मुख करने का श्रेय भी चाणक्य को देती हैं। पुण्यास्रव कथाकोश में चन्द्रगुप्त के बहुत काल तक राज्य करने के पश्चात बिन्दुसार को राज्य देकर चाणक्य के साथ दीक्षा ग्रहण करने का उल्लेख है।

डा. काशीप्रसाद जायसवाल लिखते हैं कि मैं ऐसा कोई कारण नहीं देखता कि हम जैनों के इस दावे को क्यों स्वीकार नहीं कर लें कि चन्द्रगुप्त जैन मुनि के रुप में दिवंगत हुआ था। डा. राधाकुमुद मुकर्जी भी लिखते हैं कि इस बात को कि चन्द्रगुप्त ने जैन धर्म अंगीकार कर लिया था, सभी जैन लेखकों ने बिना शंका या विरोध की आवश्यकता के स्वीकार किया है, और इस खंडन करने वाला कोई प्रमाण नहीं मिलता। नंदवंश के राजाओं के शासनकाल में जिनका झुकाव जैन मत की ओर था और जिनके दरबार में जैन मंत्री थे, जैनमत का वातावरण पाटलिपुत्र में व्याप्त हो चुका था। इसलिए इस बात को सच मान लिया जाय कि चन्द्रगुप्त ने अपने जीवन के अंतिम दिन श्रवणबेलगोल में व्यतीत किये थे।

विसेंट स्मिथ का मत है कि केवल जैन ग्रंथों में व्यक्त किये गये मत से ही यह बात समझ में आती है कि चन्द्रगुप्त ने अचानक ऐसे समय पर राजसिंहासन क्यों त्याग दिया, जब इसकी अवस्था भी बहुत नहीं थी, और वह अपनी सत्ता के शिखर पर था। वे लिखते है कि मैं यह विश्वास करने को तैयार हूं कि... चन्द्रगुप्त ने वास्तव में ही राज्य त्याग दिया था और वह जैन साधु हो गया था। लुइस राइस, एडवर्ड टामस, याकौची आदि सभी प्राचीन व आधुनिक विद्वान चन्द्रगुप्त को जैन मानते हैं। चन्द्रगुप्त को जैन न मानने वालों में फ्लीट व बी.आर. रामचन्द्र दीक्षितार प्रमुख हैं। उनके सन्देह का कारण कौटिल्य का अर्थशास्त्र है।

चाणक्य और कौटिल्य का पृथक व्यक्तित्व :-

दीक्षितार के अनुसार अर्थशास्त्र का प्रणेता कौटिल्य चन्द्रगुप्त का मंत्री था और अर्थशास्त्र में अवैदिक सम्प्रदायों का तिरस्कार किया गया है। अत: चन्द्रगुप्त को जैन कहा जाना संदिग्ध है, परन्तु मौर्य युगीन इतिहास के विशेष अनुसंधाता डा. श्रीराम गोयल ने जैन ग्रंथों में चर्चित चाणक्य को ही चन्द्रगुप्त मौर्य का मंत्री माना है, उसे अर्थशास्त्र के प्रणेता कौटिल्य से भिन्न सिद्ध किया है।

जैन व बौद्ध ग्रंथों में चाणक्य को चन्द्रगुप्त मौर्य का गुरु एवं महामंत्री कहा गया है। अर्थशास्त्र के अनुसार ग्रंथ का रचयिता कौटिल्य है, जिसका दूसरा नाम विष्णुगुप्त था। इसी ग्रंथ के अंत में कहा गया है कि विष्णुगुप्त ने नन्दों के चंगुल में फंसी पृथ्वी का उद्धार किया। उसी से परवर्ती युग में कौटिल्य व चाणक्य की एकता का भ्रम पल्लवित हुआ होगा।

चाणक्य और कौटिल्य की पृथकता का अनुमान सर्वप्रथम डा. हर्मन याकोबी ने किया। अन्य पाश्चात्य विद्वानों ने भी इन दोनों की भिन्नता को तर्कसहित सिद्ध करने के प्रयास किये हैं, उनके अनुसार चाणक्य चन्द्रगुप्त मौर्य का महामंत्री था और कौटिल्य अर्थशास्त्र का रचयिता परवर्ती लेखक।

चाणक्य और कौटिल्य को पृथक मानने का प्रमुख कारण उसका रचनाकाल है। अर्थशास्त्र की रचना तीसरी शताब्दी के अन्तिम वर्षों में हुई सिद्ध होती है। जबकि चन्द्रगुप्त के गुरु व मंत्रीं का काल ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी है। अर्थात् दोनों में छह सौ वर्ष का अन्तर है। चाणक्य और कौटिल्य के भिन्न व्यक्तित्व की सिद्धी के लिए अर्थशास्त्र का रचनाकाल एक महत्वपूर्ण प्रमाण है। कौटिल्य को चाणक्य समझने की भ्रान्ति का आधार - अर्थशास्त्र का यह श्लोक है -

येन शास्त्रं च शस्त्रं च नन्दराजगता च भूः।
अमर्षेणोद्धृतान्याशु तेन शास्त्रमिदं कृतम् ॥
दृष्ट्वा विप्रतिपत्ति बहुधा शास्त्रेषु भालकाराणां।
स्वयमेव विष्णुगुप्तश्चकार सूत्रं च भाष्यं च ॥

अर्थशास्त्र का परीक्षण उसे मौर्यकालीन रचना सिद्ध नहीं करता, यह श्लोक गुप्तकाल में जोड़ा गया है। इसका स्वरुप भी प्रक्षिप्त ही लगता है - कौटिल्य स्वयं अर्थशास्त्र के प्रणेता हैं, फिर उनका यह कथन कि जिसने शास्त्र, शस्त्र व नन्दराज के अधीन पृथ्वी का उद्धार किया, उसने इस शास्त्र की रचना की चिन्त्य है। उत्तरार्द्ध में स्वयं भाष्य की रचना का उद्देश्य स्पष्ट किया है। यदि चाणक्य ही कौटिल्य होता, और मौर्य काल में उसने अर्थशास्त्र की रचना की होती, तो उसे यह सब कहने की आवश्यकता नहीं होती।

छठी शताब्दी के कवि दण्डी ने दशकुमारचरित में और आठवीं शताब्दी में कामन्दकं ने अपने नीतिसार में आचार्य विष्णुगुप्त को चाणक्य समझने की भूल की। इस प्रकार विष्णुगुप्त, चाणक्य व कौटिल्य एक ही व्यक्ति समझ लिए गए।

अन्तरंग और बहिरंग साक्ष्यों से अर्थशास्त्र गुप्तकालीन रचना सिद्ध होती है।

1. मेगास्थनीज ने इण्डिका में राज्य व समाज का जो चित्र दिया है, वह अर्थशास्त्र से भिन्न है। मेगस्थनीज के अनुसार पाटलिपुत्र काष्ठप्राचीर से सुरक्षित था, जबकि अर्थशास्त्र के अनुसार काष्ठ-प्राचीर नहीं बनानी चाहिए, क्योंकि इसमें आग लग जाने का भय रहता है। अर्थशास्त्र में वर्णित धातुविज्ञान मेस्थनीज के देखे हुए धातुविज्ञान से अधिक विकसित है। मेगस्थनीज के अनुसार युद्धकाल में सेनाएं किसानों और खेतों को कोई हानि नहीं पहुंचाती, जबकि कौटिल्य इस प्रकार के विध्वंस को उचित ठहराता है। मेगस्थानीज भारत में लेखनकला का अभाव पाता है, जबकि कौटिल्य के अनुसार राज्य का कार्य लिखित शासनों से होता है। इनकी चर्चा कीथ आदि विद्वानों ने विस्तार से की है।

आर.एस.एस. शर्मा व अन्य कई विद्वानों के अनुसार कौटिलीय प्रशासन-व्यवस्था अशोकीय प्रशासन-व्यवस्था से बहुत भिन्न है। अशोक युग के बहुत से विशिष्ट पदाधिकारी महामात्र, राजुक प्रादेशिक, प्रतिवेदक आदि अर्थशास्त्र में अज्ञात हैं। अर्थशास्त्र के भोग, विष्टि, प्रणय, परिहार जैसे प्रशासनिक शब्द तथा सन्निधाता, समाहर्ता जैसे पदाधिकारी अशोकीय अभिलेखों में अज्ञात है। सातवाहन व गुप्त अभिलेखों का स्कन्धावार अर्थशास्त्र में भी महत्वपूर्ण है। प्राङ्मौर्य युग में महामात्र राज्य के उच्चपदस्थ कर्मचारी हुआ करते थे। पालि-ग्रंथों के अनुसार वे मन्त्री, सेनानायक, न्यायाधीश, गणक, अन्त:पुराध्यक्ष आदि पदों पर कार्य करते थे। अशोक के काल में इनके कार्यक्षेत्र और बढ़े पर सातवाहन युग में महामात्र का महत्व घटने लगा, उसका स्थान असात्य पद ने ले लिया। छठी-सातवीं शताब्दी तक महामात्र केवल हाथियों के निरीक्षक रह गये। यह प्रमाणित करता है कि कौटिलीय अर्थशास्त्र की रचना अशोक के बाद और हर्ष के पूर्व हुई होगी, क्योंकि अर्थशास्त्र में उच्च पदाधिकारी का नाम अमात्य है, महामात्र नहीं। अर्थशास्त्र का सामाजिक संगठन भी उसे मौर्योत्तरयुगीन रचना प्रमाणित करता है। इसमें समाज के आर्य-म्लेच्छ तथा आर्य व दास जैसे विभाजन किये गये हैं। म्लेच्छों को ही दास बनाने का निर्देश है। मौर्यकाल में विदेशी म्लेच्छों की इतनी संख्या संभव नहीं थी।

अर्थशास्त्र में राजशब्दोपजीवी संघों में लिच्छिवियों का उल्लेख हुआ है। ईसा पूर्व छठी शताब्दी में भ. महावीर और बुद्ध के काल में लिच्छिवियों का गणराज्य था, परंतु फिर शिशुनाम-वंश के राजाओं द्वारा ये गणराज्य मगध-साम्राज्य में मिला लिये गये। इनका पुन: संघ के रुप में अस्तित्व गुप्तकाल में ही दिखाई देता है, अत: कौटिलीय अर्थशास्त्र की ही रचना होनी चाहिए

राजशब्दोपजीवी संघों में कौटिल्य ने भद्रकों की गणना है, भद्रक जाति के गणराज्य का उल्लेख समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति में है। इसी प्रकार अर्थशास्त्र में उल्लिखित प्राज्जूर्णक जाति का उल्लेख भी समुद्र गुप्त की प्रयाग प्रशस्ति में है।

अर्थशास्त्र में वर्णित भौगोलिक ज्ञान भी परवर्ती है। सिंहल का प्राचीन नाम ताम्रपर्णि था, अर्थशास्त्र में इसे पारसमुद्रक कहा गया है। जो परवर्ती नाम है। चीनभूमि से आने वाले चीनपट्ट का उल्लेख भी मौर्ययुग में संभव नहीं है। कम्बु आदि उल्लेख भी कौटिल्य के भौगोलिक ज्ञान को जितना विस्तृत प्रमाणित करते हैं, उतना वह प्रारम्भिक मौर्य युग में संभव नहीं है। अर्थशास्त्र शासनपत्रों में तिथि देते समय, वर्ष, माह, पक्ष व दिन का उल्लेख करने का निर्देश देता है, परंतु अशोक शिलालेखों में इसका अनुसरण नहीं है। अर्थशास्त्र में राजकीय भाषा का पद संस्कृत को दिया गया है, जबकि अशोक के अभिलेख हों, या पूर्व के खारवेल अथवा पश्चिमी सातवाहनों के क्षहरात क्षत्रपों के सभी प्राकृत में है। संस्कृत को राजकीय भाषा के रुप में पूर्ण प्रतिष्ठा गुप्तकाल में ही मिली। अर्थशास्त्र में मौर्ययुगीन राजविरुदों का उल्लेख नहीं होता। अर्थशास्त्र लिखे जाने तक भारत में कृषिशास्त्र, वास्तुकला, रसायन शास्त्र, धातुशास्त्र,

खनिजशास्त्र, वनस्पति शास्त्र आदि विषयों पर प्रचुर साहित्य की रचना हो चुकी थी। अर्थशास्त्र में सुरंग तथा परिस्तोम आदि जैसे यूनानी शब्दों का प्रयोग भी चतुर्थ शती ई.पू. संभव नहीं है। एक तर्क यह भी है कि अर्थशास्त्र का प्रशासन एक लघु राज्य की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु है, चन्द्रगुप्त मौर्य के बृहत्तर भारत जैसे साम्राज्य को ध्यान में रखकर नहीं लिखा गया।

विद्वानों ने अर्थशास्त्र को गुप्तकालीन रचना बताने के लिए जो तर्क दिये हैं, उक्त विवेचन उनका सार है।

इन सारे तथ्यों के अलावा बहि:साक्ष्यों से भी अर्थशास्त्र तीसरी शताब्दी की रचना सिद्ध होता है। अर्थशास्त्र गुप्तयुगीन रचना है, क्योंकि किसी भी प्राक् गुप्तकालीन ग्रन्थ में कौटिलीय अर्थशास्त्र का उल्लेख नहीं मिलता। इसका प्राचीनतम उल्लेख जैनों के नन्दिसूत्र (5 वीं शताब्दी) तथा दण्डी के दशकुमारचरित (छठी शताब्दी) में हैं। फ्राक्गुप्तयुगीन साहित्य में शुक्र, बृहस्पति, मनु, पाराशर, भारद्वाज, विशालाक्ष, पिशून, वातव्यापि बहुदन्तिपुत्र, कौणपदन्त तथा पाराशर का अनेकत्र उल्लेख है। ध्यातव्य है इन्हें कौटिल्य ने अपने पूर्ववर्ती आचार्यों के रुप में उल्लिखित किया है। अश्वघोष का बुद्धचरित, वात्स्यायन का कामसूत्र तथा भास का प्रतिमा नाटक आदि अर्थशास्त्र के आचार्य के रुप में बृहस्पति का ही उल्लेख करते हैं। गुप्तकाल और उसके बाद यह सम्मान कौटिल्य को मिलने लगता है।

कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में भास के दो श्लोक उद्धृत किये हैं। इससे निश्चित है कि कौटिल्य भास से परवर्ती है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र की रचना वात्स्यायन के कामसूत्र के पश्चात हुई होगी। वात्स्यायन और अर्थशास्त्र में कई समानताएं हैं, परन्तु वात्स्यायन ने अर्थशास्त्र के आचार्य रुप में बृहस्पति को ही उद्धृत किया है, अत: कौटिल्य उनसे कुछ परवर्ती रहे होंगे

कौटिल्य को मौर्य युग में रखने में अनेक कठिनाईयां हैं, चाणक्य और कौटिल्य को भिन्न मानने में वे कठिनाईयां दूर हो जाती है। साथ ही बौद्ध, जैन व ब्राह्मण साहित्य में सबल रुप से चर्चित चन्द्रगुप्त मौर्य के गुरु व महामंत्री चाणक्य की ऐतिहासिकता बनी रहती है।

चन्द्रगुप्त और चाणक्य के सभी प्रारंभिक उल्लेखों में चन्द्रगुप्त के गुरु का नाम चाणक्य मिलता है, कौटिल्य या विष्णुगुप्त नहीं। संस्कृत में चाणक्य-कथा का प्राचीनतम उल्लेख शूद्रक के मृच्छकटिक नामक नाट्यग्रंथ में मिलता है। यह चाणक्य मृच्छकटिक की रचना के समय तक ऐतिहासिकपात्र हो चुका था। इसमें चाणक्य के कौटिल्य नाम या अर्थशास्त्र का उल्लेख नहीं है। नन्दिसुत नामक जैन ग्रंथ में चाणक्य बुद्धिमता के यहीं अन्य स्थान पर कौटिल्य अर्थशास्त्र के रचयिता के रुप में उल्लिखित है। इससे स्पष्ट है कि नन्दिसुत में दोनों दो भिन्न व्यक्ति माने गये है। अन्यत्र भी कहीं प्राचीन जैन साहित्य में चन्द्रगुप्त मौर्य के मंत्री चाणक्य या अर्थशास्त्र का प्रणेता नहीं कहा गया है। बहुचर्चित गुणादय की बृहत्कथा पर आधारित संस्कृत ग्रंथों में चाणक्य चन्द्रगुप्त की कथा है, पर उसे कौटिल्य या विष्णुगुप्त नहीं कहा गया है। पालि ग्रंथों में भी चाणक्य और कौटिल्य भिन्न संदर्भों में उल्लिखित हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्राचीन ग्रंथ चन्द्रगुप्त के गुरु को केवल चाणक्य नाम से जानते हैं वे इससे परिचित नहीं है कि उसने कोई अर्थशास्त्र का ग्रंथ लिखा। कौटिल्य चाणक्य के पांच छह सौ वर्ष बाद का लेखक था। चाणक्य की व्यवहारिक कूटनीतिज्ञता और कौटिल्य की सैद्धांतिक

कूटनीतिज्ञता प्रसिद्ध है। इसी आधार पर उनका एकीकरण कर दिया गया होगा।

कौटिल्य और चाणक्य को पृथक सिद्ध करने वाला पुष्ट प्रमाण उनका धार्मिक व्यक्तित्व है। अर्थशास्त्र का रचयिता कौटिल्य निश्चित रुप से वैदिक धर्म का अनुयायी था। भगवती आराधना में उल्लिखित दृष्टांतों पर लिखे गये आराधना कोशों में चाणक्य की कथा विस्तार से है। उनके अनुसार वह जैन परिवार में उत्पन्न हुआ था। जाति से ब्राह्मण था। बौद्ध ग्रंथों में भी ऐसी कोई बात नहीं मिलती, जिससे उसके जैन होने में विरोध हो। डा. ज्योतिप्रसाद जैन, मुनि महेन्द्रकुमार प्रथम आदि ने चाणक्य के जैन होने की पुष्टि की है। कौटिल्य और चाणक्य का पार्थक्य प्रमाणित होने पर दीक्षितार का यह तर्क कि अर्थशास्त्र को देखते हुए चन्द्रगुप्त जैन नहीं हो सकता, निर्बल हो जाता है।

पूर्वी भारत में श्रमण परम्परा का प्राचीन काल से अस्तित्व :-

चाणक्य और चन्द्रगुप्त की जैन धर्म में रुचि स्वाभाविक ही थी, क्योंकि भारतवर्ष का यह प्राच्य खण्ड जिसमें मगध, विदेह, अंग, बंग, कलिंग आदि जनपद सम्मिलित थे, बहुत समय तक वैदिक सभ्यता, संस्कृति व धर्म से अछूते रहे हैं। प्रागैतिहासिक काल से वे वातरशना, अर्हत, व्रात्य निर्गत्य आदि नामों से अभिमत श्रमण तीर्थंकरों के अनुयायी रहे हैं। यही कारण है कि मगध साम्राज्य के ऐतिहासिक महत्व के होते हुए भी प्राचीन ब्राह्मणीय साहित्य व अनुश्रुतियों में मगध और मगधवासियों की निन्दा, भर्त्सना, तिरस्कार एवं उपेक्षा ही प्राप्त होती है। ऋग्वेद में इसे कीकटों का देश कहा गया है। इन्द्र से इन लोगों के पूर्व दिशा में स्थित प्रदेश को अपनी हुंकार से करने की प्रार्थना की गई है। मैं ज्वरनाशनदेव से मगध देश के निवासियों को ज्वर से पीड़ित करने की प्रार्थना की गई है। यहीं बताया गया है कि प्रात्यों का प्रिय धाम प्राची दिशा है। उनकी श्रद्धा पुंश्चली व मित्र मगध है। श्रोतसूत्रों व स्मृतिग्रंथों में भी मगध को हेय दृष्टि से देखा गया है उसे पाप भूमि समझा गया है। उन्हें अयज्वर, अन्यव्रत आदि शब्दों से सम्बोधित किया गया है

महाभारतोत्तर काल में श्रमण धर्म के पुररुत्थान आन्दोलन का प्रधान केन्द्र भी मगध ही रहा और उसके बाद लगभग दो हजार वर्ष पर्यन्त इस प्रदेश को प्रमुख गढ़ रहने का सौभाग्य प्राप्त रहा। 22 तीर्थंकरों की निर्वाण-भूमियां बिहार प्रान्त में हैं। मौर्य वंश के पूर्व नन्द वंश और उससे पूर्व शिशुनाग वंशी सम्राट भी व्रात्य अर्थात जैन क्षत्रिय थे। नंद वंशी राजा और उनके मंत्री भी जैन धर्मानुयायी थे, यह पहले कह चुके हैं। नन्दों का जैन होना खारवेल के शिलालेख से प्रमाणित है।

सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य ने भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास में जिस अखिल भारतीय साम्राज्य की स्थापना की थी, बृहत्तर भारत का वह मानचित्र विश्व के पटल पर फिर नहीं उभरा। बृहत्तर भारत को एक सूत्र में आबद्ध करने वाले और उसके द्वारा परोक्ष रुप में राष्ट्रीय एकता को आकार देने वाले सम्राट के रुप में चन्द्रगुप्त मौर्य का नाम भारतीय इतिहास में अमिट है। यही सम्राट जीवन की संध्या में अहिंसा का पूर्णप्रतिपालक बना। इसका जीवन उनके लिए उत्तर है, जो अहिंसा को अव्यवहारिक व देश को दुर्बल बनाने वाली कहते हैं।

सात समंदर पार - जैन साहित्य

ब्र. संदीप 'सरल'

भगवान महावीर स्वामी एवं गौतम गणधर जी द्वारा प्राप्त भावश्रुत ज्ञान का आलम्बन बनाकर हमारे आरातीय आचार्यों, मनीषियों ने न केवल आध्यात्मिक, सैद्धांतिक शास्त्रों की रचना की अपितु कर्मवाद, नीतिवाद, काव्य, अलंकार-छन्दशास्त्र, व्याकरण, ज्योतिष, निमित्तशास्त्र, आयुर्वेद, खगोल, भूगोल एवं गणित आदि विषयक साहित्य का सृजन कर जैन दर्शन को विश्वदर्शन का गौरव दिलाया।

सोने की चिड़िया के नाम से प्रसिद्ध इस पवित्र भूमि पर समय समय पर विश्व के विभिन्न देशों के सैकड़ों यात्री आये और हमारी साहित्यक सम्पदा को "सात समंदर उस पार" विदेश ले गये। विदेशी लोग कितने ग्रन्थ अपने साथ ले गये इसकी सही गणना तो नहीं की जा सकती है फिर भी विभिन्न स्रोतों के आधार पर एकत्रित सामग्री को प्रस्तुत किया जा रहा है इतने मात्र से ही हम अनुमान लगा सकते हैं कि हमारे पूर्वजों ने कितना श्रम करके साहित्य सृजन विपुल मात्रा में किया किन्तु हम उसको सुरक्षित भी नहीं कर पाये।

विक्रम की ५वीं शताब्दी में चीनी यात्री फाह्यान भारत आया और विभिन्न शास्त्र भण्डारों से १५२० ताड़पत्र पर लिखी पाण्डुलिपियां ले गया। विक्रम की ७वीं शताब्दी में चीनी यात्री हुएनसांग प्रथमबार १५५० ग्रन्थ एवं दूसरी बार २१७५ ग्रन्थ ले गया। तदुपरांत सन् ४६४ के आसपास २५५० ताड़पत्र पाण्डुलिपियां ले गया।

जर्मनी में लगभग ५००० पुस्तकालय हैं। इनमें से बर्लिन स्थित एक पुस्तकालय में लगभग १२००० हस्तलिखित ग्रन्थों की गणना है उसमें से बहुतायत जैन ग्रन्थ हैं और ये सब भारत से गये हुए हैं। अमेरिका के वाशिंगटन और बेस्टन नगर में पांच सौ से अधिक पुस्तकालय हैं। उनमें से एक पुस्तकालय में भारत से ले जाये गये लगभग २०,००० ग्रन्थ हैं और बहुत से जैन ग्रन्थ भी हैं।

लंदन शहर के पुस्तकालय में १५०० हस्तलिखित ग्रन्थ हैं जिनमें से अधिकतर जैन दर्शन से सम्बन्धित हैं। फ्रांस में ११०० से अधिक पुस्तकालय हैं जिनमें से पेरिस स्थित बिब्लियोथिक नामक पुस्तकालय में १२००० ग्रन्थ प्राकृत, संस्कृत से सम्बन्धित हैं। रुस में १५०० पुस्तकालय हैं उनमें से एक राष्ट्रीय पुस्तकालय में २२००० ग्रन्थ भारत से गये हुए प्राकृत एवं संस्कृत भाषा के हैं। इटली में लगभग ४५०० पुस्तकालय हैं। उनमें से एक पुस्तकालय में लगभग ६०००० पुस्तकें प्राकृत एवं संस्कृत आदि भाषाओं की हैं और भारत से गई हुई हैं।

आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी के पंचास्तिकाय ग्रन्थ का फारसी अनुवाद हुआ था। वह

आज भारत में उपलब्ध नहीं है किन्तु विदेशों में सुरक्षित है। सम्राट अमोघवर्ष (राष्ट्र कूट नरेश) रचित प्रश्नोत्तर रत्न मालिका का तिब्बती अनुवाद हुआ। आचार्य शर्ववर्म प्रणीत कातन्त्र व्याकरण का भोट भाषा में अनुवाद एवं उसी पर २७ प्रकार की टीकाएं लिखी गई तथा भूटान, तिब्बत, वर्मा एवं श्रीलंका में आजकल भी उनका अध्ययन होता है। आज गन्धहस्तिमहाभाष्य जैसे अनुपम, अद्वितीय ग्रन्थ के अस्तित्व का भी यूरोप के किसी भण्डार में रहने का संकेत मिल रहा है। जैन न्याय के विद्यानंद महोदय, जल्प निर्णय, त्रिलक्षणकदर्शन, वादन्याय, प्रमाण संग्रह भाष्य आदि अनेक ग्रन्थों के नामोल्लेख सिर्फ ग्रन्थों में ही पढ़ते हैं सम्भव है कि ऐसे अनेक ग्रन्थराज विदेशों में मिल सकते हैं।

इस लेख के माध्यम से मेरा निवेदन उन विद्वानों एवं भट्टारकों से है जो कि धर्म प्रभावनार्थ विदेश जाते है उधर पर स्थित लाइब्रेरियों के कैटलाग निकलवाकर लायें एवं उनमें स्थित जैन पाण्डुलिपियों का सर्वे कराया जावे। हमारे बहुत से भारतीय विदेशों में बसे हुए हैं उनके सम्बन्धियों से भी हमारा यही निवेदन है कि अपनी संस्कृति के उत्थान हेतु उनका सहयोग होना चाहिए।

मुझे बड़े खिन्न मन से लिखना पड़ रहा है कि हमारी धनाढ्य, धनिक समाज अपने द्रव्य का सदुपयोग इस प्रकार के सृजनात्मक कार्यों में न लगाकर प्रदर्शन वाह्याडम्बर में लगा रही है। हमें शिक्षा लेनी चाहिए ईरान, ईराक, तिब्बत, श्रीलंका, वर्मा, भूटान, यूनान, मिश्र और चीन आदि देशों से कि इन्होने प्राच्यपाण्डुलिपियों के सर्वेक्षण एवं उनके प्रकाशन में कितनी अभिरुचि ली है और ले रहे हैं और एक हम देव, शास्त्र और गुरु की जय बोलते हुए और जिनवाणी को जगत जननी मां कहते हुए भी उसकी दुर्दशा को शांत चित्त से देख रहे हैं। हमें जागृत होकर इन शास्त्र भण्डारों की अक्षय निधि-प्रामाणिक अक्षय भण्डार के रुप में सुरक्षित करने के लिए सम्पूर्ण उपेक्षावृत्ति के कारण दीमक, चूहे एवं मौसम का दुष्प्रभाव इन भण्डारों की ज्ञान निधि को समाप्त कर देगा और हम मातृविहीन रह जायेंगे।

२१वीं सदी की यह दस्तक है कि अपनी श्रमण संस्कृति के अभ्युदय में उत्थान में कुछ पग तो बढ़ायें वरन् हमारी आगामी पीढ़ी हमें क्षमा नहीं करेगी।

जिनवाणी जिनदेव से रो-रो कहत पुकार।
हमें छोड़ तुम शिव गये कर कुपात्र आधार ॥

अनेकान्त ज्ञान मंदिर की बहुमूल्य धरोहर सचित्र रविव्रत कथा

✍ कुन्दनलाल जैन

यहां के अनेकान्त ज्ञान मंदिर के संग्रहण में समाविष्ट पं. गंगादास विरचित, सिरोंज (विदिशा) से प्राप्त "सचित्र रविव्रत कथा" का सम्पूर्ण परिचय विद्वान लेखक ने पाण्डुलिपि की बड़ी गहराई से छानबीन कर यहां प्रस्तुत किया है। पाण्डुलिपि के पन्नों की संख्या पद्यों की संख्या, चित्रों की संख्या, चित्रों का परिचय आदि देने के साथ-साथ रचयिता का परिचय व स्थान तथा अन्य कृतियां रविव्रत कथा का रचनाकाल तथा स्थान का भी बोध कराया है। अन्त में कृति अनुसार सम्पूर्ण कथा प्रस्तुत की गई है।

प्रस्तुत रविवार व्रत कथा साहित्यिक दृष्टि से एक बहुत ही सामान्य सी पारम्परिक छोटी सी कथाकृति मात्र है जो 16 पत्रों (32 पृष्ठों) में लिखी गई है पर इसकी महत्ता इसके साथ अंकित कथा संबंधी चित्रों से बहुत अधिक बढ़ गई है जो इतने थोड़े से स्थान में चित्रित है। इन चित्रों की कुल संख्या 72 है, किसी पृष्ठ पर दो किसी पृष्ठ पर तीन तथा किसी पर चार चार चित्र तक चित्रित हैं। इस तरह कुल 32 पृष्ठों पर 72 चित्रों की चित्रकारी अपने आप में विस्मयकारी और अद्‌भुत है। चित्रों के रंग बड़े चरकीले और अति सुन्दर एवं मनोहरी हैं। मुख्यतया लाल, पीले, काले और सफेद रंगो का प्रयोग किया गया है। इन चित्रों का कलाकार कौन है इसका पता नहीं चल सका है पर अनुमानित किया जाता है कि देवगढ़ (महाराष्ट्र) वासी कोई कुशल कलाकार ही हो सकता है जिसने अपनी कला पूर्ण तूलिका से ऐसे कलापूर्ण अनूठे सुन्दर चित्र चित्रित किए हैं। चित्र युगल शैली से मिलते जुलते हैं। पुरुषों और महिलाओं की वेश भूषा तथा पहिनावा गुजराती परिधान में परिवेष्टित हैं। पुरुषों की पगड़ी और अंगरखा गुजराती जैसे प्रतीत होते हैं। सेना में बहुत से सैनिकों की टोपी तुर्की टोपी जैसी टोपी पहिनाई गई है। महिलाओं के वस्त्राभूषण सभी राजस्थानी और गुजराती जैसे प्रतीत होते हैं। चेहरे मोहरे बड़े सुन्दर लगते हैं आंख, नाक, कान आदि का चित्रण सभी आनुपातिक ढंग से मनोहारी रुप में चित्रण हुआ है। राजा, श्रेष्ठी आदि सभी आभिजात्य वर्ग के लोगों के गले लंबी लंबी मुक्ता मालाओं से सुशोभित हैं जो उनके वैभव को प्रदर्शित करते हैं। महिलाओं में घूंघट आदि परदा प्रथा का कहीं भी अंकन दिखाई नहीं देता है। सभी चित्र अति सुन्दर और आकर्षक और मन को लुभाने वाले अति मनोरम दिखाई देते हैं। इनमें से लगभग 11-12 चित्र "अनेकान्त दर्पण" के प्रवेशांक के मुख पृष्ठ पर अंकित हैं जिनके सौन्दर्य और Setting की सुन्दर व्यवस्था से ही इस प्रति के महत्व का पता चल जाता है।

यह प्रति वर्तमान में अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना की बहुमूल्य धरोहर है, जो ब्र.

संदीप जी को पाण्डुलिपियों के संग्रहण में सिरोंज (विदिशा) से प्राप्त हुई है। यह प्रति कारंजा के पास देवगढ़ नामक राज्य से मूल रुप से संबंधित है पर सिरोंज तक की लंबी यात्रा कैसे हुई, इसका व्याख्याता कोई चिन्ह कहीं नहीं मिलता है। लगता है सिरोंज का कोई भव्य श्रावक कारंजा प्रदेश तरफ की यात्रा पर निकला हो और वहां से व्रताराधन हेतु समूल्य या निःशुल्क ले आया हो या वहां का कोई व्यक्ति इधर आजीविका हेतु आया हो और इसे बेच गया हो। जो भी हो प्रति अति महत्वपूर्ण है। इस प्रति के 10-12 चित्र अनेकान्त दर्पण के प्रवेशांक के मुख पृष्ठ पर प्रकाशित हो चुके हैं जो अति सुन्दर और आकर्षक हैं, इसके लिए ब्र. संदीप जी बधाई के पात्र हैं शेष 60-62 चित्रों को भी प्रकाशित कराकर सुरक्षित रखने का प्रयास करना चाहिए। समय के फेर से इन पर शीत, गर्मी, वर्षा का प्रभाव पड़ने लगा है और ये चित्र फीके पड़ने लगे हैं। अतः ब्र.संदीप जी इनकी सुरक्षा का उपाय ढूंढ़ें, वैज्ञानिक साधन प्रचुर मात्रा में आविष्कृत हो चुके हैं, किसी उदार चेता सुशिक्षित व्यक्ति के सहयोग की ब्रह्मचारी जी को अपेक्षा है।

अब रचना और प्रति विवरण के लिए भी पाठक उत्सुक होंगे। अतः उसकी चर्चा भी प्रस्तुत करता हूं। इस कृति की रचना पं. गंगादास जी ने की है, इसके अतिरिक्त पं. गंगादास की 6-7 कृतियां और उपलब्ध हैं यथा :- (1) मेरुपूजा (2) पार्श्वनाथ भवान्तर (3) क्षेत्रपाल पूजा (4) सम्मेदाचल पूजा (5) त्रेपन क्रिया विनती (6) जटामुकुट कथा और प्रस्तुत (7) रविव्रत कथा। प्रस्तुत कृति रविव्रत कथा के 16 पत्र (32 पृष्ठ) जो तत्कालीन हाथ के बने मोटे मजबूत कागज पर लिखित हैं और चित्रित हैं। इस प्रति की लंबाई 20 से.मी. तथा चौड़ाई 16 1/2 से.मी. है, प्रत्येक पत्र पर 16-16 पंक्तियां हैं तथा प्रत्येक पंक्ति में अक्षरों की संख्या 30-35 है।

पं. गंगादास बलात्कार गण की कारंजा भट्टारक पीठ के विशिष्ट भट्टारक श्री धर्मचन्द्र जी के शिष्य थे, जो कारंजा पीठ के नौवें भट्टारक धर्मचन्द्र उनके शिष्य धर्म भूषण, उनके शिष्य विशाल कीर्ति और उनके शिष्य धर्मचन्द्र थे जिनकी कृपा से पं. गंगादास इस कृति का निर्माणकर सके यथा :-

मूल संघ मतिवंत महंत, धर्मचंद सुखर अतिसंत।
तस पद कमल दल अति रसकूप, धर्मभूषण पद शेवे (सेवे) भूप। 101।
विशाल कीर्ति विमल गुणजाण, जिन सासन पंकज प्रकट्यो भान।
तत पद कमल दिल मित्र, धर्मचंद घृतधर्म्म पवित्र ॥ 111 ॥
तेहनो पंडित गंगादास, कथाकरी भवियण उल्लास ।

इस कृति की रचना कारंजा नगर के चन्दनाथ मंदिर में हुई थी और रचनाकाल आषाढ़ मास काद्धि रविवार शाके 16-15 तदनुसार सं. 1750 में हुई थी यथा :-

देश विराड विषय संणगार, कारंजा मध्ये गुणसार।
चन्द्रनाथ मंदिर सुखकंद, भव्य कुसुम यासन वरचंद ॥ 110 ॥

शकल सोला सत पन्नर सार, सुदी आषाढ़ निज रविवार। 112

कारंजा नगर को कार्यरंजकपुर, कारंजकपुर, कारंजकपुर, कारंजे आदि कई नामों से साहित्य में उल्लेख मिलते हैं। यह नगर मध्यप्रदेश के बरार नामक प्रान्त में अवस्थित था अब बदलकर महाराष्ट्र का प्रसिद्ध नगर हो गया है, जहां प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की बहुलता है।

इस प्रति का प्रति लेखन देवगढ़ नगर में ब्रह्मचारी रतन ने स्वयं पढ़ने के लिए तथा राजेन्द्र कीर्ति भट्टारक के अध्ययनार्थ चैत्र सुदी 12 सं. 1820 को किया था। इस देवगढ़ की जान पहचान भी पाठकों को प्रस्तुत करने की आवश्यकता है भ्रान्ति वश पाठक ललितपुर (उ.प्र.) के पास वाले देवगढ़ को न समझ बैठें। प्रस्तुत प्रति का लेखन देवगढ़ में चैत्र सुदी 12 सं. 1820 में हुआ था यह नगर कारंजा के पास स्थित छोटी सी स्टेट की राजधानी था और अपने समय में खूब समृद्ध और सम्पन्न नगर था। यहां सं. 1774 से शाके 1639 में महाराजाधिराज महारावल श्री पृथ्वीसिंह का शासन विद्यमान था। इस समय उनके पुत्र कुंवर श्री पहाड़सिंह यहां विराजमान थे, इनसे २४ वर्ष पूर्व पं. गंगादास ने कारंजा में अपनी कृतियों का निर्माण किया था। श्री पहाड़सिंह के समय देवगढ़ में वर्षावत संघवी ने श्री मल्लिनाथ भगवान के मंदिर की प्रतिष्ठा कराई थी, इसी मंदिर में बैठकर भट्टारक हेम कीर्ति ने रामटेक छंग नामक छोटी सी रचना रची थी, ये भट्टारक बलात्कार गणकी लातूरशाखा के पांचवें भट्टारक थे इन्हीं भट्टारक धर्मचंद्र के समय कारंजा पीठ का विभाजन होकर लातूर पीठ नाम से एक अन्य शाखा की स्थापना होकर प्रसिद्धि हुई थी।

अध्ययनों से पता चला है कि देवगढ़ राज्य मराठा राज्य तथा निजाम राज्य की सीमावर्ती स्थलों में छोटा सा राज्य था, जिसकी राजधानी देवगढ़ नामकनगर से प्रसिद्ध थी। अनेकान्त दर्पण के मुख पृष्ठ पर प्रकाशित कुछ चित्रों का विवरण निम्नप्रकार है। (1) पाठशाला का दृश्य ऊपर पंडित जी पुस्तक दे रहे हैं नीचे श्रेष्ठी कुंवर कलम दवात से लिखना सीख रहा है साथ में श्रेष्ठी मतिसागर छंद 9 से 12। (2) ऊपर श्रेष्ठी मतिसागर के दो पुत्र बगल में सेठानी गुणसुंदरी छंद 4 से 8। (3) दोज यस्वनी श्वेत धवला धेनुएं एक बछड़े को दूध पिला रही है दूसरे का दुग्ध दोहन श्राविका घड़े में कर रही है पहली श्राविका गाय के गले में पड़ी रस्सी पकड़े हुए (4) श्रेष्ठी मतिसागर के सातपुत्र तथा पुत्र वधुएं। (5) महज में जिन बिंव की स्थपना एक श्रेष्ठी कुंवर जिनबिंब की वंदना स्तुति में मग्न है दूसरा भट्टारक जी से प्रवचन सुन रहा है। (6) राजा गुणधार के साथ अपनी पुत्री चन्द्रोपक के विवाह के दृश्य (A) मंगल दस कलश 5 + 5 = 10 और हवन कुण्ड में हव्य सामग्री डालते हुए (B) श्राविकाएं मंगलाचार करती हुई। (C) मंगल वाद्य वादन नगाड़ा तुरही, वादक आदि (7) राजा चतुरंग सेना दहेज में देते हुए (A) हाथी घोड़ा आदि सवारियां सैनिकों के साथ (B) बहनी (बैलगाड़ी) घोड़ा और सैनिक आदि (8) देवड़ा (देवालय) भ.पार्श्वनाथ के साथ अन्य चार प्रतिमाएं (9) ऊपर नवविवाहित वधू चन्द्रोपक

तथा पुत्र गुणधर माता (सासु) को श्रीफल भेंट कर सम्मान और शुभाशी पाने की मुद्रा में। नीचे श्रेष्ठी मतिसागर तथा पुत्र गुणधर तथा सेठानी गुणसुंदरी और पुत्र वधू चन्द्रोपक (10) (a) भट्टारक जी श्रेष्ठी युगल को उपदेश देते हुए। (b) भट्टारक जी श्रेष्ठी पुत्र और पुत्र वधू को जिनबिंब को हाथ में लेकर दर्शन कराते हुए। मूल कथा साथ में संलग्न है।

सचित्र रविव्रत कथा

ॐ नमः अथ आदित्यवार कथा लिख्यते -:
प्रणमूँ पास जिनेसर राय सेवतां सुख संपत थाय।
बंदु वरदायक सारदा सद् गुरु चरन कमल युग सदा ॥१॥
कथा कहुं रविवारज तणी पूर्व ग्रंथ पुराणे जिममणी।
एक चित्त सुणै सामलै तेहतो दुख दालिद्र हरले ॥ २॥
सोहे सुंदर कासी देस पुर पट्टण सु अभिनव वेस।
वाणारसी नगरी तिहां सार जाणूं स्वर्ग पुरी अवतार ॥ ३॥
प्रजा पाले ते नगरे राय पूजे श्री जिनवरना पाय।
निपुण न्याय मारग आचरे प्रजा तणौ प्रतिपाल्ज करै ॥ ४॥
मति सागर श्रेष्ठी तिहां भलो सुंदर सकल कला गुण निलो।
भावशुद्ध शुभव्रत आचरै सहगुरु भक्ति भली परि करै ॥ ५॥
कोटि धण तेह साह सुजाण निज कुल पंकज प्रगटयो भान।
गुण सुंदरी तेह ने घर सती रुपे जाणे रंभा रती ॥ ६॥
सात पुत्र तेहने घर हवा जाणे देव कुंवर अभिनवा।
प्रथम पुंत्र गुणवानज कहयो बीज्यो सत गुणराजस लह्यो ॥ ७॥
त्रीजो सुत गुणदेव महंत, गुणकर चौथो बलिवंत ॥
पंचम सुत गुणदसज भलो छठो गुणजी सुत निर्मलो ॥ ८॥
ऐ (छै) पुत्र परिणया अतिचंग भोग विलास करै मनरंग।
ससम गुणधर सुंदर रुप बुधवंत वचनामृत कूप ॥ ९॥
बीज चंदसम बाधै बाल शुभलक्षण अंगे सुकमाल।
सात बरसनो कुंवर जो भयो सहु कुटुंब मन हरषत भयो ॥ १०॥
शुभ मुहूर्त जोड़ शुभ दिने मणता मुक्यो पंडित कन्है।
एकादश वारासहि सार अंकगणितनो लाधे पार ॥ ११॥
व्याकरणादिक भण्यो बहु ज्योतिष (क) रत्न परिष्या (क्षा) सहु।
हार नेत्र ने कर पल्लवी सर्वकला सीख्यो अभिनवी ॥ १२॥

थोड़ा दिन माहीं मणि घणौ ए फल सहु पूरव भव तणो।
पूर्वे दीज्यो शास्त्रज दान तेहथी एहवो पाम्यो थान ॥ १३ ॥
शास्त्र दान कीजे इमजान जेह थी लहिये विद्यावान।
ए कथा ए स्थानक रही अवर कथा सां भज्यौ सही ॥ १४ ॥
सहस्रकूट चैत्यालयौ जिहां गुणसागर मुनि आव्या तिहां।
सुणी हरष पाम्यो नरनाथ वंदन चाल्यौ पुरजन साथ ॥ १५ ॥
तीन प्रदक्षिणा देई राय पूज्या श्री जिनवरना पाय।
धर्मवृद्धि सुनी बोल्या बाण सांभलता उपजे सुषखाण ॥ १६ ॥
मुनिवरसै धर्मामृतु धार, यति श्रावक नो धर्म विचार।
रत्नत्रय राखो हितकार, दशलक्षण यति धर्म सु सार ॥ १७ ॥
क्रिया त्रिपण करयो व्रतचंग, जेह थी पाम्यो सौख्य अभंग।
मुनिवर वचन सांभलै सहु, अनिन्द्या मन मध्ये बहु ॥ १८ ॥
छबिहरी साथे गुणवती, मुनिवर ने से की धी वीनती।
को इक व्रत आपो गुणवंत जेहथी लहिये सौख्य अनंत ॥ १९ ॥
तब मुनिवर आये रविवार, श्रीजिन पार्श्वतणो मनुहार।
मास आषाढ़ थी कीजीये अथवा श्रावण थी लीजीये ॥ २० ॥
शुक्ल पक्ष अंतिम रवि दिने, निहा थी स्नेह कीजे नव सुभ भने।
प्रथम नव वरस प्रोषध सार, लवण रहित आंवल सुक्क आहार ॥ २१ ॥
एकल ठाणो त्रीजेकरो, कांजी आहार चोथ आचरो।
पंचमे वरसे तक्र सुभात, वे लवण एकासणो विख्यात ॥ २२ ॥
निगोरस कीजे सातमो, लूषो आहार करो आठमो।
नवमे एकासणो वरवान, उत्कृष्ट पणे ए विधजाण ॥ २३ ॥
नव वरस कीजे मनुहार, अथवा सहु उपवास उदार।
अथवा एक लवाणो सहु करो, अथवा एक भक्ति आचरो ॥ २४ ॥
अपंर भेद कहूं ते सणो, ए सधली विधि लागट भणो।
एक्यासी रविवार विशाल, कीजै भावधारे सुकुमाल ॥ २५ ॥
कणक तजा फल एक साथ, उवालो भावियण निज हाथ।
नारिकेल आगे फल सार, नव फल आणो अति सुख कार। २६ ॥
नव श्रावक घर दीजेदान, प्रतिवर्षे ए विधि परिमाण।
तेह दीने भवीयण आचरो, क्षमा युक्त कोमल मन धरो ॥ २७ ॥
भोले भावे सत्य भाषीये, संजय सौच पणो राखीये।

तप कीजै चौविधि दान दीजिये, पात्रकरी सन्मान ॥ २८ ॥
संख्या व्रत शक्त्यानुसार, ब्रम्हचर्य पाल्यो भवतार।
विकथा तजी जिन स्तुति तणो, स्थिर चित्त नव कारज तणो ॥ २९ ॥
पारणे पात्र दान दीजिये ये नव वरसांइ णेपर कीजी।
व्रत पूरे उद्यापन करो नहिं तो वि (द्वि) गुणोव्रत धरो ॥ ३० ॥
एह थकी सुख संपत होय, दुख दारिद्र न पीडे कोय।
सुभ लक्षण पामो सुत घणा, फलै मनोरथ निज मन तणा ॥ ३१ ॥
ए व्रत आदि अनादें कह्यो, श्री जिनना मुख थी ए लह्यो।
नव गुण सुंदरि जोड़ी हाथ, व्रत लीधो निज बहुयर साथ ॥ ३२ ॥
मुनि वांदी घरि आव्या सही, ए बात सहु कुटुंब ने कही।
तब मतिसागर इम उच्चरै, कणक फले किम पातक हरे ॥ ३३ ॥
व्रत नंद्या कीधी अतिबहु, ते पावे धन चाल्यो सहु।
गया कंचोला कंचन तणा, घडि जडित आभूषण घणा ॥ ३४ ॥
मोती हीरा चुनिलाल, गई सकल रुपानि थाल।
हार चीर पीताम्बर सार, गया मुद्रका नव सर हार ॥ ३५ ॥
गया चुवा चन्दन ना भोग, पान फूलनो पम्यो विजोग।
रस गोरस पंचामृत सोय, दास दासी ने दीसे कोय ॥ ३६ ॥
देश देशे होता व्यापार ते नहीं दीसे ये (ए) क लगार।
गयो संगा तणो सुसनेह, दिन दिन दाजे दुखे देह ॥ ३७ ॥
अन्न वस्त्र थी विन हिय थया, सहे कष्ट नवि जाये कहया।
इम जाणी निंद्या (न्दा) परि हरो, जिन वाणीनौ निश्चै (य) करौ ॥ ३८ ॥

दोहा- पाप फले लक्ष्मी गई, दिन दिन दुखीया होय।
कर्मतणी कुटी लागती जीव वीचारि जोय ॥ ३९ ॥
जे सूता निज मंदिरे, नव खन ऊपर जेह।
ताप्र सीत नव जानता, भूपरि लोले तेह ॥ ४० ॥
भव नव वस्त्र ते पहिरता, अपर सोमवती सिणगार (श्रृंगार)।
तेये (ए) क कोपीन भर थया, हिंडे द्वारोद्धार ॥ ४१ ॥
पंचामृत भोजन भलु करता निज मनरंग।
ते दुखे पेटज भरे कर्मतणो प्रसंग ॥ ४२ ॥
इमजाणि मिथ्या तजो, धरोये (ए) क जिन धर्म।

गंगा दास कहे जेहथी पामो सिद्धि सुशर्म ॥ ४३ ॥
पुत्र सात मन चीतवै भर जोवन नव वेश।
सहे देसे संपत भली, विपत्ति भलो विदेश ॥ ४४ ॥
इमचींतवी सहु आविया, मात पिता ने पास।
अह्मे जाऊं परदेश में, तुमे रहो निज वास ॥ ४५ ॥
मात पिता बहु दुख धरै, कोई न सीझै काज।
हा हा दैव दया रहित, ए स्युं (क्यूं) कीधो आज ॥ ४६ ॥
इम विलापं करे घणा, तब गणधर राखे व्याक ।
कर्म कहे तिम नाचीये इह संसार मजाख्य (उपहास) । ४७ ॥
कर्मतणी गत कही न जाय, कर्म पीडया रावण राय।
कर्म रामचन्द्र वन गयो, पांडव सहु हारियो ॥ ४८ ॥
ते माटे माय विचारि जोय कर्म थकी मैं बलीयो नहीं कोय।
इह समझा वि चाल्या मात, नगर अजोध्या आव्याख्यात ॥ ४९ ॥
तहां श्रेष्ठी जिनदत्तह वसे, देखी सजन नाम न हसै।
जई भेंट्या तेहने सही, कथा सहूतें आगल कही ॥ ५० ॥
दयावंत श्रेष्ठी ते चंग सहु बंधु वराख्या मिन रंग।
काम काज तेह नै घर करै, दुखे सुखे निज पेटज भरै ॥ ५१ ॥
एह समंध रहयौ एणै ठाम, सुणो भवियण अपर अभिराम।
मात पिता होता निज गाम, अविधवंत (अवधिज्ञानी) मुनि आव्याताम ॥ ५२ ॥
सुमतिसागर गुणसुंदरी तदा, देई प्रदक्षिणा नादे (वंदना की) मुदा।
पुछै मुनि नै दुख नो कर्म, उदियागति आव्यो कुण कर्म ॥ ५३ ॥
के पूर्व कीधो पाप के साधु ने करयो, संताप के मैं अणगल जल वावरयो ॥
के में रात्रीभोजन करयो.................. ? ॥ ५४ ॥
के में दान देती राखीया, के में झूठा वचन भारवीया।
के में शील खंड्यु निर्मलो, के में व्रत पाल्युं नहीं भलो ॥ ५५ ॥
के में लोपी जिननी आण के में लोम्ये पाडया प्राण।
के में सात व्यसन खे लीया, के में घ्रत तेलज भेलीया ॥ ५६ ॥
के में जिन वचन न राख्यों द्वदै दीन थई मुनि आगल बंदै।
सुणी वचन गुरु बोल्यो बाण, व्रत निंधा (न्दा) कीधीधन हाणि ॥ ५७ ॥
वीजीवार व्रत लीधो सार, विधि पूर्वक कीधो रविवार।
तेथी दुख दालिद्रज गयो, पूर्वजी पर सहुं धन लहयौ ॥ ५८ ॥

हवे कथा सुण ज्यो विख्यात, निहां रहै छै वंधव सात।
येक दिवस गुणधर वन में गयो, घास लेइ निज घर आवियो ॥ ५९ ॥
भाभी कने भोजन मांगीयो, दो तर डा विन ते नवि दीयो।
जे स्थानक भूलो निज दंत, तिहां आव्यो गुणधर गुणवंत ॥ ६० ॥
दंत ऊपर लपटाणौ सांप, कुंवर कहे कुण आव्यो पाप।
मन मा झूरे दुख बहु धरे, नयण थको जल धारा करे ॥ ६१ ॥
चिंते कुंवर हवे सूं करुं, दांत लीया वन डोहु फिरु।
तो कहे चोर सहु परिवार, वो वेच्यूं हस्ये ते निरधार ॥ ६२ ॥
सहूं कुटुंब दिसे अतिघणे, विपत पडया को नहीं आपणूं।
जब दलिद्र आविं घर मांहि, गुण छोडि सहूं अवगुण थाय ॥ ६३ ॥
कला कुशल चातुरता होय, लक्ष्मी बिना नवि जाणे कोय।
जो धनवान मंदमति होय, तो गंभीर कहे सहु कोय ॥ ६४ ॥
लक्ष्मीवंत जो कालो रहे, स्याम रुप सुंदर सहु कहै।
सकल कलाते लक्ष्मी पास, लक्ष्मी बिना नर होय निरास ॥ ६५ ॥
इम विलाप आक्रंदज करै, वली फणीपति आगल उच्चरै।
आपोदंत नही तरषाय, संकट दुख सहयो नवि जाय ॥ ६६ ॥
इम कही ने लागो पाय, शेषाशन कंपाख थाय।
अवधि ज्ञानी जाण्यो आप, जिन सेवक नै पामे संताप ॥ ६७ ॥
पद्मावती तेडी तत्काल, दुख धरे छे गुणधर बाल।
एह नो पिता वाणारसी गाम, पार्श्वनाथ पूजै अभिराम ॥ ६८ ॥
श्रीजिन नो सेवक ए सही, ते मार दुख निवारो जइ।
तव पद्मावती आवि तिहां, गुणधर दुख पावै छै जहां ॥ ६९ ॥
कनक दंत वति दीधो हार, पंच रत्नमय मुलका झलकार।
पार्श्वनाथ नी प्रतिमा भली, गुणधर ने आपे मनरली ॥ ७० ॥
पूजो प्रणमी एहना पाय, एहथी रोग दोष सहु जाय।
जायो करो मन बांछित भोग, सुखै रहयो पर जनम संयोग ॥ ७१ ॥
हर्षे कुंवर गये निज गेह, भ्रात कने सहु सहु आप्यो तेह।
कहे भ्रात ए पर धन जेह, केह नी चोरि आण्यो एह ॥ ७२ ॥
जो जाणस्ये नगरो राय, खंड खंड कर से तब काय।
तब गुणधर वृतांतज कहे, सकल भ्रात ने साचुं लहे ॥ ७३ ॥
धन धन कुंवर तुम्हें गुणवंत, तुम पुण्य तणो नावै अंत।

क्षमा करो अम्हा उपरे बाल, करो कुटुंब तणो प्रतिपाल ॥ ७४ ॥
लिबांक तुम्हारो रति नही येक, विपत पडंता किस्यो विवेक।
बहुविधि गुणधर नी स्तुति करी, पूजै जिन आनंद ज करी ॥ ७५ ॥
सकल भ्रात ने सुखी रहे, दुख बात सु (स्व) पनांतर नवि लहे।
इम जाणी सहु पुण्यज करो, मन बांछत फल पुने वरो ॥ ७६ ॥

दोहा- पुण्ये मन वांछत फल फले, पुण्ये स्वर्ग निवास।
पुण्ये सुर सेवा करै, लक्ष्मी होवै राइ ॥ ७७ ॥
पुण्ये रिपु पीडे नहीं, पुण्ये बांछत भोग।
पुण्य थकी पीड़ा हले, पुण्ये सुभ संजोग ॥ ७८ ॥
सात भ्रात इम चिंतनै, बहुधन आव्यो हाथ।
सात क्षेत्र मा खरचीये, तो आवै निज साथ ॥ ७९ ॥
इम चीतवंता प्रासादज करयो, मध्ये श्री जिनविंवज धरयो।
बिम्ब प्रतिष्ठा कीधी सार, खरचे द्रव्य न लाये पार ॥ ८० ॥
तेडी चौविधि संग सुचंग, दान मान दीधा मनरंग।
तबको दुष्ट विचारे चिंत, ए दारिद्र ने किंहाथी वित्त ॥ ८१ ॥
भूपति आगे चुगली करे, सात भ्रात नव आण्या घरे।
पूंछै नरपति सांचो कहो, कवण तुम्है कुण स्थानक रहयो ॥ ८२ ॥
तव गुणधर नि सिंकज थई, सहु बात नृप आगल कही।
हरण्यो भूपति धरी मन आनंद, धन धन स्वामी पार्श्व जिनंद ॥ ८३ ॥
धन धन महिमा रविवारज तणो, देख्यो राय अचंम्यो घणो।
भूपे गुणधर ने तिणवार, कन्या दीधी रुप अपार ॥ ८४ ॥
मोटा मंडप धाल्या बार, चन्द्रोपक दीधी विस्तार।
पंचश दुन्द (मि.) बाजे बहू नाद, गावे कामिनी कोकिल साद ॥ ८५ ॥
चोरी कनक तणी तिहां चीतरी, इन्द्रम भांतिम रचना करी।
तलीया तोरण झलहल करे, स्वर्ग देव जोवा उतरे ॥ ८६ ॥
रंगे दीधो कन्या दान, नाचै पात्र करै बहू तान।
वर कन्या परण्या तिणवार, वंदी जन बोल्या जय जयकार ॥ ८७ ॥
राजादान करे मन रली, रत्न जड़ित सोना सांकलि।
काने कुण्डल कंठेहार, आप्यासूं दर्सोल सिंणगार ॥ ८८ ॥
कंचन थाल कचोला (कटोरी) घणा, बहुविध माजन रुपा (चांदी) तणा
रथ हस्ती पाला असवार, नेजा आयुध ने दल भार ॥ ८९ ॥

दासी दास दमामा दीध, भली परे भाव भक्ति बहु कीध।
रंगीधर साकेता रहे, राय तणा सन्मानज लहे ॥ ९० ॥
सुख मांहि दिवस गया बहु, वही चीत वात नृप आगल कही।
अम्हे जास्यूं नगर अम्ह तणे, सुणी बात राजा इम भणे ॥ ९१ ॥
रहो तुमे आ नगर मंझार, आणो सहु कुटुम्ब परिवार।
कहै कुमार नृप चितै धरो, इह वचन अम्हारुं करो ॥ ९२ ॥
हरषी भूप दीये बहुदान चतुरंग सेना सहुसन्मान।
माहा वाद्य जन घोषित कीयो, कोस एक नृप साथे गयो ॥ ९३ ॥
सारी सीष पुत्री ने कही, भेंटी राजा चाल्या साही।
सेन सहित धरता उल्लाह, आव्या वाराणसी पुर मांही ॥ ९४ ॥
मातपिता ने न मिया पाय, अति आनंद नगर मा थाय।
सजन कुटुम्ब मिलिया तब सहुं, सासु ने चरणे नमिया बहू ॥ ९५ ॥
सकल सजन आवि मिल्यां, श्री जिन नामे पातक टल्या।
धवल गेह कीधा रुवडां, जाणे शुद्ध राज रतनां जडया ॥ ९६ ॥
सोहे सत खंडा मालीया, झल हलता मुंक्या जालीया।
सुंदर रचना पोहला पाठ, चित्राम शालि हि झोला धार ॥ ९७ ॥
करी भोग विध विधना भला, श्री जिन पद पूजो निर्मला।
सुखे रहत सहु परिवार, दान शील तप भाव अपार ॥ ९८ ॥
इम करतां व्रत पूरो हवु, रच्या पंच श्री जिन प्रासाद।
मेरुं शिखर सूं माडयो वाद,.........॥ ९९ ॥
शिर वर बुद्ध सुंदर दी संत, ध्वजा दंड गगने लहकंत।
मध्ये घंटा धमधम करे, सुणतां सजनना मनहरे ॥ १०० ॥
चार थंभ वेदी चतुरंग, गोपुर तोरण अति उतंग।
कनक छत्र सिंहासन करी, मध्ये श्री जिन प्रतिमा धरी ॥ १०१ ॥
तेड़ी सह गुरु अति सुकुमाल, करी प्रतिष्ठा पंच विशाल।
संग चतुर्विध तेडी सार, दान मान दीधा बहु सुखकार ॥ १०२ ॥
झालर ताल, कंसाल भृंगार पिगाणिज छै मनुहार।
नवविध उपकरणज करया, ... ॥ १०३ ॥
अन्न उपध (औषधि) बहू दानज दीया, नव पुस्तक भावे आपीया।
अमै (अभय) दान दीधी अति चंग, इह विध उद्यापन उतंग ॥ १०४ ॥

बाजे टोल तवल झणकार, जिन शासन वस्यो जय जयकार।
यथाशक्ति भभी (वि) यण तप करो, तेह थी घोर भवांवुधि तरो ॥ १०५ ॥
दान भवंविधि नित्ये करो, मुनि देखी बहु भावज धरो।
येणे काले सुख संपत पामे सोय, स्वर्ग पोहंता तेते सहु कोय ॥ १०६ ॥
कोयेक भव मध्ये वली, कोयेक, पंच भवे मन रली।
कर्म क्षेपवी युगति जसै, आवागमन थी रहितज धस्यै ॥ १०७ ॥
सुख संपत लहस्यै ते धणु, एह वो फल रविवारज तघणो।
इम जाणि कीजे रविवार, जे थी पामे सौख्य अपार ॥ १०८ ॥
देश विराड विषय संणगार, कारंजा मध्ये गुणसार।
चन्द्रनाथ मंदिर सुखकंद, भव्य कुसुम भासनवर चंद ॥ १०९ ॥
मूलसंघ मंतिवंत महंत, धर्म चंद सुरवरअतिसंत।
तस पद कमल दल अति रस कूप, धर्म भूषण पद सेवे भूप ॥ ११० ॥
विशाल कीर्ति विमल गुण जाण, जिन शासन (सासन) पंकज प्रगटयो भान (नु)
तस पद कमल दल मित्र, धर्मचंद धृत धर्म्म पवित्र ॥ १११ ॥
तेहनो पंडित गंगादास, कथा करी भवियण उल्हास।
सकल (शकल) सोला सत (शत) पन्न (न्न) र सार ॥
सुदी आषाढ़ विजर विवार ॥ ११२ ॥
अल्प बुद्धि रचना करी, क्षमा करो संजय चित्तधरी।
भणे सुणे भवे नर नारि तेहे होवे मंगल चार ॥ ११३ ॥

इति श्री रविवार कथा संपूर्ण। पठनार्थ ब्रम्ह भट्टारक श्री राजं (जे) न्द्र कीर्तितत् ब्रम्हचारी रतन सागर पठनार्थ चरण जीवी देवगढ़ नगरे। श्री रस्तु संवत् 1820 वर्षे चैत्र सुदी 12 मंद (गल) वारै। इति।

(पेज नं. ७० का शेष)

70. लाड जैन
71. बरहिया जैन
72. विजयवर्गीय जैन
73. बुदेलवाल जैन
74. संदगोप (प्राचीन)
75. सर्मैया जैन
76. सराक प्राचीन
77. सेतवाल जैन
78. सोरठिया (प्रा.)
79. सादर्श जैन
80. शेट्ठी जैन
81. श्रीमाल जैन
82. हूमंड जैन
83. हरसोरा जैन
84. क्षत्रियारु जैन
85. लम्ब कम्युक जैन
86. हरदारु जैन
87. मेडतवाल (प्राचीन)
88. सहराला
89. सेलवाल
90. पाटीदार
91. वीरवाल
92. धर्मवाल
93. जैन बंजारा
94. जैन गुरव
95. सिंधी जैन
96. परमार क्षत्रिय जैन

जैन जातियों की सूची

- प्रेमकुमार जैन

देश के 500 नगरों में 3 वर्षों तक लगातार 3000 पत्रों के सम्पर्क से प्राप्त जानकारियों पर आधारित जैन जातियों की यह सूची श्री प्रेमकुमार जी की लगन और सतत खोज का प्रतिफल है।

1. अग्रवाल जैन
2. अयोध्यावासी जैन
3. असाटी जैन
4. ओसवाल जैन
5. ओसवालकच्छी बीसा
6. ओसवाल कच्छी दस्सा
7. ओसवाल हलारी
8. कठनेरा जैन
9. कलारे जैन (प्राचीन)
10. कंचागिर जैन
11. कासार जैन
12. काम्बोज जैन
13. कोष्ठि जैन
14. कुप्पासालीगर
15. खण्डेलवाल जैन
16. खरौआ जैन
17. गंगेरवाल जैन (उ.प्र.)
18. गंगेरवाल जैन (महा.)
19. गंगराडे जैन (प्राचीन)
20. गहोई जैन (प्राचीन)
21. गोलालारे जैन
22. गोलालारे जैन (भदावरी)
23. गोलापूर्व जैन
24. गोल श्रृंगार जैन
25. गोड़स जैन शोड़ा जैन
26. चरणागेंर जैन
27. चतुर्थ जैन
28. चितोड़ा जैन
29. जैन ब्राम्हण
30. जैसवाल जैन
31. जाट जैन (प्राचीन)
32. दोसके परवार
33. धूसर जैन (प्राचीन)
34. धाकड़ जैन
35. नयनार जैन
36. नागेंद्रा जैन
37. नरसिंहपूरा जैन
38. नेमा जैन (मालवा)
39. नेमा गुजराती जैन
40. नेव्ही जैन (महाराष्ट्र)
41. परवार जैन
42. पल्लीवाल (महाराष्ट्र)
43. पल्लीवाल अलीगढ़, फिरोजाबाद
44. पल्लीवाल ग्वालियर, मुरैना
45. पल्लीवाल जागरोठी, आगरा
46. पोरवाल जागड़ा
47. पोरवाल दस्सा
48. पोरवाल बीसा
49. पोरवाल गुर्जरा
50. पंचम जैन
51. पदमावती पोरवाल
52. परमावती पोरवाल (महाराष्ट्र)
53. पदमावती पोरवाल (मालवा)
54. बघेरवाल जैन
55. बदनोरा जैन
56. बाचा जैन (प्राचीन)
57. बेलीगर जैन
58. बोगार जैन
59. भटेवरा जैन
60. भावसार जैन (प्राचीन)
61. भोजकार जैन
62. माहोर (वैश्य प्रा.)
63. माथुर (वैश्य प्रा.)
64. माहेश्वरी (प्राचीन)
65. मेवाड़ा जैन
66. मोढ़ माण्डलिक
67. रायकावाड जैन
68. राजवंशी जैन
69. रंगिया जैन (प्रा.)

पेज नं. ६९ देखें

WHY ANEKANT GYAN MANDIR ?

"आ नो भद्राः क्रतवों यन्तु विश्वतः"

Let noble thoughts come to us from every side.

- Rigveda

During the last Few centuries every progressive country has adopted serious measures to preserve all its ancient art and literary treasures. Unfortunately in our country the search for old manuscripts though going on for alleast one century, has not yet been exhausted Numerous manuscript stores attached to public temples and private libraries have not yet been properly catalogued and even a casual inspection brings to light valuable works unknown so far. Granthas enjoy the same respect as God and they are respected as next to TIRTHANKARAS in the jain culture because what is written in the texts, originally came out from the mouth of the TIRTHANKARAS.

In Ancient India written was not in the practice. The memory of the people was so sharp that they felt little need for the art of writing. The texts were ordinarily recited and handed down orally from preceptor to disciple. The students used to learn the texts by heart without a single error in pronunciation. This type of teaching was called SRUTI (oral system of learning). When the method of writing down the sacered texts was fully adopted, it was but natural that great and best efforts were made to write down all the texts which are in existence. On seeing the increasing number of the manuscripts day by day, the Acaryas and the head of community decided that the temples should be the place where these manuscripts should be preserved as they were the only place where the manuscripts could be kept safe and could be easily accesable to the scholars. The place began to be called by the name of "GRANTH-BHANDAR" i.e. Storehouse of knowledge.

The Jain Acaryas like **Acarya Kunda Kunda, Samant bhadracharya, Umaswami, Sidhasena, Devanandi, Aklank, Vidyanand, Haribhadrasuri Jinsena, Gunbhadra and Hemcandra** etc., filled the Sastra-Bhandars with their works. The Acaryas preached

that one who does not write or persuade others to write the manuscripts is good for noting. only those persons are regarded high and noble who distribute these sastra's to others for the sake of spreading knowledge. At the end of most of the manuscripts we find the following words written "One who writs or makes individuals to write, one who hears or one who makes other to near. one who gives or one who makes other to distribute, is noble and sharer of PUNYA. He will surely attain NIRVAN some day". In ancient time, the management of the Sastra-Bhandars was under the guidance of the monks and sadhus. From 13th century BHATTARKAS became influencial and the Sastra Bhandaras came under their control. In the beginning they were the great scholars, so they themselves managed the Sastra-Bhandars very efficiently. They had with them several persons who used to be experts in writing and copying out the old manuscripts. In short we can say that the Bhattarakas and their pupils had done hard work to preserve the manuscripts. But after the down-fall of this institution the management of Bhandars came in to the hands of illiterates and persons of backward ideas. neither the Jains used the manuscripts nor they allowed persons. scholars of other castes to do so. Thats why we were given less importance in our Natinal History. No positive or progressive step was taken in the field of AGAM research. Sometimes the manuscripts remained in locked for years and were reduced to ashed. Many were taken to abrod by foriegn scholars like Mmuller etc. (Recently Bhaiyaji has arranged few photo-copies of NYAYA-DIPIKA and others from Berlin museum).

HOW THE MANUSCRIPTS ARE PRESERVED

Manuscripts are handled with great care in the GYAN MANDIR by the management. There is a scintific process through which a manuscript is to be passed before it is placed in the Grantha-Bhandar. Apart from the proces there are strict instructions written at the end of the manuscripts, that "The manuscripts were written with great difficulty so it should be preserved with great care".

कष्टेन लिखितं शास्त्रं यत्नेन परिपालयेत्

Every manuscript is placed between two wooden/paper boards

of the size of the manuscripts. These boards are prepared specially for them. After the manuscripts are arranged they are placed in VESTANA which are made of cloth. The pieace of cloth of the same length and breadth which is used for wrapping the manuscripts is called vestana. Generally one manuscript in Kept is one Vestana. Then the manuscripts are placed in steel shelves. so that they might remain safe from rain. wind and worms.

AIMA AND IMPORTANCE

Anekant Gyan Mandir is one of the beggest Library and Research center of Ancient Jain Heritage. Gyanmandir has following treasure. which go on increasing every single day. collection of over 6000 Handwritten manuscripts including Tadpatras which are 500 to 1000 years old, covering subjects like Jain Darshan, Arts Literature, Grammer Yoga, Sculpture, Astrology, Ayurved, Environment, History, Philosophy and Indian culture etc.

With New Millenium The Gyanmandir is fully computerized and programmed so that details of every book, every author can be located in seconds. It is planned to place this work on internet. Thus Gyanmandir is an ambitious project to collect & preserve Jain Heritage and pass on this "Dharohar" (Hereditary Heritage) to future Generations.

APPEAL

If you feel that a great human effort is made to preserve and spread the knowledge of Jain Heritage and culture, please come forward and be a part of this great institution. Your co-operation and support would be well appreciated, for a great cause.

Auther -
SANKALP SINGHAI
(Alld. University)



ANEKANT GYAN MANDIR RESEARCH INSTITUTE, BINA

An Introduction

✍ *Dr. Ratan Chandra Jain*

1. establishment :- Under the auspicious guidance and blessings of 108 Muni Shri Sarala Sagara Ji Maharaja and with great efforts of Brahmachari Sri Sandipa Ji Sarala, the Anekant Gyana Mandir in the form of Saral Library was established on 20th February, 1992.

2. Aims :- (1) To find out and collect the manuscripts of Jaina philosophy, culture, literature and history and preserve them by listing, laminating and making microfilms.

(2) To publish the manuscripts.

(3) To make Jaina literature available for study to the saints, scholars and research students of Jainology.

(4) To conduct Bala Sanskara Kendras for building the character of boys and girls and inculcating in them the ethical values and also for imparting to them the education useful in life.

(5) To provide shelter and facilities for study, research and practice of vows to retired learned persons, sravaks and the persons observing religious vows, in "Anekantą Prajnasrama Samadhi Sạdhana Kendra"

3. Activities Conducted by the Institute :-

(1) Collection of manuscripts :- Bramhacari Sandipa Ji Sarala, the founder of the institute along with his team has collected nearly 4000 manuscripts from 6 provinces of the country and the listing of them has been completed. The rare 35 books written in Kannada language on Tada leaves have also received. This work is continuosly going on.

(2) Projects of preserving manuscripts :- There is a proposal to preserve manuscripts by computerising them with the help of computer floppies.

4. Research Library :-

(1) Nearly 7000 books on the subjects of spritualism, lojgic, grammer, epics, child literature and philosophy have been collected. Zerox copies of unavailable books have been prepared.

(2) About 60 weekly, fortnightly, monthly and quarterly magazines are being received in the library and many readers are availing benefit from them. The research library is maintained properly in two big halls. Books are kept in 60 almirahs. In the first hall printed books are kept and in the second one the manuscripts have been arranged.

5. Anekanta Darpana the yearly magazine :-

The institute has started publishing an yearly magazine to promote the research activities and the programme of the institute. The enitial issue of the magazine has been praised very much by more than hundred scholars by writting critical notes. The editors of the magazine are Dr. Ratana chandra Jain, Bhopal and Abhay Kumar Shastri, Bina.

6. Editing and publishing manuscripts :-

The Anekant Gyana Mandir has a number of unpublished books. The editing and publication with detailed introduction of them is under consideration. The scholars expert in this work are being invited. They will be paid proper remuneration.

7. Research Work :-

The Anekanta Gyan Mandir is being developed in a great research centre. It has a huge collection of books on different subjects, which is attraction the research scholars from all over India. The institute has provided proper facilities of lodging and boarding, reading and writting to the research scholars.

8. Boarding facilities for guest :-

Facilities of pure, faultless food for guests, such as vratis (persons observing religious vows) and scholars are avilable in the institute so that they may practise their religious conduct and study scripture peacefully.

9. Facility of purchasing books :-

A sale counter of religious books is also counducted in the institute so that the persons desirous of purchasing Jaina literature may get it easily. The books are available at the cost invested.

10. Conducting Seminars and Coaching camps :-

(1) A two-day seminar is organised every year on the 20th february the foundation day of the institute. with a view to connect the jaina and non jain scholars from all over India with the institute.

(2) The summer and winter coaching camps are organised by the institute at home and also out of home.

(3) The scholars connected with the institute are sent to deliver discourses at the occasions of the paryusana, Mahavira Jayanti etc.

11. The Independent Vehicle Facility :-

The institute has arranged a vehicle for the publicity of the institute at all Institute has arranged a vehicle for the publicity of the institute at all India level to bring books from different places and to bring the achievements of the institute in light.

12. The proposed new schemes of the institute :-

(1) The construction of the first and rare "Anuyoga Mandir" (Sruta Dhama) of the country is proposed. A four storeyed building will be constructed to keep the books related to each Anuyoga in it Proper facilities will be provided for sramanas. Vratis and research scholars to study the scriptures and to teach them others The scriptures will be engraved on copper plates and will be worshipped daily. A sum of Rs. 50 lacs will be invested in this schems with the help of generous donators please extend your generous hand to the Anekanta Gyan Mandir.

(2) The construction of a separate building for Bala Sanskar Kendra is under consideration.

(3) To extend the Gyan Mandir the construction of a 20 room building is also proposed. The plot for the same purpose has already been purchased.

अभिवन्दन परिशिष्ट

इस परिशिष्ट में वर्ष 1999 में सम्मानित उन प्रतिभाओं की जानकारी एकत्रित की गई है, जिन्होंने मां भारती के उत्थान में जो योगदान दिया है, उनके फलस्वरुप यह सम्मान, उपाधि प्रदान की गई है। ऐसी अद्वितीय प्रतिभाओं पर हमें गौरव होना चाहिये।

1. आदर्श महिला विद्यालय श्री महावीर जी की संस्थापिका ब्र. कमलाबाई जी को रोटरी इंडिया एवार्ड 1998 से सम्मानित किया गया।
2. कु. आरती जैन को जैन साहित्य के परिप्रेक्ष्य में पं. सदासुखदास जी कासलीवाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व अनुशीलन पर डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर ने पी.एच.डी. की उपाधि प्रदान की।
3. डा. (श्रीमती) विद्यावती जैन आरा को उनके शोध प्रबन्ध सन्त कवि देवीदास और उनके अद्यावधि अप्रकाशित हिन्दी साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन पर बाबा साहेब अम्बेडकर विश्वविद्यालय मुजफ्फरनगर ने डी. लिट् की उपाधि प्रदान की।
4. डॉ. (श्रीमती) सरयू विनोद दोशी को इस वर्ष भारत सरकार द्वारा पद्मश्री की उपाधि से अलंकृत किया गया।
5. वयोवृद्ध विद्वान डा. दरबारीलाल कोठिया को स्व. जगदीश राय स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया।
6. श्रुत सम्वर्द्धन संस्थान, मेरठ द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सम्मान समारोह में प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन, फिरोजाबाद, डॉ. फूलचन्द प्रेमी वाराणसी एवं डॉ. चेतनप्रकाश पाटनी, जोधपुर को जैन रत्न की मानद उपाधि के साथ आचार्य सुमति सागर स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
7. डा. देवेन्द्र कुमार जैन शास्त्री, नीमच को ज्ञान अवार्ड तथा लाला डिप्टीमल जैन अहिंसा इन्टरनेशनल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
8. डा. नेमीचंद जैन, इन्दौर श्री सुरेश चन्द्र जैन जबलपुर को भगवानदास शोभालाल जैन शाकाहार पुरस्कार से अलंकृत किया गया।
9. मिया मोहम्मद शफीक खान, सागर को रघुवीर सिंह जीवरक्षा पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।
10. डा. नीलम जैन गाजियाबाद को गोल्डेन जुबली फाउंडेशन पत्रकारिता पुरस्कार से अलंकृत किया गया।
11. डा. शैलेन्द्र कुमार रस्तोगी को ज्ञानोदय पुरस्कार प्रदान किया गया।

12. अनेकान्त ज्ञान मंदिर, बीना (सागर) के युवामंत्री शैलेन्द्र जैन को वाग्भारती पुरस्कार से जैन प्रज्ञा प्रकाशन भोपाल, वाग्भारती ट्रस्ट मैनपुरी एवं सकल दिग. जैन समाज डूंगरपुर ने सम्मानित किया।
13. डा. राजाराम जैन आरा को आचार्य कुन्द कुन्द पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
14. केन्द्रीय पर्यावरण राज्यमंत्री श्रीमती गांधी को भगवान महावीर फाउंडेशन चेन्नई द्वारा महावीर अवार्ड के लिए चुना गया।
15. श्रीमती सरोज जैन (धर्मपत्नी) डा. प्रेमसुमन जैन को णेमिणाह चरिउ का सम्पादन एवं सांस्कृतिक अध्ययन पर सुखाडिया विश्वविद्यालय उदयपुर ने पी.एच.डी. प्रदान की।
16. पं. मुकेश कुमार जैन शास्त्री विदिशा को कानजी स्वामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व: एक साहित्यिक मूल्यांकन पर बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल ने पी.एच.डी. प्रदान की।
17. श्रीमती वन्दना जैन (श्रवणबेलगोल) को आचार्य जोइन्दु (योगीन्दु) एक अनुशीलन पर डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर ने पी.एच.डी. प्रदान की।
18. साध्वी स्मितप्रज्ञाश्री को आचार्य श्री जिनदत्तसूरि जी का जैन धर्म एवं साहित्य में योगदान पर गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद ने पी.एच.डी. उपाधि प्रदान की।
19. श्री दुलीचंद जैन चेन्नई को साहित्य सेवा उपलब्धि पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
20. डा. रतनचन्द जैन भोपाल को उनकी कृति जैन दर्शन में निश्चय और व्यवहार नय: एक अनुशीलन पर जैन विद्यासंस्थान श्री महावीर जी द्वारा महावीर पुरस्कार एवं आचार्य शांति सागर छाणी श्रुत सम्वर्द्धन पुरस्कार प्रदान किया गया।
21. पं. निहालचंद जैन बीना को उनकी कृति नैतिक आचरण पर ब्र. पूरणचन्द रिद्धिलता लुहाड़िया साहित्य पुरस्कार प्रदान किया गया।
22. श्री सुरेन्द्र कुमार भारती को उनकी शोध कृति "पासणाह चरिउ" पर स्वयंभू पुरस्कार प्रदान किया गया।
23. एयर मार्शल श्री पी.के. जैन को विश्वभारती द्वारा जीवन विज्ञान पुरस्कार प्रदान किया गया।
24. डा. नेमीचन्द बी.छाजेड़, मुम्बई को महाराष्ट्र सरकार द्वारा डा. बाबा साहेब अम्बेडकर दलित मित्र पुरस्कार प्रदान किया गया।
25. पं. शिवचरणलाल जैन, मैनपुरी को महाकवि रइधू पुरस्कार एवं आचार्य सूर्यसागर स्मृति श्रुत सम्वर्द्धन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
26. डा. रमेशचन्द्र जैन बिजनौर को महाकवि ज्ञान सागर साहित्य पुरस्कार एवं स्व. चम्पालाल सॉड स्मृति पुरस्कार प्रदान किये गये।
27. डा. पन्नालाल जैन सागर, डा. गोकुलचन्द जैन, आरा, श्री रघुचन्द्र शेटिट, येराडिवीडु, तथा श्रीमती एस.पी. शान्तम्मा को श्री श्रवणबोल गोल में श्री गोम्मटेश्वर विद्यापीठ

पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

28. इतिहासकार डा. मधूसूदन ढाकी को श्री हेमचन्द्राचार्य ट्रस्ट अहमदाबाद द्वारा ''हेमचन्द्राचार्य चन्द्रक'' से सम्मानित किया गया।
29. श्री चंचलमल चोरड़िया (जोधपुर) को बीकानेर में ''इंशीर'' सम्मान से सम्मानित किया गया।
30. प्रख्यात साहित्यकार प्रो. जी. ब्रह्मप्पा को उनके कन्नड़ उपन्यास सम्राट खारवेल पर 'इतिहास रत्न' से सम्मानित किया गया।
31. शोधादर्श के प्रधान सम्पादक श्री अजितप्रसाद जैन लखनऊ को आचार्य विमलसागर श्रुत सम्वर्द्धन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
32. श्री रामजीत जैन ग्वालियर को उनकी कृति ''गिरनार माहात्म्य'' पर आचार्य सुमति सागर स्मृति श्रुत सम्वर्द्धन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
33. डा. कस्तूरचंद्र सुमन, श्री महावीर जी को मुनि वर्द्धमानसागर स्मृति श्रुत सम्वर्द्धन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
34. श्रीमती अल्पना जैन ग्वालियर को जैन धर्म एवं गीता में कर्म का सिद्धांत एक समाज शास्त्रीय तुलनात्मक विवेचन पर जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर ने पी.एच.डी. उपाधि प्रदान की।
35. पं. जयकुमार एन. उपाध्ये, नई दिल्ली को ''प्राकृत साहित्य में वर्णित ज्योतिष का आलोचनात्मक परिशीलन'' पर सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर ने पी.एच.डी. उपाधि प्रदान की।
36. श्रीमती सुशीला जैन सागलिया इंदौर को देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर द्वारा ''जैन विषयवस्तु से सम्बद्ध आधुनिक हिन्दी महाकाव्यों में सामाजिक चेतना'' विषय पर पी.एच.डी. प्रदान की।
37. श्री कैलाश जैन मड़वैया, भोपाल को हिन्दी साहित्य सम्मेलन में साहित्य वारिधी सारस्वत सम्मान से अलंकृत किया।
38. दिग. जैन महासमिति के रजत जयंती वर्ष में इन्दौर में जैन मित्र के सम्पादक श्री शैलेष जैन कापड़िया, दिशा बोध के सम्पादक डा. चिरंजीलाल बगड़ा, जैसवाल जैन दर्पण के सम्पादक श्री जगदीश प्रसाद जैन प्राकृत विद्या के सम्पादक डा. सुदीप जैन एवं सन्मति (मराठी) के सम्पादक श्री माणिकचंद भिसीकर को सम्मानित किया गया।
३९. श्री बाबूलाल पाटोदी इन्दौर को साहू अशोक जैन स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया
४०. प्रतिष्ठाचार्य प्रदीपकुमार जैन मुम्बई को आ. पुष्पदंत सागर पुरस्कार प्रदान किया गया।

स्मृतियां शेष परिशिष्ट

वर्ष 99 में भारतवर्षीय विद्वत् समाज से दिवंगत हुए मनीषी गण जो वसुन्धरा से उठ गये, उनकी स्मृतियां ही शेष हैं समाचारों के आधार पर एकत्रित सामग्री।

1. 5 जनवरी, 1999 को देश के प्रतिष्ठित अभियन्ता डा. ओ.पी. जैन, नकुड़ (सहारनपुर) का देहावसान हो गया।
2. 10 जनवरी 1999 को सुप्रसिद्ध विद्वान एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी प्रो. खुशाल चन्द्र गोरावाला, वाराणसी का स्वर्गवास हो गया।
3. जनवरी 1999 में फ्रेन्च भाषा के प्रोफेसर वी.वी. जैन, लखनऊ का निधन हो गया।
4. 4 फरवरी, 1999 को देश के प्रमुख उद्योगपति, टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन समूह के अध्यक्ष, साहू अशोक कुमार जैन दिल्ली का स्वर्गवास हो गया।
5. 7 फरवरी 1999 को वयोवृद्ध समाज सेवी, रायबहादुर हरकचन्द पान्डया, रांची का निधन हो गया।
6. 21 फरवरी 1999 को उद्योगरत्न हरखचन्द नाहटा, दिल्ली का देहावसान हो गया।
7. 27 मार्च 1999 को अध्यात्म ज्ञाता भाई श्री शशि जी भावनगर का निधन हो गया।

. मार्च 1999 को साहित्यप्रेमी श्री विद्याचन्द गुलाबचन्द कोठारी गुलबर्गा का निधन हो गया।

9. मार्च 1999 को प्राकृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान डा. नथमल टाटिया, वाराणसी का निधन हो गया।
10. मार्च 1999 को विद्यानन्द शोध संस्थान बड़ौत के निदेशक डा. प्रेम सागर जैन का निधन हो गया।
11. 11 जनवरी 1999 को अनन्त ज्योति विद्यापीठ से सम्मानित डा. नन्दकिशोर देवराज, लखनऊ का निधन हो गया।
12. मार्च 1999 को शोध पत्रिका तुलसी प्रज्ञा के सम्पादक डा. परमेश्वर सोलंकी, लाडनूँ का देहावसान हो गया।
13. 19 अप्रैल 1999 को वयोवृद्ध बाल ब्रम्हचारी धर्म मंगल के संरक्षक श्री हीरालाल खुशालचन्द्र दोशी सदाशिवनगर (महाराष्ट्र) का निधन हो गया।
14. 24 मई 1999 को लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान पं. बलभद्र जैन दिल्ली का निधन हो गया।
15. 25 मई 1999 को जैन गजट के प्रधान सम्पादक पं. श्यामसुन्दर लाल शास्त्री फिरोजबाद का निधन हो गया।
16. 28 जून 99 को अनन्त ज्योति विद्यापीठ द्वारा सम्मानित बा. जगजोत सिंह जैन का निधन

(शेष पृ. 152)

यत्र तत्र सर्वत्र वर्ष १९९९ में सम्पन्न साहित्यिक गतिविधियां

१. २-३ जनवरी को प्राकृत भाषा की पुव्वागम की परम्परा राष्ट्रीय विचार गोष्ठी श्रवणबेलगोला में कर्मयोगी चारुकीर्ति जी भट्टारक की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

२. ४-६ जनवरी ९९ को भोगीलाल लहेरचंद इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डोलाजी दिल्ली के तत्वाधान में आ. उमास्वाति और उनका अवदान पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न हुई।

३. कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के संस्कृत एवं प्राच्य विद्या संस्थान द्वारा भगवान ऋषभदेव के निर्वाणोत्सव पर १६-१७ जनवरी को भगवान ऋषभदेव शिक्षा एवं दर्शन पर संगोष्ठी का आयोजन हुआ।

४. १६-१८ जनवरी को भुवनेश्वर में ऋषभदेव फाउण्डेशन नई दिल्ली तथा एडवांस सेन्टर फार इण्डोलाजिकल स्टडीज भुवनेश्वर के संयुक्त तत्वाधान में खारवेल महोत्सव एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

५. १९-२० फरवरी ९९ को अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना का सप्तम स्थापना समारोह महिला सम्मेलन एवं सदाचार व्याख्यान माला के रुप में सम्पन्न हुआ।

६. १०-११ अप्रेल ९९ को अहमदाबाद में आर्य भद्रबाहु एवं उनका साहित्य विषय पर विद्वत संगोष्ठी आयोजित हुई।

७. २-५ जुलाई को फिलाडेलफिया (यू.एस.ए.) में जैन एसोसियेशन आफ इंडियन आफ नार्थ अमेरिका का दसवां द्विवार्षिक कन्वेंशन सम्पन्न हुआ।

८. १९ अगस्त ९९ को कुन्दकुन्द ज्ञान पीठ इन्दौर में क्षु. १०५ जिनेन्द्र वर्णी स्मृति व्याख्यान के रुप में व्याख्यान माला सम्पन्न हुई।

९. २-३ अक्टूबर को श्री गणेश वर्णी संस्थान नरिया, वाराणसी में सिद्धान्ताचार्य पं. फूलचन्द्र जी शास्त्री स्मृति चतुर्थ व्याख्यानमाला सम्पन्न हुई।

१०. १५-१६ अक्टू. को अजमेर में मथुरा के जैन स्तूप एवं कंकाली टीले के सांस्कृतिक वैभव पर संगोष्ठी हुई।

११. २४-२६ अक्टू. को अलवर में मुनि श्री १०८ सुधासागर जी के सानिध्य में आचार्य जिनसेन कृत आदिपुराण संगोष्ठी सम्पन्न हुई।

१२. १३-१५ अगस्त ९९ को द्रोणगिरि में आचार्य श्री १०८ देवनंदी जी के सानिध्य में अखिल भारतवर्षीय विद्वत संगोष्ठी का आयोजन हुआ।

१३. २१-२३ नवम्बर को अजमेर में उपा. ज्ञानसागर जी के सानिध्य में डा. हीरालाल जैन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संगोष्ठी का आयोजन हुआ।

१४. १९-२३ नवम्बर के मध्य में झाड़ोल (उदयपुर) में आचार्य कनकनंदी जी महाराज के सानिध्य में सर्वोदय शिक्षा मनोविज्ञान राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी सम्पन्न हुई।

१५. दिग. जैन महासमिति के रजत जयन्ती वर्ष की स्मृति में इन्दौर में संत शिरोमणि आचार्य

श्री १०८ विद्यासागर जी के सानिध्य में दिग. जैन महासमिति एकता शंखनाद समारोह का आयोजन किया गया।

१६. २५ अक्टूबर को दिल्ली में गणिनी श्री ज्ञानमती माता जी के जन्म दिवस पर तीर्थंकर ऋषभदेव संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

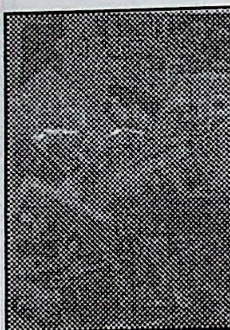
अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना का एक पवित्र संकल्प "बुन्देलखण्ड में जैन संस्कृति का उद्भव एवं विकास" ग्रन्थ प्रकाशन की प्रायोजना

बुन्देलखण्ड धरा का वैभव ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, पुरातात्विक आदि दृष्टि से अपना विशिष्ट स्थान रखता है किन्तु यत्र तत्र बिखरा हुआ है। आज तक कोई ऐसा समग्र ग्रन्थ प्रकाशित नहीं हुआ कि जिसमें समस्त वैभव को समन्वित किया गया हो। इस बात की कमी एक लम्बे समय से महसूस की जा रही है। अनेक विद्वत् मनीषियों के परामर्श एवं सहयोग से अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान ने १ जनवरी २००० की सुप्रभात की मंगल बेला में इस कार्य को करने का निर्णय लिया है। ग्रन्थ की रुप रेखा इस समय निम्न खण्डों के आधार पर निश्चित की गई है। ग्रन्थ को सार्वभौमिक व्यामोह रहित बनाने के लिए समय समय पर परिचर्चा संगोष्ठी के रुप में विद्वानों को आमंत्रित किया जावेगा, हमारा विद्वत मनीषियों से निवेदन है कि इन खण्डों में से आप जिस खण्ड में भी कार्य कर सकते हैं। कृपया पत्राचार द्वारा अपनी अभिरुचि का परिचय दें।

बुन्देलखण्ड में जैन संस्कृति का उद्भव एवं विकास ग्रन्थ के सम्भावितखण्ड

१. बुन्देलखण्ड के जैन तीर्थ। २. बुन्देलखण्ड में जन्में साधु एवं उनकी कृतियों का परिचय।
३. बुन्देलखण्ड के जैन संग्रहालयों का परिचय।
४. बुन्देलखण्ड के शोध संस्थान एवं श्रुत भण्डार।
५. बुन्देलखण्ड के विद्वत् मनीषी एवं उनकी कृतियों का परिचय।
६. बुन्देलखण्ड के जैन कवियों का परिचय।
७. बुन्देलखण्ड की जैन प्रतिभाएं (संगीत, नृत्यकला आदि के क्षेत्र में)
८. बुन्देलखण्ड में जैनधर्म पर शोधकार्य जैन एवं जैनेत्तर द्वारा।
९. बुन्देलखण्ड में जैन शोधार्थियों द्वारा जैनेत्तर विषयों पर शोधकार्य किया हो उसका परिचय।
१०. बुन्देलखण्ड के जैन पत्रकार। ११. बुन्देलखण्ड में जैन संस्थायें।
१२. बुन्देलखण्ड में जैन शिक्षण संस्थाओं के उत्थान में पू.क्षु. १०५ गणेशप्रसाद जी वर्णी का योगदान।
१३. बुन्देलखण्ड में जैन स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, राष्ट्रीय कार्यकर्ता एवं श्रेष्ठी प्रमुख।
१४. बुन्देलखण्ड में इतिहास और भूगोल।
१५. बुन्देलखण्ड में जन्मी जैन जातियां एवं बसी जैन जातियां।

अनेकान्त दर्पण 99 समीक्षाओं के क्षितिज पर



अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना सप्तम् स्थापना समारोह 20 फरवरी 1999 को प्रकाशित एवं विमोचित पत्रिका का सर्वत्र स्वागत हुआ। देश के लगभग 12 प्रांतों के 500 शहरों के लगभग 25000 पाठकों ने पत्रिका का समादर किया। देश के सभी शोध संस्थानों, पत्रकारों के साथ लगभग 400 मनीषी विद्वानों के साथ ही वर्षावास में लगभग 300 साधु संघों में अनेकान्त दर्पण उपहार स्वरुप भेजी गई। पत्रिका की समीक्षा से सम्बन्धित अनेक समालोचनाएं प्राप्त हुईं हैं जिनमें कुछ सारभूत अंशों को बानगी के रुप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

(1) शोध पत्रिका अर्हत्वचन जुलाई 99 में प्रकाशित समीक्षा

20 फरवरी 1992 को सरल ग्रन्थालय के रुप में जिस संस्था की स्थापना हुई थी, वह इसके संस्थापक एवं समर्पित साधक ब्र. संदीप जैन सरल के अहर्निश श्रम से आज एक शोध संस्थान का रुप ले चुका है। मार्च 1995 से गांव गांव जाकर प्राचीन जैन पांडुलिपियों की खोज का उनका अभियान अब आंदोलन बन चुका है। भाई संदीप जी ने अपनी टीम के साथ कार्य करते हुए 4 वर्षों में 200 ग्रामों का सर्वेक्षण कर लगभग 3500 पांडुलिपियों का संकलन किया है। संग्रहीत पांडुलिपियों, उनके वैशिष्ट्य आदि की जानकारी देने, पांडुलिपियों के संकलन, संरक्षण के बारे में सम्यक् जनचेतना जाग्रत करने हेतु संस्था ने अपनी वार्षिकी के प्रकाशन का निर्णय लिया, जिसकी सफल परिणति है - अनेकांत दर्पण।

विद्वान सम्पादक द्वय ने इस प्रवेशांक में संस्था एवं उसके कार्यक्षेत्र से सम्बद्ध महत्वपूर्ण सामग्री का संकलन किया है, जो पठनीय एवं संकलनीय है। मुझे इस अंक के निम्नांकित आलेखों ने विशेष प्रभावित किया।

1. गंधहस्ति महाभाष्य के कुछ शोध विन्दु - प्रा. कुन्दनलाल जैन, दिल्ली
2. पांडुलिपियों की सम्पादन विधि - डा. भागचन्द भास्कर नागपुर
3. कतिपय विशिष्ट अप्रकाशित ग्रंथ - ब्र. संदीप सरल, बीना
4. जैन पांडुलिपियों की वर्तमान दशा, दिशा व समाधान-डा. कस्तूरचंद 'सुमन' महावीरजी

ब्र. संदीप जी का शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान एक सर्वेक्षण लेख भी प्रेरणादायक है। हमें विश्वास है कि अनेकांत दर्पण शीघ्र ही अपनी आवृति बढ़ाकर जिनवाणी की सेवा में और अधिक योगदान देगी।

(2) शोध पत्रिका श्रमण जुलाई-सितम्बर 99 में प्रकाशित समीक्षा

प्रस्तुत पत्रिका दिगम्बर जैन समाज बीना (सागर) के सहयोग एवं ब्रम्हचारी श्री संदीप

जैन 'सरल' के मार्गदर्शन में स्थापित अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान के वार्षिक मुखपत्र का प्रवेशांक है। अनेकांत ज्ञान मंदिर द्वारा ब्रम्हचारी जी के सानिध्य में प्राचीन हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के अन्वेषण एवं उनके संरक्षण का जो महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है उससे जैन समाज भली भांति सुपरिचित है। प्रस्तुत अंक में जैन धर्म के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानों के लेखों को स्थान दिया गया है। इसके अलावा इसमें अनेकांत ज्ञान मंदिर के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों द्वारा लिखे गये लेखों को भी संकलित किया गया है। पत्रिका के अंत में 10 बहुरंगी चित्र भी दिये गये हैं। जो इस ज्ञान मंदिर का सजीव रुप हमारे सामने उपस्थित करते हैं।

ब्रम्हचारी श्री संदीप जैन 'सरल' के अथक परिश्रम से यह संस्था दिनोदिन विकास के पथ पर अग्रसर हो रही है और उनके इस ज्ञानयज्ञ में जैन समाज का जो सक्रिय सहयोग प्राप्त हो रहा है, उन सभी का पूरा पूरा विवरण इस पत्रिका में सहज ही उपलब्ध है। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर यहां संक्षिप्त विभिन्न सचित्र पाण्डुलिपियों के रंगीन चित्र दिये गये हैं, जिनसे इसका स्वरुप अत्यन्त आकर्षक हो गया है। यह पत्रिका प्रत्येक पुस्तकालयों के साथ-साथ जैन धर्म-दर्शन में रुचि रखने वाले शोधार्थियों तथा सामान्य पाठकों के लिये भी उपयोगी है। निश्चित रुप से इस शोध पत्रिका का सर्वत्र समादार होगा।

3. जैन महिलादर्श अगस्त 99 में प्रकाशित समीक्षा :-

समीक्षक - डॉ. नीलम जैन

अनेकान्त दर्पण अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान की एक विशिष्ट उपलब्धि है। 90 पृष्ठों में 25 आलेख विद्वानों के हैं तथा शेष 17 पृष्ठों में सात वर्षीय अनेकान्त ज्ञान मंदिर के छायाचित्र हैं। आज अनेकान्त ज्ञान मंदिर की ख्याति तीर्थ की भांति दूर दूर तक व्याप्त है। जैनागम का यह विशाल केन्द्र बन गया है। इसमें हजारों पाण्डुलिपियां एवं मुद्रित ग्रन्थ हैं जिन्हें भारत के सैकड़ों नगरों के शास्त्रभण्डारों से एकत्रित किया गया है। ब्र. संदीप जी सरल जो स्वयं को जिनवाणी शिशु कहते हैं पूर्ण श्रद्धा व समर्पण से नगर-नगर, डगर-डगर, धूम धूम कर शास्त्रों के सही संरक्षण की अलख जगा रहे हैं, उनकी शास्त्रों की दुर्दशा देख देखकर उपजी पीड़ा व्यथा ही उनकी इस महती प्रेरणा का कारण बनी। उनके प्रयास की सर्वत्र सराहना भी हुई तथा उन्हें भरपूर सहयोग भी मिला और मिल रहा है। अनेकान्त दर्पण में विद्वानो, मुनिराजों, श्रेष्ठियों ने मुक्तकंठ से इस पुनीत कार्य की प्रशंसा की है। सम्पादन कौशल सर्वत्र दर्शनीय पत्रिका का मुखपृष्ठ तो वस्तुत: अनेकान्त का दर्पण बन गया है। हस्तलिखित सचित्र पाण्डुलिपियों को बहुत ही सुन्दर ढंग से सैटकर कवर पृष्ठ बना है जिसको देखते ही अंतरंग प्रतिबिम्बित हो जाता है।

4. शोधादर्श, लखनऊ मार्च 99 के अंक में प्रकाशित समीक्षा -

ब्र. संदीप जैन 'सरल' के अध्यवसाय से स्थापित अनेकान्त ज्ञान मंदिर ने अब शोध

संस्थान का रुप ले लिया है, जो प्रसन्नता की बात है। संस्थान द्वारा पत्रिका का प्रवेशांक प्रकाशित किया गया है। 33 शीर्षकों के अन्तर्गत अनेकान्त ज्ञान मंदिर का और उसके उद्देश्यों एवं कार्यकलापों का परिचय इसमें समाहित है। इस आयोजन से सम्बन्धित सभी धीमान् और श्रीमान् साधुवाद के पात्र हैं।

5. तारण बन्धु भोपाल में प्रकाशित समीक्षा -

अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना द्वारा अनेकान्त दर्पण का प्रकाशन किया गया है अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना जिनवाणी के संरक्षण और सम्वर्द्धन का अति महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। अनेकान्त ज्ञान मंदिर में जुड़े ज्ञानात्मक क्रिया कलापों, शोध कार्यों, जिनवाणी प्राचीन हस्तलिखित पाण्डुलिपियों, ताड़पत्रों पर लिखित ग्रन्थों को खोजकर उन्हें सुरक्षित करना, अप्रकाशित ग्रन्थों को प्रकाशित कराना आदि कई कार्य संस्था द्वारा किये जा रहे हैं जिनवाणी ही जैन समाज का प्राण है, धरोहर जिनवाणी की रक्षा एवं प्रचार-प्रसार स्तुत्य कार्य है। संस्था की गतिविधियों को प्रकाश में लाने के उद्देश्य से पत्रिका का प्रकाशन जनोपयोगी है।

(पृष्ठ ६१ का शेष)

गाढ़ अंधकार में सूरज, चांद, सितारे पीढ़ी-पीढ़ी के लिये उदित हो चमक कर शोभाश्री बढ़ाने की तरह आपकी संस्था अनेकान्त ज्ञान मंदिर है और रहेगी। ज्ञान और शोध की पिपासा दिलासा के साथ हाथों से हाथ मिलाकर, जिलाकर सोई हुईं आस्थायें/संरक्षण की नब्ज में फिर फुक जायेंगी। जान-आन-मान-इम्तिहान के साथ जूझेगा इन्सान, आप जैसा विद्वान, कि जिसने खो दी है हीरो की खान, समय की पहिचान कर।

डीमापुर **पं. प्रेमचंद जैन, दिवाकर शास्त्री**

It is with great pleasure that I am visiting this library, I have come very late in the evening route from Malhargarh to Sagar and so am unable to stay for an adegvote length of time. But I will do what I can to publisher your excellent work among scholars and the Jain Community in the u.s. and Europe, You are performing an invaluable Task.

Prof. Jhon. E. Cort
Dept. of Religion Denison University
Granville, Ohio-43023 (U.S.A.)
Cort @ denison.edu.

आचार्यों, मुनिजनों की पावन अनुकम्पा दृष्टि

प्रस्तुति, सुश्री प्रीति जैन

१. श्री ब्र. संदीप जी ने बड़े कष्ट एवं लगन से गांव गांव जाकर हस्तलिखित ग्रन्थों का संकलन करके उन्हें अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना में सुरक्षित रखा है। बहुत से ग्रन्थ अप्रकाशित हैं तो उनका प्रकाशन भी होना चाहिए। अत: यह कार्य स्तुत्य व सराहनीय है। मेरा मंगल आशीर्वाद है।

प्रवास-सम्मेद शिखर — **तीर्थरक्षा शिरोमणि अनगार आर्यनंदि**

२. श्री ब्र. संदीप जी सरल के द्वारा समस्त जैन आचार्यों के द्वारा लिखित आगम की सुरक्षा हेतु जो कदम उठाया गया है वह सराहनीय है।

प्रवास-बोरीवली, मुम्बई — **गणधराचार्य कुन्थुसागर**

३. प्राचीन पाण्डुलिपियों के संरक्षण-सम्वर्द्धन का ऐतिहासिक कार्य धर्म प्रेमी नगरी बीना में अनेकान्त ज्ञान मंदिर की स्थापना करके प्रारम्भ किया गया है। कार्य की सफलता हेतु मेरा आशीर्वाद है।

प्रवास-मधुवन — **आचार्य भरत सागर**

४. ब्र. श्री संदीप जी ने यह जिनवाणी का कार्य करके केवल ज्ञान ज्योति की भूमिका तैयार की है। मंगलमय शुभ आशीर्वाद।

प्रवास-जैन भवन, गया — **आचार्य सिद्धान्त सागर**

५. प्रकृति ने प्राकृत दी, संस्कृति ने संस्कृत दी किन्तु विकृति ने क्षति ही दी। अच्छा हुआ ब्र. श्री संदीप जी ने इस ओर कदम बढ़ाये, लोगों ने साथ दिया। एतदर्थ शुभाशीष।

प्रवास-ललितपुर — **आचार्य-विराग सागर**

६. आप जो कार्य कर रहे हैं सो निश्चित ही आपके हृदय कमल में सम्यग्ज्ञान की स्थापना होगी, यही मेरा आपके लिए आशीर्वाद है।

प्रवास-तालबेहट — **आचार्य - चन्द्रसागर**

७. जिनवाणी के प्रचार एवं संरक्षण-सम्वर्द्धन के उद्देश्य से किया जा रहा कार्य सराहनीय है। श्री ब्र. संदीप जी व सभी को शुभाशीष।

प्रवास-मड़ावरा — **आचार्य कुमुदनंदी**

८. अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना द्वारा जैन वाङ्मय की जो अद्वितीय सेवा की जा रही है, इस पवित्र कार्य हेतु सभी श्रुत-ज्ञान का दान देकर पवित्र करें। इस कार्य में जुड़े सभी कार्यकर्ताओं को मेरा आशीर्वाद है।

प्रवास-यमुना बिहार, दिल्ली — **देशनादिवाकर युवाचार्य नेमिसागर**

९. "संकल्प शक्ति मनोरथ पूरणी" के अनुसार अनेकान्त ज्ञान मंदिर नामक संस्था का आविर्भाव जिनवाणी संरक्षण का अत्यन्त सफलतम किन्तु दुरुह प्रयास है। मां जिनवाणी का अमृतपान आध्यात्मिक पुष्टीदाता है। उसका संरक्षण भी पाप मोचक है। ब्र. संदीप भैया का प्रयास अनुकरणीय है उन्हें एवं उनके सहयोगी लोगों को अनेकश: मंगल आशीर्वाद।

प्रवास-जयपुर — **आचार्य वर्धमानसागर**

१०. हमारे देश की संस्कृति इसलिये सुरक्षित एवं सम्वर्द्धित है, कारण यहां पर साहित्य सुरक्षित है। पाण्डुलिपियों में भी कालानुरुप परिवर्तन आता जा रहा है, उन्हें सुरक्षित रखना अत्यन्त आवश्यक है। इस विषय में कदम बढ़ाये हैं श्रीमान ब्र. संदीप जी ने इस महान भागीरथ पुरुषार्थ हेतु आशीर्वाद।

उपाध्याय आनंद सागर मौनप्रिय

सरोजनी नगर, दिल्ली

११. प्राचीन विलुप्त वाङ्मय के संरक्षण, सम्वर्द्धन हेतु ब्र. संदीप जी द्वारा स्थापित अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना बहुत ही अच्छा कार्य कर रहा है। ब्र. संदीप जी सम्राट चंद्रगुप्त के स्वप्न को पूर्ण साकार कर रहे हैं। कार्य के उत्कर्ष हेतु मेरा पूर्ण आशीर्वाद है।

प्रज्ञा श्रमण आचार्य देवनंदी

प्रवास - शाहगढ़ (म.प्र.)

१२. तीर्थक्षेत्र कमेटी की तरह ही अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना परिपक्व कार्य कर रहा है। महान भागीरथ प्रयास के लिये शुभ आशीर्वाद।

आचार्य दयासागर

प्रवास-नेमीगिरि बण्डा

१३. शास्त्रों की अविनय आवरण का कारण, ऐसा विचार का श्री ब्र. संदीप जी ने उन्हें व्यवस्थित कर गांव गांव जाकर उन्हें लाने का जो प्रयास किया है, वह सराहनीय है। उन्हें हमारा शुभ आशीर्वाद

मुनि सरलसागर

प्रवास-महाराजपुर

१४. इस पवित्र कार्य हेतु श्रुत की सेवा का व्रत लेकर जुटे हुये ब्र. संदीप जी एवं सभी सहयोगियों को मेरा शुभ आशीर्वाद है।

उपाध्याय नयनसागर

प्रवास-यमुना बिहार, दिल्ली

१५. हमारा आशीर्वाद है कि अनेकान्त ज्ञान मंदिर, बीना अपने उद्देश्यों तथा कार्यों में पूरी सफलता प्राप्त करे।

मुनि भूतबलि सागर

भूलेश्वर, बम्बई

१६. आशीर्वाद ब्र. श्री संदीप जी को, कि आपने जिनवाणी संग्रह एवं संरक्षण में अपना अमूल्य समय, समय के साथ समय को दे रहे हैं, इसका मूल्य आने वाला समय ही बतलायेगा।

उपाध्याय श्रुत सागर

प्रवास-कुन्दकुन्द भारती, दिल्ली

१७. मां जिनवाणी के समीचीन आराधना में अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना समयोचित कार्य कर रहा है अल्पावधि में संसाधनों के अभाव में भी जो कार्य इस संस्थान ने किया है वह स्तुत्य एवं अनुकरणीय है। हमारा मंगल आशीर्वाद।

उपाध्याय ज्ञानसागर

प्रवास-अजमेर

१८. समाज को मेरा आशीर्वाद है कि सिसकती - सुबकती जिनवाणी माता के दर्द को कम करने वाले इस परम अभियान में तन, मन और धन देकर पवित्र कर लें। इस महान कार्य के लिये हमारा मंगल आशीर्वाद।

मुनि सुविधि सागर

प्रवास - अजमेर

साधु संघों में श्रुताराधना

वर्ष १९९९ में शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान के अन्तर्गत संस्थापक ब्र. संदीप जी सरल अपने कार्यकर्ताओं के साथ साधु संघों में पहुंचे। सभी संघों में जाकर अनेकान्त ज्ञान मंदिर की संचालित गतिविधियों का परिचय देते हुये अनेकान्त दर्पण एवं संस्थान समाचार पत्रिकायें समर्पित की। सभी साधु संघों ने अनेकान्त ज्ञान मंदिर के पुनीत सृजनात्मक कार्य हेतु वरद आशीर्वाद प्रदान किया।

नेमावर में सन्त शिरोमणि आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी ससंघ, बण्डा में आचार्य श्री १०८ दयासागर जी, शाहगढ़ में आचार्य श्री १०८ देवनंदी जी ससंघ, दिल्ली में आचार्य श्री १०८ विद्यानंद जी, आचार्य श्री १०८ नेमिसागर जी, जयपुर में आचार्य श्री १०८ वर्धमान सागर जी ससंघ, गिरनार में आचार्य श्री १०८ निर्मल सागर जी, धार में आचार्य श्री भरत सागर जी, सांची में आचार्य श्री कुशाग्रनंदी जी, नागपुर में आचार्य श्री पदमनंदी जी, गन्नौर मण्डी में आचार्यरत्न धर्मभूषण जी, झालरापाटन में आचार्य चंद्रसागर जी, समसाबाद में आचार्य विमल सागर जी, दिल्ली में उपाध्याय श्रुतसागर जी, उपाध्याय कामकुमार नंदी जी, अजमेर में उपाध्याय ज्ञानसागर जी, अचलगढ़ में उपाध्याय विद्यासागर जी, भानपुरा में गुरुवर श्री १०८ सरल सागर जी, बण्डा में मुनि निर्णय सागर जी, मुनि विशद सागर जी, गोशलपुर में मुनि संवेद सागर जी, डूंगरपुर में मुनि प्रज्ञासागर जी मुनि प्रसन्न सागर जी चांदखेड़ी में मुनि सूर्यसागर जी, सहजपुर में मुनि चिन्मय सागर जी, मुनि पावन सागर जी, भोजपुर में मुनि समता सागर जी, मुनि प्रमाणसागर जी, झांसी में मुनि विशुद्ध सागर जी, रोहतक में मुनि सौरभ सागर जी, दिल्ली में मुनि तरुण सागर जी, मुनि वरदत्त सागर जी, टोंक में मुनि कुलभूषण नंदी ससंघ, झालाबाड़ में मुनि आदिसागर जी, जयपुर में आर्यिका सुपार्श्वमति जी, केकड़ी में आर्यिका विशुद्धमति जी, तारंगा में आर्यिका दृढ़मति जी ससंघ, जबलपुर में गुरुमति माता जी ससंघ, सागर में आर्यिका सत्यमति माता जी, सोनीपत में आर्यिका लक्ष्मीभूषण जी, बबीना में ऐलक आदर्शसागर जी, इन्दौर में ऐलक सिद्धान्त सागर जी, जबलपुर में ऐलक दयासागर जी, उज्जैन में क्षु. देवानंद जी, क्षु. दिव्यानंद जी, मुंगावली में क्षु. विवेकानंद जी, बीना में क्षु. शीतल सागर जी, क्षु. निशंक सागर जी आदि।

प्रस्तुति - शैलेन्द्र जैन, मंत्री
अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान, बीना

क्या कहते हैं हमारे दर्शक गण

कलकत्ता महानगर में अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना द्वारा आयोजित प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ प्रदर्शनी देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ब्र. सरल जी ने आजीवन ब्रम्हचर्य लेकर इन शास्त्रों की सुरक्षा करने का जो कार्य हाथ में लिया है वह सराहनीय, अनुकरणीय एवं हर तरह से सहयोग करने योग्य है। मैं अपना तन मन और धन से सहयोग करने के लिए तत्पर हूं।

राजकुमार सेठी, कलकत्ता

अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना द्वारा प्राचीन दुर्लभ हस्तलिखित ग्रन्थों की प्रदर्शनी देखकर अचंभित सा हो गया कि सैकड़ो वर्ष प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों का संकलन कर लेना उनको उचित ढंग से सहेजकर रखना सचमुच एक अनूठा कार्य है।

राजेन्द्र पटोरिया, नागपुर (महा.)

अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना में ब्र. संदीप जी के सद्प्रयासों से मां जिनवाणी की जिस प्रकार सेवा की जा रही है, उसका एक छोटा सा नमूना गुवाहाटी जैन मंदिर में आयोजित प्रदर्शनी को देखकर मन प्रसन्नता से भर गया। सारे देश में प्राचीन ग्रन्थ जीर्ण-शीर्ण अवस्था में बिखरे पड़े हैं, उनके संकलन एवं संरक्षण का कार्य अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना कर रहा है। वह अत्यन्त सराहनीय एवं अनुकरणीय है। आपके इस पुनीत कार्य में सदैव साथ हूं।

हुकुमचंद सरावगी, अध्यक्ष, पूर्वांचल महासभा, गुवाहाटी (असम)

---

20 अगस्त 99 का दिन सार्थक हुआ। मां जिनवाणी के संरक्षण का दायित्व निभाने का यह प्रयास करके सम्पूर्ण समाज को बता दिया कि यदि समर्पण हो तो असम्भव को भी सम्भव किया जा सकता है। अनेकान्त ज्ञान मंदिर में प्राचीन ग्रन्थों के रख रखाव का कार्य अनुकरणीय है।

राजुल देवी सेठी, मंत्री, महिला परिषद, विजयनगर (असम)

समय की मांग है कि मां जिनवाणी के दुर्लभतम ग्रंथों की सुरक्षा एवं संरक्षण का होना बहुत जरुरी है। इस महान धरोहर को एकत्रित कर उनकी साज, संभाल करने का बीड़ा ब्र. सरल जी ने उठाया है। प्रत्येक जैन बन्धु इस कार्य में सहयोगी बनें।

शान्ता जैन, उपाध्यक्ष दिग. जैन महासमिति, सोनीपत (हरि.)

प्राचीन संस्कृति को जीवित रखने का एक अनूठा प्रयास है। मैं अनेकान्त ज्ञान मंदिर की भावी सफलता की हार्दिक कामना करता हूं। ताड़पत्र पर अंकित "भक्तामर स्तोत्र" को देखकर

आचार्य मानतुंग की अलौकिक छबि सामने आ गयी।

दुलीचंद जैन, बाहुबली इन्क्लेव, दिल्ली

अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना द्वारा प्रदर्शित इस ज्ञान दर्पण से आंखे खुली सी रह गयीं। जिन शास्त्रों का वर्णन और हस्तलिपियों के सम्बन्ध में केवल सुना मात्र था, उनके दर्शन से मन को अपार प्रसन्नता हुई। आशा है भविष्य में भी इनका इसी प्रकार से संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार होता रहेगा।

दीपा जैन, मंत्री, महिला समिति, ऋषभ बिहार, दिल्ली

आपकी मां जिनवाणी के प्रति श्रद्धा देखकर मन गद् गद् हो गया। भगवान से प्रार्थना है कि आप इस कार्य को हमेशा उन्नति के शिखर पर पहुंचाते रहें।

प्रवीण कुमार जैन, करनाल (हरियाणा)

अनेकान्त ज्ञान मंदिर में आकर हम लोग अपने को बहुत गौरान्वित अनुभव कर रहे हैं। यहां प्राचीन ग्रन्थों के संरक्षण के लिये जो कुछ भी हो रहा है, वह अद्वितीय और अनुकरणीय है। इस प्रयास से न केवल ग्रन्थों का संरक्षण होगा, अपितु पूरे समाज को लाभ होगा। यहां आकर हार्दिक प्रसन्नता है। यह संस्था अब हमारी अपनी है। इसमें कोई संदेह नहीं है। इसकी उन्नति के लिये जो कुछ भी होगा उसमें हमारा पूर्ण सहयोग होगा।

डा. ओ.पी. अग्रवाल, महानिदेशक, इन्टेक, लखनऊ

आपकी संस्था देखने का कौतूहल मन में था, आकर प्रत्यक्ष अवलोकन कर रहा हूं कि इस ग्रन्थागार से असीमित सम्भावनायें हैं।

डा. सुधांशु कुमार जैन, निदेशक, लखनऊ

आपने अपने सतत प्रयासों से थोड़ी सी अवधि में बहुत बड़ी उपलब्धि प्राप्त कर जिनवाणी की अनुपम और अनुकरणीय सेवा की है।

डा. सुरेश जैन, आई.ए.एस., भोपाल

अनेकान्त ज्ञान मंदिर संस्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण ज्ञान पीठ है। आदरणीय ब्र. संदीप जैन भैया के भागीरथ प्रयत्न को प्रणाम करता हूं।

पं. शिवचरण लाल जैन, मैनपुरी

मुझे यहां आकर अपार खुशी हुई। सरल भैया की कड़ी मेहनत और लगन की हृदय से सराहना करता हूं।

प्रभुसिंह ठाकुर, पूर्व राज्यमंत्री म.प्र. शासन, बीना

दुर्लभ ग्रन्थों का संग्रह इतनी अच्छी प्रकार से किया गया है। अद्भुत पाया है, अनेकान्त ज्ञान मंदिर।

पं. निर्मल जैन, सतना

अनेकान्त ज्ञान मंदिर बुन्देलखण्ड की भूमि के लिए एक गौरव केन्द्र है।

डा. आशालता मलैया, सागर

ग्रन्थ भंडार अपने आप में एक अनूठी संस्था है। वैज्ञानिक तरीकों से ग्रंथों का संरक्षण होना चाहिये।

डा. अशोक जैन, ग्वालियर

अनेकान्त ज्ञान मंदिर उत्तरोत्तर वट वृक्ष की भांति विस्तार, वैभव व केवल ज्ञान का फल देने वाला हो।

पं. रतनचंद्र शास्त्री, तुकोगंज इन्दौर

यह प्राचीन ग्रंथों की पाण्डुलिपियों को देखने का सौभाग्य मिला निश्चित ही संस्थान कीर्तिमान स्थापित करेगा।

डा. अशोक कुमार जैन, जैन विश्वभारती संस्थान, लाड़नू (राजस्थान)

इतना बड़ा और समृद्ध ग्रन्थ संग्रह ज्ञानानुरागियों के लिए उपासना और साधना का सफल स्थल है। इस आध्यात्मिक अनुष्ठान के लिए संस्था के संस्थापक ब्र. संदीप जी का अभिनन्दन करता हूं।

शिवकुमार श्रीवास्तव कुलपति, डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

मैं आपके संकल्प का हार्दिक स्वागत करता हूं। आनन्द की बात है कि विगत छः वर्षों में जिनवाणी के संरक्षण हेतु जो कार्य इस संस्था ने किया है वह अभूतपूर्व है।

पद्मश्री यशपाल जैन, नई दिल्ली

अनेकान्त ज्ञान मंदिर वट वृक्ष बनती ज्ञानोन्मुख संस्था विशालता को ग्रहण करती जा रही है। इसकी जीवन गतिशीलता में ब्र. संदीप जी की कालजयी तपस्चर्या साधना विद्यमान है।

डा. नेमीचन्द्र जैन, संपादक तीर्थंकर, इन्दौर

उत्कृष्ट विचारों के धनी और ज्ञान की सुरक्षा में संलग्न अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना के सदप्रयत्नों की हृदय से सराहना करता हूं। यह अभिनव संस्था अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में

सफल होगी।

डा. दरबारी लाल कोठिया, न्यायाचार्य, बीना

प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की सुरक्षा व संरक्षण के लिए अनेकान्त ज्ञान मंदिर में किया जा रहा कार्य उत्यन्त सराहनीय है।

साहू रमेशचन्द्र जैन, अध्यक्ष, अ.भा.दि. जैन समाज, दिल्ली

शास्त्र संरक्षण से बड़ा कोई दूसरा कार्य नहीं है। इसका नाम भारतवर्ष में ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में फैलेगा।

पद्मश्री सुमतिबाई, सहा. संचालिका, श्राविकाश्रम, सोलापुर

बीना नगरी का पुण्य कि पूज्यवर्णी जी का लघु संस्करण हमें प्राप्त हुआ, ब्र. संदीप भैया के रुप में, जो समर्पण व सेवा का व्रत लेकर ज्ञान गंगा को आकाश में समेटकर अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान की जटाओं में समाने का भागीरथ प्रयास कर रहे हैं।

प्राचार्य पं. निहालचंद्र जैन, बीना

मां जिनवाणी की दयनीय दशा को देखकर संदीप भैया को जो टीस उठी, उसी ने सन् 1992 में जो बीजारोपण किया, वह पौधा अब अंकुरित होकर ऊपर आ गया है। समाज तथा श्रेष्ठिरुपी माली व विद्वानों को इसके विकास में सहयोग देना चाहिए।

डा. सुशील जैन, मैनपुरी

मुझे खुशी है कि अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना से जुड़े हुए उत्साही कार्यकर्तागण, प्राचीन पाण्डुलिपियों की सुरक्षा करने और उनके परिचय का प्रचार प्रसार करने गहरे मन से जुट गये हैं तथा अपने उद्‌देश्य में नित नूतन सफलताएं पा रहे हैं।

सुरेश सरल, जबलपुर

यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि पिछले लगभग पांच वर्षो में ही इस संस्था ने लगभग ५००० पाण्डुलिपियों का संग्रह विभिन्न ग्रामों व क्षेत्र में से कर लिया है। यह कार्य ब्र. संदीप जी के दृढ़ संकल्प का परिचायक है। दुर्लभ पाण्डुलिपियों के संग्रहण संरक्षण व संधारण में की गई इस सुन्दर पहल के लिये दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी व दिगम्बर जैन समाज जयपुर की ओर से बहुत-बहुत बधाईयां।

एन. के. सेठी
अध्यक्ष, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
श्री महावीर जी

जयपुर

(शेष पृष्ठ ८४ पर)

शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान

दौरा क्रमांक	दिनांक	स्थान का नाम	प्राप्त ग्रन्थ
५०	१४-२-९९	सिलवानी (म.प्र.)	१०
५१	६-३-९९	बण्डा (म.प्र.)	-
		शाहगढ़ (म.प्र.)	-
५२	२५-३-९९	झालरा पाटन (राज.)	३
	२७-३-९९	उज्जैन (म.प्र.)	-
	२८-३-९९	इन्दौर (म.प्र.)	-
	२९-३-९९	डूंगरपुर (राज.)	-
५३	१३-४-९९	भुसावल (महाराष्ट्र)	-
	१४-४-९९	जलगांव (महाराष्ट्र)	-
	१४-४-९९	धरणगांव (महाराष्ट्र)	-
	१५-४-९९	नेमावर (म.प्र.)	-
	१६-४-९९	इटारसी (म.प्र.)	-
	१६-५-९९	सारोला (राज.)	१२८
५५	२३-५-९९	बेलखेड़ा	१०
	२६-५-९९	सहजपुर (जबलपुर)	-
५६	३०-५-९९	डोंगरा खुर्द	३८
	३०-५-९९	पारोल	२३
	३०-५-९९	बांदरी	-

एक सर्वेक्षण रिपोर्ट वर्ष १९९९

अभियान में सहयोगी	ग्रन्थों का विवरण
शैलेन्द्र जैन, विपिन जैन, संजय जैन ललितपुर	सि. देवेन्द्रकुमार जी द्वारा ग्रन्थ प्राप्त हुए।
सुश्री प्रीति जैन एवं संगीता जैन	संस्कृत भाषा के ८ हिन्दी के २।
श्रीमती चन्द्रासिंघई, प्रदीप जैन, शैलेन्द्र जैन	आ. दयासागर जी चर्चा।
उपरोक्त	लगभग १०० ग्रन्थ हैं सुरक्षित दशा में हैं।
शैलेन्द्र जैन, संजय जैन, बीना	शांतिनाथ जिनालय में काफी ग्रन्थ हैं किन्तु दीमक के शिकार बन रहे हैं।
शैलेन्द्र जैन, संजय जैन, बीना	मुनि श्री १०८ ब्रम्हानंद सागर जी के सानिध्य में ऐलक पन्नालाल सरस्वती भण्डार का अवलोकन किया।
उपरोक्त	कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ का अवलोकन किया। ९१२ हस्त. ग्रन्थ विद्यमान हैं।
उपरोक्त	हस्तलिखित ग्रन्थों की जानकारी नहीं मिली
ब्र. सुनील जैन एवं सौरभ जैन, बीना	इधर से ग्रन्थ ९८ में प्राप्त हो गये थे।
उपरोक्त	मंदिर जी में हस्तलिखित ग्रन्थ नहीं हैं।
श्रीमती लीलाबाई जलगांव, नितिन जैन, बीना	लगभग १०० ग्रन्थ हैं। दीमक के शिकार बन रहे हैं। प्राप्त नहीं हो सके।
ब्र. सुशील जैन, सौरभ जैन	आचार्य श्री विद्यासागर जी को अष्टसहस्री भेंट की। मुनिसंघ में विशेष चर्चा हुई।
उपरोक्त	मंदिर में हस्तलिखित ग्रन्थ नहीं हैं।
श्री निहालचंद जी, निर्मलकुमार, शैलेन्द्र जैन विपिन जैन, सुश्री प्रीति, ज्योति एवं पूर्वी जैन गढ़ाकोटा।	हिन्दी भाषा में १०९ संस्कृत में १९
श्री निर्मलकुमार, राहुल जैन, अजय जैन, देवरी	हिन्दी ७, संस्कृत ३
श्री रमेश कुमार जैन, जबलपुर	ग्रन्थ नहीं है।
श्री निहालचंद, निर्मलकुमार, श्रेयांस जैन	हिन्दी भाषा में ३२, संस्कृत में ६
शैलेन्द्र जैन, निर्मल कुमार, श्रेयांस जैन	हिन्दी भाषा में २०, संस्कृत में ३
शैलेन्द्र जैन, निर्मलकुमार, श्रेयासं जैन	२५-३० ग्रन्थ हैं किन्तु प्राप्त नहीं हुए।

५७	१-६-९९	कंजिया	१
	१-६-९९	सेहराई	३
	१-६-९९	अचल गढ़	-
	१-६-९९	खिरकिट	४
	१-६-९९	मुहारी कलाँ	१५
	१-६-९९	छोटी मुहारी	१४
	१-६-९९	बामौर	-
५८	७-६-९९	खिमलासा	-
	१८-६-९९	रजवांस	१३
५९	२७-६-९९	अशोकनगर	-
	२७-६-९९	नईसराय	-
	२८-६-९९	पिपरई	-
६०	२१-७-९९	नागपुर (महा.)	८
	२२-७-९९	कामठी	-
६१	१३-८-९९	कलकत्ता	५
	१७-८-९९	गुवाहाटी (असम)	-
	२०-८-९९	विजयनगर (असम)	-
	२२-८-९९	मिर्जापुर (उ.प्र.)	५
६२	३०-८-९९	सलामत पुर (म.प्र.)	-
	३१-८-९९	रायसेन (म.प्र.)	३२

श्री विजयकुमार, निहालचंद, निर्मलकुमार विपिन जैन, आनंद जैन, प्रतीक जैन	पद्म पुराण हिन्दी ३
उपरोक्त	२५-३० ग्रन्थ हैं प्राप्त नहीं हुए।
उपरोक्त	सं. १३६४ की मूर्तियां हैं ग्रन्थ और भी हैं।
उपरोक्त	हिन्दी १२, संस्कृत ३
उपरोक्त	हिन्दी १४
उपरोक्त	२५-३० ग्रन्थ हैं प्राप्त नहीं हुए।
श्री बाबूलाल जैन, सौरभ जैन, शैलेन्द्र जैन, शिखा जैन, नेहा जैन	बड़े मंदिर के ८४ ग्रन्थों की सूची बनाकर लाए। छोटे मंदिर में भी ग्रन्थ हैं।
पं. सनतकुमार जैन आदि रजवांस	हिन्दी १२, संस्कृत १, श्रुत पंचमी के दिन बीना आकर ग्रन्थ दिए।
श्री निर्मलकुमार, शैलेन्द्र जैन, विपिन जैन श्रीमती रवि जैन, सुश्री प्रीति जैन	गंज मंदिर में ८४ ह.ग्र. व्यवस्थित हैं।
उपरोक्त	तलघर में ग्रन्थ हैं २ बार जाने पर भी सफल नहीं हो सके।
उपरोक्त	४५ ग्रन्थों की लिस्ट तैयार करके लाये।
शैलेन्द्र जैन, विपिन जैन, नीलेश जैन ईशुरवारा	अजितनाथ मंदिर से ८ ग्रन्थ प्राप्त हुये। परवारपुरा मंदिर के ९० ग्रन्थों का सूचीकरण एवं मोठे मंदिर से २२० ग्रन्थों का सूचीकर करके लाये।
शैलेन्द्र जैन, कमल कुमार जैन देवरी	बड़े मंदिर में अच्छा भण्डार है। अप्रकाशित ५ ग्रन्थों की फोटो कापी लेकर आए।
शैलेन्द्र जैन ...	हस्त. ग्रन्थ नहीं हैं।
	हस्त. ग्रन्थ नहीं हैं।
शैलेन्द्र जैन, कमल कुमार जैन देवरी	तारण तरण चैत्यालय से ५ ग्रन्थ प्राप्त हुये। बड़े मंदिर जी में अभी १४० ग्रन्थ हैं। लिस्ट लेकर आए।
श्री निहालचंद, निर्मलकुमार, अशोकनगर	८-१० ग्रन्थ हैं प्राप्त नहीं हुए।
उपरोक्त	हिन्दी भाषा में २७, संस्कृत में ३ अपभ्रंश में २।

६३	५-९-९९	बबीना (उ.प्र.)	-
	६-९-९९	कानपुर (उ.प्र.)	-
	१३-९ से २६-९	महानगर दिल्ली	२
६५	२८-९-९९	रोहतक (हरियाणा)	-
	२९-९-९९	पानीपत (हरियाणा)	-
		गन्नौर मण्डी	-
	३०-९-९९	सोनीपत	-
	१-१०-९९	समसाबाद	-
६६	२९-१०-९९	अजमेर (सोनी जी की नसियां)	१३००
	२७-१०-९९	झालाबाड़ (राज.)	-
	२९-१०-९९	ब्यावर	-
	३०-१०-९९	जयपुर (राज.)	-
	१-११-९९	अकलूज (महा.)	७
६७	१७-११-९९	महाराजपुर (म.प्र.)	-
	१८-११-९९	अमरमऊ (म.प्र.)	-

श्री रमेश कुमार जैन, संजय जैन	लगभग १०० ग्रन्थ हैं। प्राप्त हो सकते हैं।
उपरोक्त	बड़े मंदिर के ५०० ग्रन्थों का सर्वे किया ३५० ग्रन्थों की लिस्ट बनाकर लाये।
ब्र. जिनेश जैन बासौदा, कमलकुमार जैन, देवरी	दशलक्षण के अवसर पर १० मंदिरों में प्रदर्शनी लगाई। शाहदरा के छोटे मंदिर के ग्रन्थों का अवलोकन किया। प्रीतबिहार से पूजन संबंधी २ ग्रन्थ प्राप्त हुए।
कमल कुमार जैन देवरी	मंदिर जी में लगभग ३०० हस्तलिखित ग्रन्थ हैं।
उपरोक्त	मंदिर जी के शास्त्र भण्डार में लगभग ५५० हस्त. ग्रन्थ हैं जिनकी सूची लेकर आये।
उपरोक्त	२०-२५ ग्रन्थ हैं। प्राप्त नहीं हुये।
उपरोक्त	लगभग २०० ग्रन्थ हैं। सूची लेकर आये।
उपरोक्त	लगभग ३० ग्रन्थ हैं। प्राप्त हो सकते हैं।
शैलेन्द्र जैन, श्रेयांस जैन, विपिन जैन	श्री सहस्रकूट चैत्यालय से १३०० हस्तलिखित पाण्डुलिपियों में हिन्दी भाषा की ७००, संस्कृत भाषा में ४८५, प्राकृत भाषा में ६०, उभय भाषाओं में ५५ पाण्डुलिपियों प्राप्त हुईं हैं।
उपरोक्त	१५० ग्रन्थों का अवलोकन किया।
शैलेन्द्र जैन, श्रेयांस जैन, विपिन जैन	ऐलक पन्नालाल सरस्वती भण्डार में १००० हस्तलिखित ग्रन्थ हैं अवलोकन किया।
उपरोक्त	भट्टारक जी की नसियां में ४००० हस्त-लिखित पाण्डुलिपियां है, अवलोकन किया
श्री बाबूभाई गांधी, अकलूज	हिन्दी भाषा में ५, संस्कृत २
नरेश जैन बीना	८-१० हस्त. ग्रन्थ हैं।
उपरोक्त	लगभग ५० ग्रन्थ हैं जीर्णशीर्ण हो रहे हैं प्रयास करने पर भी प्राप्त नहीं हुए।

६८	१३-१२-९९	दाहोद (गुज.)	-
	१४-१२-९९	कोबा	-
६८	१६-१२-९९	भावनगर	१०
	२०-१२-९९	धार	-
	२०-१२-९९	नालछा	-
	२१-१२-९९	आष्टा	-
६९	३१-१२-९९	जबलपुर (म.प्र.)	४

शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान का प्रणयन २४ मार्च ९५ को किया गया था। इसके अन्तर्गत ६९ दौरों के माध्यम से म.प्र., उ.प्र., राजस्थान, हरियाणा, महाराष्ट्र, गुजरात, बंगाल, दिल्ली आदि प्रांतों के लगभग ३०० स्थानों से कुल ५००० हस्तलिखित ग्रन्थों की प्राप्ति हुई। अभियान क्र. १ से ४९ तक की सर्वेक्षण रिपोर्ट अनेकान्त दर्पण ९९ में प्रकाशित की गई थी। वर्ष ९९ में क्र. ५० से ६९ तक के दौरे किये गये, जिसमें लगभग १८०० हस्तलिखित ग्रन्थ प्राप्त हुये हैं।

संकल्प जैन, पवन जैन	बड़े मंदिर में ५० ग्रन्थ हैं।
उपरोक्त	महावीर आराधना केन्द्र में कैलाशसागर सूरि ज्ञान मंदिर अद्वितीयता की मिशाल है जो कि आदर्श है। अवलोकन किया।
संकल्प जैन, पवन जैन	श्री हीरालाल जी जैन भावनगर द्वारा १० हस्तलिखित ग्रन्थों की छाया प्रतियां प्राप्त हुईं जो वे विदेशी पुस्तकालयों से निकलवाकर लाये थे।
उपरोक्त	लगभग १०० हस्त. ग्रन्थ हैं व्यवस्थित हैं
उपरोक्त	८-१० ग्रन्थ जीर्ण शीर्ण हो रहे हैं।
उपरोक्त	१६५ हस्तलिखित ग्रन्थ बड़े मंदिर जी में है।
श्रीमती पुष्पा जैन हनुमान ताल जबलपुर ने ४ ग्रन्थ प्रदान किये।	

इस अभियान सर्वेक्षण में अनेक युवा बन्धुओं का एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं का सहयोग प्राप्त हुआ है। ग्रन्थों की प्राप्ति में मंदिरों के व्यवस्थापकों का जो सहयोग प्राप्त हुआ है, उन सभी के लिए धन्यवाद दिए बिना नहीं रह सकता हूं। समाज के बन्धुओं से एवं विद्वत मनीषियों से अपेक्षा करता हूं कि जहां पर हस्तलिखित ग्रन्थ उपलब्ध हैं वे सूचित करें ताकि ग्रन्थ सर्वेक्षण का कार्य किया जा सके।

सम्पर्क सूत्र -
ब्र. संदीप जैन 'सरल'
अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान
बीना (सागर) म.प्र.
फोन - (०७५८०) ३०२७६

"शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान के अन्तर्गत वर्ष 99 में निम्न स्थलों पर पाण्डुलिपि प्रदर्शनी" का आयोजन हुआ

क्र.	दिनांक	स्थल का नाम	विशेष विवरण
1.	1/1/99	श्री पार्श्वनाथ दिग. जैन बड़ा मंदिर, हनुमानताल, जबलपुर	श्रीमती विमला चौधरी ने शुभारम्भ किया।
2.	2/1/99	श्री पार्श्वनाथ दिग. जैन मंदिर अग्रवाल कालोनी, जबलपुर	धर्मसभा का आयोजन अच्छा रहा।
3.	3-5/1/99	श्री दिग.जैन मंदिर लार्डगंज,जबलपुर	धर्मसभाओं का आयोजन हुआ।
4.	6/1/99	श्री दिग.जैनमंदिर, शिवनगर,जबलपुर	धर्मसभा भी हुई।
5.	13-14/1/99	श्री दिग. जैन मंदिर सिलवानी	व्यवस्थित रुप से 3 धर्मसभायें हुईं। प्रभावना अच्छी हुई।
6.	6/3/99	श्री दिग. जैन मंदिर शाहगढ़ (सागर)	आचार्य श्री 108 देवनंदी जी के सानिध्य में धर्मसभा हुई।
7.	25/3/99	श्री दिग. जैन मंदिर झालरापाटन (राज.)	आ.श्री 108 चन्द्रसागर जी के सानिध्य में धर्मसभा।
8.	26/3/99	श्री दिग. जैन मंदिर भानपुरा (म.प्र.)	प.पू.गुरुवर श्री 108 सरल सागर जी का सानिध्य मिला।
9.	27/3/99	श्री पार्श्वनाथ दिग. जैन मंदिर फ्रीगंज, उज्जैन (म.प्र.)	पूज्य मुनि श्री 108 ब्रम्हानंद सागर जी ससंघ का सानिध्य रहा।
10.	29/3/99	श्री दिग. जैन मंदिर डूंगरपुर (राज.)	मुनि श्री 108 प्रज्ञासागर जी एवं मुनि श्री 108 प्रसन्नसागर जी के सानिध्य में धर्मसभा आयोजित हुई
11.	14/4/99	श्री दिग. जैन मंदिर भुसावल (महा.)	धर्मसभा का आयोजन किया।
12.	14/4/99	श्री दिग. जैन मंदिर जलगॉव (महा.)	धर्मसभा का आयोजन किया।
13.	22/7/99 23/7/99	श्री दिग. जैन मंदिर परवार पुरा, नागपुर	4 धर्म सभाएं हुई।
14.	14/8/99	श्री दिग. जैनमंदिर कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता	चौरंगी मंदिर, हबसन मंदिर में भी धर्मसभाओं का आयोजन किया।

15.	17-19/9/99	श्री दिग. जैन बड़ा मंदिर गुवाहाटी (असम)	4 धर्मसभाओं के माध्यम से ज्ञान प्रभावना हुई।
16.	20/8/99	श्री दिग. जैन मंदिर विजयनगर (असम)	धर्मसभा का आयोजन हुआ।
17.	22/8/99	श्री दिग. जैन मंदिर मिर्जापुर	क्षु. 105 तारण सागर जी के सानिध्य में धर्मसभा का आयोजन
18.	5/9/99	श्री दिग. जैन मंदिर बबीना (झांसी)	ऐलक 105 आदर्श सागर जी के सानिध्य में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ
19.	6/9/99	श्री दिग. जैन मंदिर जनरल गंज, कानपुर	धर्मसभा का आयोजन हुआ। श्री कमलेश कुमार जैन दातामन ने कम्प्यूटर प्रदान किया।
20.	14/9/99 15/9/99	श्री दिग. जैन मंदिर पार्श्वनाथ दिल्ली	दशलक्षण के प्रथम दिन प्रदर्शनी का शुभारम्भ किया। काफी उत्साह जाग्रत हुआ।
21.	16/9/99	श्री दिग. जैन मंदिर छोटा बाजार, शाहदरा दिल्ली	उपाध्याय श्री 108 श्रुतसागर जी के सानिध्य में धर्मसभा का आयोजन किया गया।
22.	17-18/9/99	श्री दिग. जैन मंदिर प्रीतबिहार, दिल्ली	ब्र. पुष्पादीदी एवं ब्र.सुनीता दीदी के सानिध्य में धर्मसभा हुई।
23.	19/9/99	श्री दिग. जैन मंदिर ऋषभ बिहार, दिल्ली	पं. देवेन्द्रकुमार शास्त्री के सानिध्य में धर्मसभा का आयोजन किया।
24.	20/9/99	श्री दिग. जैन मंदिर बाहुबली इन्क्लेव, दिल्ली	धर्मसभा का आयोजन किया गया।
25.	21/9/99	श्री दिग. जैन मंदिर गांधी नगर, दिल्ली	धर्म सभा हुई।
26.	22/9/99	श्री दिग. जैन मंदिर राजपुर रोड, दिल्ली	पं. श्री रतनचंद्रजी विनायका हजारीबाग के सानिध्य में धर्मसभा हुई।
27.	23/9/99	श्री दिग. जैन मंदिर मॉडल टाऊन, दिल्ली	ब्र. जयनिशांत टीकमगढ़ के सानिध्य में धर्मसभा हुई।
28.	24/9/99	श्री दिग. जैन मंदिर	पं. गुलाबचंद जी पुष्प टीकमगढ़

		शालीमार बाग, दिल्ली	एवं श्री राजकुमार जैन दिल्ली के सानिध्य में कार्यक्रम आयोजित
29.	25/9/99	श्री दिग. जैन मंदिर पीतमपुरा, दिल्ली	उपाध्याय 108 कामकुमार नंदी जी महाराज के सानिध्य में धर्मसभा का आयोजन किया गया।
30.	26/9/99	श्री दिग. जैन मंदिर भोगल, दिल्ली	आचार्य श्री 108 नेमीसागर जी महाराज के सानिध्य में धर्मसभा का आयोजन किया गया।
31.	28/9/99	श्री दिग. जैन मंदिर रोहतक (हरि.)	मुनि सौरभ सागर जी एवं मुनि प्रबलसागर जी के सानिध्य में धर्मसभा का आयोजन हुआ।
32.	29/9/99 प्रात:	श्री दिग. जैन मंदिर पानीपत	पू.क्षु.जिनेन्द्रवर्णी की जन्मस्थली पर प्रदर्शनी का आयोजन।
33.	29/9/99 दोप.	श्री दिग. जैन मंदिर गन्नौर मण्डी (हरि.)	आचार्यरत्न श्री 108 धर्मभूषण जी के सानिध्य में धर्मसभा का आयोजन।
34.	30/9/99	श्री दिग. जैन मंदिर सोनीपत (हरि.)	आर्यिका लक्ष्मीभूषण जी एवं आर्यिका दृष्टिभूषण जी के सानिध्य में धर्मसभा का आयोजन किया गया।
35.	1/10/99	श्री दिग. जैन मंदिर समसाबाद (उ.प्र.)	आचार्य श्री 108 विमल सागर जी के सानिध्य में धर्मसभा का आयोजन।
36.	2/10/99	श्री दिग. जैन अतिशय क्षेत्र करगुवां जी (झांसी)	मुनि श्री 108 विशुद्धसागर जी एवं मुनिश्री विमदसागर जी,के सानिध्य में धर्मसभा का आयोजन।
37.	27/10/99	श्री दिग. जैन मंदिर झालावाड़ (राज.)	मुनि श्री 108 आदिसागर जी के सानिध्य में प्रदर्शनी एवं धर्मसभा का आयोजन।
38.	30/10/99	श्री दिग. जैन मंदिर भट्टारक जी की नसियां	आचार्यश्री 108 वर्धमान सागर जी एवंआर्यिका 105 सुपार्श्वमति जी

		जयपुर (राज.)	के सानिध्य में धर्मसभा का आयोजन
39.	17/11/99	श्री दिग. जैन मंदिर महाराजपुर (म.प्र.)	2 धर्मसभाओं का आयोजन किया गया।
40.	24/11/99	श्री दिग. जैन मंदिर केकड़ी (राज.)	आर्यिका 105 विशुद्धमति माता जी के सानिध्य में कार्यक्रम हुआ।
41.	26/11/99	श्री दिग. जैन मंदिर पिड़ावा (राज.)	प.पू.मुनिश्री 108 सरलसागर जी के सानिध्य में कार्यक्रम रखा गया
42.	15/12/99	श्री दिग. जैन मंदिर भावनगर (गुज.)	धर्मसभा का आयोजन भी हुआ।
43.	16/12/99	श्री महावीर जी सोसायटी सोनगढ़ (गुज.)	मात्र 2 घंटे में ही अच्छी प्रभावना हुई।
44.	18-19/12/99	श्री पार्श्वनाथ दिग. जैन मंदिर सोलारोड, अहमदाबाद (गुज.)	धर्मसभा भी हुई।
45.	20/12/99	श्री दिग. जैन मंदिर धार (म.प्र.)	धर्मसभा हुई।
46.	21/12/99	श्री दिग. जैन मंदिर आष्टा	धर्मसभा हुई।
45.	2/1/2000	श्री पार्श्वनाथ जैन मंदिर रांझी, जबलपुर।	2 धर्मसभाएं हुईं।

अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान में आगत जैन पत्र पत्रिकाओं की सूची

1. श्री विद्यासागर टाइम्स (साप्ताहिक)
संपा-श्री नरेन्द्र जैन
बजरिया मोहल्ला, अशोकनगर
जिला-गुना (म.प्र.) 473331
फोन : 07543-22475, 22519

2. मार्गदर्शक (साप्ताहिक)
संपा-श्री देवेन्द्र जैन
रुचि प्रिंटर्स, संतोष टावर, प्रथमतल
148, जोन 1st एम.पी. नगर
भोपाल -456 002 (म.प्र.)
फोन : 0755-566999

3. पंचायत राज (साप्ताहिक)
प्र.संपा-श्री महेन्द्र मानव
ई-140/1, प्रोफेसर कालोनी
भोपाल - 462002 (म.प्र.)
फोन : 0755-540145, 536684

4. सम्मेदाचल रश्मि (साप्ताहिक)
संपा- श्री अमलकुमार जैन
मु.पो.-ईसरी बाजार - 825107
जिला-गिरिडीह (बिहार)
फोन : 06558-33369 फेक्स 22680

5. जनप्रिय (साप्ताहिक)
संपा- डॉ. बाहुबलि कुमार जैन
8. सिविल लाइन्स, ललितपुर-284403
फोन : 05176-72845का., 72911 नि.

6. जैन संदेश (साप्ताहिक)
संपा- प्रो. राजाराम जैन
भा.दि. जैन संघ
संघ भवन, चौरासी, मथुरा-281004

7. जैन विचार सरिता (साप्ताहिक)
संपा-प्रेमचंद एच. जैन 'प्रेमकमल'
22, शांतिनगर, साईनाथरोड, मालाड पं.
मुम्बई - 400 064 (महा.)
फोन : 022-8170576

8. जैन गजट (साप्ताहिक)
संपा-श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन, प्राचार्य
श्री नंदीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड
मिल रोड, ऐशबाग
लखनऊ - 226 004 (उ.प्र.)
फोन : 0522 फेक्स : 267287

9. अहिंसा आर्मी (पाक्षिक)
प्र.संपा-ब्र. अमृतश्री जैन
(ए.के. जैन इंजी.)
5/A जलतरंग प्रथम मंजिल
शाहपुर पुल के पास
अहमदाबाद - 380004 (गुज.)
फोन : 079-5509727, 5503903

10. अणुव्रत (पाक्षिक)
संपा-श्री अजय चोपड़ा
अ.भा. अणुव्रत भवन
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110 002
फोन : 011-3233345

11. दि. जैन महासमिति पत्रिका (पाक्षिक)
संपा-श्री अशोक जैन बड़जात्या
श्री खण्डेलवाल दि. जैन मंदिर
शिवाजी स्टेडियम के पीछे कनाटप्लेस
नई दिल्ली - 110 001
फोन : 011-3732102

12. वीर (पाक्षिक)
संपा-श्री पारसदास जैन
10, दरियागंज, नई दिल्ली
फोन : 011-3260754

13. करुणादीप (पाक्षिक)
संपा- श्री प्रदीप जैन
19, सरावगी मोहल्ला
एटा - 207001 (उ.प्र.)

14. अहिंसा (पाक्षिक)
संपा- श्री ताराचंद जैन
712, बोरडी का रास्ता, किशनपोल बाजार
जयपुर - 302003 (राज.)
फोन : 0141-321896, 313285
फैक्स : 0141-317420

15. अनोखी पत्रिका (पाक्षिक)
संपा- श्री मनीष कुमार वैद्य
S-21, सरदार भवन
मंगल मार्ग, बापू नगर, जयपुर (राज.)
फोन : 0141-517059, फेक्स: 512834

16. जैन पथ प्रदर्शक (पाक्षिक)
संपा- पं. रतनचंद भारिल्ल
टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
A-4, बापू नगर जयपुर - 302015
फोन : 0141-515581, 515458

17. वीर वाणी (पाक्षिक)
संपा- श्री निर्मलकुमार बड़जात्या
मनिहारों का रास्ता जयपुर - 302001
फोन:0141-313525का., 65273नि.

18. तीर्थंकर वाणी (त्रिभाषी-मासिक)
संपा-डॉ. शेखरचंद जैन
25, शिरोमणि बंगलो
बड़ौदा एक्सप्रेस, हाइवे के सामने
सी.टी.एम. चौरस्ता के पास
अहमदाबाद - 380026 (गुज.)
फोन : 079-5892744

19. जय कल्याण श्री (मासिक)
संपा-डॉ. राजीव पचण्डिया
मंगल कलश
394, सर्वोदय नगर, आगरा रोड
अलीगढ़ - 202001 (उ.प्र.)
फोन : 0571-410486

20. सन्मति (मासिक मराठी)
सं- ब्र. माणिकचंद जयवंतसा भिसीकर
बाहुबलि विद्यापीठ
मु.पो.-बाहुबलिजी - 416110
जिला कोल्हापुर (महा.)
फोन : 484422

21. स्वानुभूति प्रकाश (मासिक)
संपा- श्री हीरालाल जैन
580, जूनी माणेक वाड़ी
भावनगर - 364001 (गुज.)
फोन : 0278-423207

22. स्वाध्याय संदेश (मासिक)
संपा- श्री रतनलाल जैन
श्री श्वेताम्बर स्था. जैन स्वाध्यायी संघ
गुलाबपुरा, भीलवाड़ा - 311021 (राज़.)
फोन : 01482-23592(O), 23475(R)

23. तारण बंधु (मासिक)
संपा- श्रीमती सुनीता जैन
A-15 टी.टी.आई.कालोनी
श्यामला हिल्स, भोपाल-462002 (म.प्र.)
फोन : 0755-564401

24. दिशा बोध (मासिक)
संपा- डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा
46, स्ट्राण्ड रोड, तीन तल्ला
कलकत्ता - 700 077 (प.बंगाल)
फोन : 0495-238-5449
232-7621, फेक्स : 2326572
Email-ahimsa@cal2.Vsht.helin
Hotmail-drabagra@hatmail.com

25. तित्थयर (मासिक)
संपा.- श्रीमती लताकुमारी बोथरा
''जैन भवन''
P-25, कलाकार स्ट्रीट
कलकत्ता - 700007 (पं.बंगाल)
फोन : 0495-2382655

26. अनेकांत (शोध त्रैमासिक)
संपा- पं. पदमचंद जैन शास्त्री
वीर सेवा मंदिर
21, दरीयागंज, नईदिल्ली-110002
फोन : 011-3250522

27. दर्शन ज्ञान चरित्र (मासिक)
संपा- श्री विजय जैन लुहाड़िया
1274, बेदवाड़ा, दिल्ली - 110006
फोन : 011-3284778, 3272667

28. जैन प्रचारक (मासिक)
संपा- डॉ. सुरेशचंद जैन
श्री भारतवर्षीय अनाथ रक्षक जैनसोसायटी
जैन बालाश्रम, दरियागंज, दिल्ली

29. पुष्पवार्ता (मासिक)
प्र.संपा- श्री प्रमोद जैन
द्वारा-जैन प्रिंटिंग प्रेस
साबूजी का बाड़ा
दाल बाजार, लश्कर
ग्वालियर-474001 (म.प्र.)
फोन : 0751-323568, 336763

30. जैन बालादर्श (मासिक)
संपा-सुश्री मृदुला जैन
जैन विद्यालय
56/62, चाहचंद, जीरो रोड
इलाहाबाद-211003 (उ.प्र.)

31. जैन जनमत दर्पण (मासिक)
संपा- श्री ऋषभ जैन
AM-II/126, सुखलिया
इंदौर - 4520088 (म.प्र.)
फोन : 0731-558899

32. सन्मति वाणी (मासिक)
संपा- श्री जयसेन जैन
महावीर ट्रस्ट कार्यालय
63, महात्मा गांधी मार्ग
इंदौर-452001 (म.प्र.)
फोन :0731-700020नि. 701969का.

33. संस्कार सागर (मासिक)
संपा- ब्र. जिनेश मलैया
श्री दि. जैन पंच बालयति मंदिर
सत्यम गैस के सामने, ए.बी. रोड
इंदौर-452001 (म.प्र.)
फोन : 0731-571851, 223732
फेक्स :0731-443011

34. शाकाहार क्रांति (मासिक)
संपा-डॉ. नेमीचंद जैन
65, पत्रकार कालोनी
कनाडिया रोड, इंदौर-452001 (म.प्र.)
फोन : 0731-565204, 565271
फेक्स : 0731-565308

35. तीर्थंकर (मासिक)
संपा- डॉ. नेमीचंद जैन
65, पत्रकार कालोनी
कनाडिया रोड, इंदौर-452001 (म.प्र.)
फोन : 0731-565204, 565271

36. कुन्दकुन्द वाणी (मासिक)
प्र.संपा- श्री कमलजैन बाकलीवाल
श्री कुंदकुंद प्रकाशन
125, मदनलाल वार्ड, गुलौआ चौक
गढ़ा, जबलपुर-482003 (म.प्र.)
फोन : 0761-427844

37. ऋषभ भारती (मासिक)
संपादिका डॉ. ब्र. प्रभा जैन
श्री ब्राहमी सुन्दरी प्रस्थाश्रम
21, कंचन बिहार, विजय नगर कालोनी
जबलपुर - 482 002 (म.प्र.)
फोन : 0761-349189

38. जैन दर्पण (मासिक)
संपा-श्री प्रेमचंद जैन बड़जात्या
31/B/3 स्वर्ण पथ नीलम पथ
मानसरोवर जयपुर 302020 (राज.)
फोन : 0141-391866

39. वीतराग विज्ञान (मासिक)
संपा- डॉ. हुकुमचंद भारिल्ल
पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
A-4, बापू नगर
जयपुर 302015 (राज.)

40. अध्यात्म पर्व पत्रिका (मासिक)
संपा-श्री नरेन्द्र कुमार जैन
आदर्श प्रकाशन 128, चौधरयाना
झांसी-284 002 (उ.प्र.)
फोन : 443244

41. निर्मल ध्यान ज्योति (मासिक)
प्र.संपा-पं. मोतीलाल जैन, मार्तण्ड
निर्मल ध्यान ज्योति केन्द्र
गिरनार तलहटी
जूनागढ़-362004 (गुज.)

42. जैन महिलादर्श (मासिक)
प्र.संपा-डा. नीलम जैन
जैन महिलादर्श कार्यालय
द्वारा-नंदीश्वर फ्लोर मिल, ऐशबाग
लखनऊ 226004 (उ.प्र.)
फोन : 0422, फेक्स : 267287

43. प्रेक्षाध्यान (मासिक)
संपा-श्री नेपाल गंग
तुलसी अध्यात्म नीडम्
जैन विश्व भारती
लाडनू-341306
जिला नागौर (राज.)
फोन : 01581-22119

44. वर्णी प्रवचन (मासिक)
संपा-सुमेरचंद जी जैन
सचिव-वर्णी प्रवचन संस्थान
15, प्रेमपुरी, मुजफ्फरनगर-251002
फोन : 0131-450731

45. जैन जगत (मासिक)
संपा- श्री शांति प्रसाद जैन
भारत जैन महामंडल
108, ए स्टेण्डर्ड हाउस पो.बा. 2590
83, महर्षि कर्वे रोड, मुम्बई - 400002
फोन: 022-361910, फेक्स 3645599

46. महावीर विचार (मासिक)
संपा- श्री शांतिप्रसाद जैन
4F/A2, कोर्ट चेम्बर्स
35, न्यू मरीन लाइन्स (महा.)
मुम्बई-400020 (महा.)
फोन : 022-2039979 फेक्स:200209

47. शाकाहार जागृति (मासिक)
संपा-डा. हुकुमचंद जैन
245, नागेश्वर गली, गोपालगंज
सागर -470003 (म.प्र.)

48. विद्या पुष्प (मासिक)
संपा-श्री आशीष कुमार जैन
मोहल्ला दीनदयाल जैनमंदिर के पास
सहारनपुर -247001 (उ.प्र.)
फोन : 0132-743655

49. जैन बोधक (मराठी-मासिक)
संपा-श्रीमती कुमुदिनी बांई दोशी
भारत भवन 162/17 रेल्वे लाइन

सोलापुर 413 001 (महा.)
फोन : 0217-312819, 312014

50. श्राविका (मराठी-मासिक)
संपा-ब्र. विद्युतलता शाह
श्राविका प्रकाशन
श्राविका संस्था नगर
सोलापुर 413 002 (महा.)

51. वीतराग वाणी (मासिक)
संपा-पं. विमल जैन सोंरया
वीतराग वाणी कार्यालय, सैलसागर
टीकमगढ़ -472 001 (म.प्र.)
फोन : 07683-32592

52. ज्ञानपीठ समाचार (द्विमासिक)
भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली प्रकाशन
संपा-श्री नरेश जैन
18, इंस्टीट्यूशनल एरिया
लोदी रोड, नई दिल्ली -110003
फोन : 011-4626467, 4698417

53. श्रमण (त्रैमासिक)
प्र.संपा-डा. सागरमल जैन
पार्श्वनाथ विद्यापीठ
आई.टी.आई. रोड, करोंदी
पो.आ.-बी.एच.यू.
वाराणसी-221005 (उ.प्र.)
फोन : 316521, 318046
फेक्स : 0542-318046

54. अर्हत् वचन (द्विभाषी शोध त्रैमासिक)
संपा-डा. अनुपम जैन
कुन्द कुन्द ज्ञानपीठ
584, एम.जी.रोड तुकोगंज
इंदौर - 452 001 (म.प्र.)
फोन : 0731-545421, 545744
फेक्स : 0731-787790
Email Kundkund@bom4.vsnl.netin

55. शोधादर्श (चातुर्मासिक शोध)
संपा- डा. शशिकांत जैन
ज्योति निकुंज, चारबाग
लखनऊ - 226004
फोन : 0522-450085,452064

56. णाणसायर (त्रैमासिक)
संपादिका- श्रीमती कुसुम जैन
अरिहंत इंटरनेशनल
B-5/263 यमुना बिहार दिल्ली-110053
फोन : 2170794

57. जैन विद्या (शोध षट्मासिक)
संपा-डा. के.सी. सोगानी
जैन विद्या संस्थान
दि. जैन नसियां भट्टारकजी
नारायण सर्कल सवाई रामसिंह रोड
जयपुर - 302004 (राज.)
फोन : 0141-382847

58. अ.भा.दि.जैन शास्त्री परिषद बुलेटिन (त्रैमासिक)
संपा- डा. कपूरचंद जैन
कुन्दकुन्द महाविद्यालय
खतौली-251-201

59. जीत की भेरी (पाक्षिक)
संपा- जीतमल चौपड़ा
स्ट्रीट 4, शांतिकुंज, रामनगर
अजमेर (राज.) 305001

60. जीवन साहित्य
संपा- यशपाल जैन
सस्ता साहित्य मण्डल
एन-77, कनॉट सर्कस
नई दिल्ली

साहित्य सत्कार वर्ष ९९

क्र.	साहित्य भेंटकर्ता का नाम	ग्रन्थ का नाम	प्रतियां
१.	डा. रतनचंद्र जैन, भोपाल	जैन दर्शन में निश्चय और व्यवहार एक अनुशीलन	१
२.	श्री अनिल कुमार जैन पार्श्वबिहार, दिल्ली	तत्वभावना	६
३.	सुश्री इन्द्रसेना जैन, जयपुर	रिष्ट समुच्चय	६
४.	आचार्य विद्यानंद जी, दिल्ली	विश्वधर्म के दशलक्षण	१
५.	ब्र. कौशल जी, दिल्ली		१
६.	आचार्य रत्नं धर्मभूषण जी गन्नौरमण्डी	बोध प्रद काव्य	४
	आचार्य रत्न धर्मभूषण जी, गन्नौरमण्डी	संयम प्रकाश भाग-१-४	४
७.	मुनि वरिषेण सागर जी, फरीदाबाद	जैनेन्द्र सिद्धांत कोष भाग १-४	१
८.	उपाध्याय आनंद सागर जी, दिल्ली	धर्मझील में करें विहार	१
९.	पदमावती आफसेट, जबलपुर	चौबीसठाणा सिद्धांत प्रवेशिका	१
		दशलक्षण शतक	१
		विराग वारिधि	१
		श्रेयांस नवमांक कोश	१
		नित्य नियम अर्चना	१
१०.	पं. पवनकुमार जैन दीवान, सांगानेर	जैन धर्म का सार	१
११.	क्षु. १०५ तारण सागर जी, मिर्जापुर	अनुत्तरयात्रा	१
१२.	श्री पन्नालाल मगनीराम जैन, उदयपुर	स्याद्वाद	१
१३.	मुलि पुलक सागर जी दिल्ली	अर्हद्गीता	१
		आखिर क्यों	१
१४.	पं. अशोक कुमार शास्त्री, दिल्ली	श्री जिनेन्द्र पूजांजलि	१
१५.	ब्र. राजेश जैन (तारंगा जी)	भेद संग्रह तत्वार्थ सूत्रम कुंजी	१
		सर्वतोभद्र इष्टसिद्धि	१
		छत्तीसी	१
		निराकुलता के सोपान	१
		श्री णमोकार महामंत्र पूजा	१
		नंदीश्वर भक्ति	१

		पुण्यास्त्रव कथाकोश	१
१५.	ब्र. राजेश जैन	भाव भक्ति	१
		तत्वार्थ सूत्र सार्थ	१
		वैराग्य निधि	१
		संयम संस्कार	१
		सतरंगी तरंगे	१
		आप भला तो जग भला	१
		सहा जाता है कहा नहीं जाता	१
		सोने का पिशाच	१
		एकता की छाया में	१
		प्रेरक कहानी	१
		प्रायश्चित के आंसू	१
		आती जाती उपाधि	१
		विलासिता के आंसू	१
		विद्याधर से विद्यासागर	१
		निर्माल्य प्रत्य	१
		संसार बनाम स्वार्थ	१
		जनेऊ और जहर	१
		श्री जिन सहस्त्रनाम स्त्रोतम्	१
		गुणस्थान प्रश्नोत्तर माला	१
		वालब्रोध	१
		द्रव्य संग्रह प्रश्नोत्तर माला	१
		जैन सिद्धांत प्रवेशिका	१
		प्रश्नावलि	१
		पद्मनंदि पंचविंशति	१
१६.	डा. सूरजमुखी जैन मुज्जफरनगर	शाकाहार सर्वोत्तम आहार	२
		अपभ्रंश का जैन रहस्यवादी	
		काव्य और कबीर	१
१७.	डा. नीलम जैन	मन में धरो णमोकार	२
१८.	भक्तामर पाठ संगठन जबलपुर	विश्वलोचन कोश	

		महावीर जीवन में	१
१९.	श्री पदमचन्द जैन जबलपुर	विद्यासागर की चेतन कृतियां	१
२०.	ब्र. अनिल जैन मढ़िया जी जबलपुर	ध्यानोपदेश कोष	१
२१.	मुनि क्षमासागर जी	आत्मन्वेषी	१
२२.	श्री नाभिनंदन हितोपदेशनी सभा, बीना	आस्था और अन्वेषण	१
२३.	उपा. श्रुतसागर जी	आचार्य श्री विद्यानंद जी के जीवन की चित्रमय झांकी	१
२४.	आ. विनीत मती जी	मां रत्नत्रय चन्द्रिका	१
२५.	प्रो. उदयचंद जी जैन, वाराणसी	प्रमेय कमल मार्तण्ड परिशीलन	१
२६.	मुनि श्री सौरभ सागर जी	सिद्धांत शतक	१
		विश्व इतिहास में पहली बार	१
		मौन क्यों	१
		मत कुचलो मासूम कली को	१
		जैन शिक्षा भाग-१	१
		जैन शिक्षा भाग-२	१
		जैन शिक्षा भाग-३	१
		जैन शिक्षा भाग - ४	१
		दहकते अंगारे	१
		सृजन के द्वार पर	१
		प्रतिमा से प्रतिमा जगे	१
		पत्थर की मानवा कृति	१
२७.	मुनि श्री सूर्यसागर जी (अगरकर)	श्री उमास्वामी श्रावकाचार	४
		समयसार प्रश्नोत्तरी	४
२८.	पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट	इन भावो का फल क्या होगा	३
		संस्कार	१
		चिन्तन की गहराइयां	१
		बिखरे मोती	१
		सुखी जीवन	१
		बिदाई की बेला	१
		निमित्तोपादान	१

		भक्तामर प्रवचन	१
		समयसार अनुशीलन	१
२९.	जैन विद्या संस्थान महावीर जी	सप्त तत्त्व	१
		पुराण सूक्ति कोष	१
		मृत्यु जीवन का अंत नहीं	१
		समधिमरण स्वरुप	१
		पुराण कथा कुंज	१
		जैन इतिहास प्रेरक व्यक्तित्व	१
		हिन्दी भारती के कुछ जैन साहित्यकार	१
		जैन भजन सौरभ	१
		जैन पर्व	१
		अहिंसा विश्व धर्म	१
		भक्ति सुधा	१
		निर्ग्रन्थ प्रवचन	१
		तीर्थंकर महावीर	१
		आ. कुन्दकुन्द द्रव्य विचार	१
		अपभ्रंश भारती १ से ८ अंक	
		जैन विद्या १ से ८ अंक	
		अष्टसहस्री	१
		जैन पुराणो का सांस्कृतिक अवदान	१
३०.	उपाध्याय कामकुमार नन्दी	जैन धर्म में वायु संबंधी अवधारणा	१
		भोजन कब कहां कैसे	१
		दश धर्मामृत बिन्दु	१
		श्रम सफल जीवन का प्रथम कदम	१
		जिन विभूति सुधा	१
		अमृताष्टक चतुष्टयम्	१
		रोको हिंसा और बीमारी	१
		सब बनो शाकाहारी	१
		भाव शतकम	१

		आचार्य त्रय शतकम	१
		भगवान महावीर का जीवन दर्शन	१
		जिन नाथ सहस्त्र नाम स्त्रोत	१
		सिद्धान्त सिन्धु	१
		श्रमण वाणी	१
		अध्यात्म संजवनी	१
		नीति सुधा बिन्दु	१
		जो जैसा भावे सो तैसा पावै	१
		जीवन सुरक्षाचक्र छहढाला	१
		श्रावक धर्म के मौलिक सिद्धान्त	१
		जैन दर्शन की मौलिक विशेषतायें	१
		कुन्थू कनक धर्म विज्ञान	१
		भक्ति रस पांखुरियां	२
		दश धर्म प्रवचन	१
		विश्व संरचना के मौलिक तत्व	१
		श्रावकत्व की आत्म भूमिका	१
		पंचकल्याणक वैज्ञानिक विवेचन	१
		घर-घर चर्चा रहे धर्म की	१
		ज्ञान की ज्याति जलाते चलो	१
३१.	आ. ज्ञानसागर वागर्श विमर्श केन्द्र ब्यावर (राज.)	जयोदय महाकाव्य (पूर्वार्ध)	२
		जयोदय महाकाव्य (उत्तरांश)	२
		महाकवि आचार्य ज्ञानसागर	१
		अध्यात्म संदोहन	
		वीरोदय महाकाव्य	२
		सम्यक्त्व सार शतक	२
		समयसार	१
		प्रवचन सार	१
		तत्वार्थ सूत्र महाशास्त्र	१
		लघुत्रयी मन्थन	३
		सुदर्शनोदय महाकाव्य	१

		जयोदय महाकाव्य परिशीलन	१
		तीर्थ प्रर्वतक	१
		समुद्रदत्त चरित्र	१
		भाग्य परीक्षा	१
		ऋषभ चरित्र	१
		दयोदय	१
		सचित विचार	१
		श्री शांतिनाथ पूजा विधान	१
		पवित्र मानव जीवन	१
		गुण सुन्दर वृतान्त	
		बौद्ध दर्शन पर शास्त्रीय समीक्षा	१
		आध्यात्मिक पनघट	१
		कर्तव्य पथ प्रदर्शन	१
		भक्ति संग्रह	१
		विवेकोदय	१
		नय-निकाय	१
		इतिहास के पन्ने	१
		महाकवि आ. ज्ञान सागर	१
		हिन्दी साहित्य की मौलिक विशेषताएं	१
		अधो सोपान	१
		अंजना पवनंजय नाटकम्	१
		संस्कृति संस्कार	१
		जैन राजनैतिक चिन्तनधारा	१
		जैन दर्शन में रत्नत्रय का स्वरुप	१
		हित सम्पादक	१
		मानव धर्म	१
३३.	मुनिश्री तरुण सागर जी	तरुण क्रांति	१
		पब्लिक प्रवचन	१
		मुकुट जब झुकने लगे	१

		मुझे आपसे कुछ कहना है	१
		मैं सिखाने नहीं जगाने आया हूं	१
		क्रोध को कैसे जीतें	१
		जैन बाल भारती	१
		क्रांतिकारी सूत्र	१
		मन को कैसे जीतें	१
		मृत्यु बोध	१
३३.	पुष्पगिरि क्षेत्र सोनकच्छ	फूल एक पांखुरी अनेक	१
		शीशी छोटी मछली मोटी	१
		ज्ञान सूत्र	१
		शब्दांकन	१
		रोगों का घर	१
		चल हंसा उस पार	१
		प्रश्न आज के	१
		प्रेम की फुहार	१
		लाल किले पर ३० मिनट	१
		मुक्ति का मार्ग	१
		जिन दर्शन नहीं किया	१
		मृत्यु की दीये में जीवन की ज्योति	१
		श्रुति पद्य	१
		साधु, समाज, राष्ट्र	१
		आओ लौट चलें	१
		कितनी झूठी कितनी सच्ची	१
		फूटी आंख	१
		परिणामों का खेल	१
		धर्म क्रांति के दस सोपान	१
		शब्दन चोट करो	१
		शब्द भये सयाने	१
		बैल छोड़ दो घास खाने	१
		बोध का जागरण	१

		मेरे महावीर	
		पत्थर मत मारो दर्पण में	१
		गलत फहमी	१
		प्रेम पुष्प	१
		तत्वावतार	१
		सम्यक्त्व के सुमन	१
		वाणी के फूल	१
		ममता नहीं समता	१
		रंगाई के पहले धुलाई	१
		तोड़ना नहीं जोड़ना सीखो	१
		अध्यात्म के सुमन	१
		मृत्यु का रहस्य	१
		शब्दन् अमृत झरे	१
३४.	मुनि प्रज्ञा सागर जी	मिलिये जैनाचार्यों से भाग १	१
		मिलिये जैनाचार्यों से भाग २	१
		आपने कभी ख्याल किया	१
३५.	मुनि श्री समता सागर जी	हरियाली हिरदय बसी	१
		चातुर्मास के चार चरण	१
		कल्याण आलोचना	१
३६.	आचार्य देवनंदी महाराज	वास्तु चिंतामणि	१
		भक्तामर साधना से सृजन तक भाग-१	१
		भक्तामर साधना से सृजन तक भाग-२	१
३७.	श्री बाबूलाल तोताराम लुहाड़िया भुसावल	सहज सुख साधन	२५
		रत्न करण्ड श्रावकाचार	१०
		साधना के सूत्र	१०
३८.	दरबारी लाल कोठिया, बीना	प्रतिष्ठा रत्नाकर	१
३९.	डा. अरुण कुमार शास्त्री ब्यावर	अभि वंदना पुष्प	१
४०.	सत्श्रुत प्रभावना ट्रस्ट, भावनगर	अनुभव संजीवनी	१
		द्रव्य दृष्टि प्रकाश	१
४१.	श्री रमेशकुमार जैन, जबलपुर	चिकित्सा चन्द्रोदय खण्ड ५	१

		पिच्छि कमण्डलु	१
४२.	डा. वीर सागर जैन, दिल्ली	जैन शतक	१
४३.	श्री राजमल पवैवा भोपाल	लघु स्वयं स्तोत्र विधान	१
		श्री चरित्र शुद्धि विधान	१
		श्री पंचमेरु विधान	१
		श्री तीन लोक विधान	१
		श्री तत्वसार विधान	१
		श्री चौसट ऋद्धि विधान	१
		श्री सामायिक पाठ विधान	१
४४.	श्री जमनालाल जैन वाराणसी	छन्द शतक	२
		महावीर वाणी	
४५.	डा. सुधांशु जैन	मानव और प्रकृति	३
४६.	श्री महावीर प्रसाद सराफ, दिल्ली	श्री समय प्राभृत	१
		मोक्ष मार्ग प्रकाशक	१
४७.	डा. ओ. पी. अग्रवाल	कन्जर्वेशन आफ बुक्स १	
४८.	ब्र. माणिक लाल गांधी, अकलूज	गोम्मट प्रश्नोत्तर चिंतामणि	१
		प्रतिष्ठा विधि दर्पण	१
		भद्रबाहु संहिता	१
४९.	पं. सनतकुमार विनोदकुमार जैन, रजवांस	श्री जिनेन्द्र पूजापाठ	३
५०.	श्री शांतिलाल जी बैनाड़ा, आगरा	जिन स्तुति स्तोत्र संग्रह	१
५१.	श्री देवीचन्द्र छगनलाल जैन		
	सदर बाजार भीनमल (राज.)	सूक्ति सुधारस प्रथम खण्ड	१
		द्वितीय खण्ड	१
		तृतीय खण्ड	१
		चतुर्थ खण्ड	१
		पंचम खण्ड	१
		षष्ट खण्ड	१
		सप्तम खण्ड	१

कतिपय पाठकों की दृष्टि में - अनेकान्त दर्पण

1. अनेकान्त दर्पण पत्रिका में वर्णित सामग्री/लेखों का मनोयोग पूर्वक वाचन किया। पढ़कर चित्त को अत्यधिक अल्हाद हुआ कि आप जैसे दृढ़ संकल्पी व्यक्ति ने बीना में एक चिर प्रतीक्षित संस्था अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान की स्थापना कर अल्पावधि में ही जिनवाणी की प्राचीन विलुप्त पाण्डुलिपियों को विभिन्न नगरों गांवों के जिनालयों से एकत्रित कर लेमीनेशन आदि कराकर जिनवाणी सुरक्षा का वह कार्य कर दिखाया जो अनेकों त्यागी, तपस्वी, विद्वान अभी तक नहीं करा सके थे। एतदर्थ आपको बहुत-बहुत साधुवाद।

ब्र. हेमचन्द्र 'हेम' भोपाल

2. अनेकान्त दर्पण का प्रवेशांक प्राप्त हुआ। उसकी साज-सज्जा एवं मुद्रण पर्याप्त संतोषप्रद एवं आधुनिक है। उसके दीर्घजीवन होने की कामना करता हूं।

ब्र. राकेश जैन, कुण्डलपुर

3. मुख्य पृष्ठ पर सचित्र एवं अंतिम पृष्ठ पर प्राचीन पाण्डुलिपियों की मनोहारी साज-सज्जा देखकर चित्त प्रसन्न हो गया। आपने जगह जगह घूमकर हस्तलिखित ग्रन्थों को लाकर बीना संग्रहालय में संकलित किया है। यह एक श्रम एवं समय साध्य आलोकिक कार्य किया है। आपके इस कार्य को शत्-शत् नमन्।

अनूपचन्द न्यायतीर्थ, मंत्री श्री दिग. जैन मंदिर महासंघ, जयपुर

4. पत्रिका मिली, रेपर हटाते ही मुख पृष्ठ एवं अंतिम पृष्ठ जो देखा तो एक अभूत पूर्व आनंद की प्राप्ति हुई, जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं कर पा रहा हूं। आपके संग्रहालय में सचित्र पाण्डुलिपियां होंगी, इसकी कल्पना भी नहीं थी, इन्हें देखने को मन उमड़ रहा है, और बीना आने का साहस जुटा रहा हूं।

प्राचार्य (पं.) कुन्दनलाल जैन, विश्वास नगर, दिल्ली

5. "अनेकान्त-दर्पण" के प्रवेशांक को प्राप्तकर मन प्रसन्न हो गया है। परम प्रसन्नता की बात है कि आपके द्वारा संस्थापित अनेकान्त ज्ञान मंदिर दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति कर रहा है। पत्रिका के सभी लेख पठनीय और चिन्तनीय हैं। गन्धहस्ति महाभाष्य की खोज के लिए आपके द्वारा घोषित पुरस्कार राशि के लिए धन्यवाद के पात्र हैं। पत्रिका द्वारा शोध संस्थान की उपलब्धियां, आगामी योजनायें सभी ज्ञात हो जाती हैं।

पं. उदयचन्द्र जैन, सर्वदर्शनाचार्य, वाराणसी

6. अनेकान्त दर्पण का प्रवेशांक मिला, इससे संस्थान का और जिनवाणी सेवा की दिशा में आपका थोड़ा सा परिचय हुआ। प्रवेशांक देखकर मन प्रसन्न हो गया। आवरण ने ही मन मोह लिया। संस्था की आजीवन सदस्यता के लिये चैक भी भेज रहा हूं।

नीरज जैन, सतना

7. "अनेकान्त दर्पण" अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान का प्रवेशांक होने के बावजूद इतना अधिक ज्ञानवर्धक एवं ज्ञान मंदिर के कार्यकलापों का दर्पण के रुप में आपके एवं सम्पादन मण्डल के कुशल निर्देशन में प्रकाशित किया गया है। वास्तव में यह अनेकान्त दर्पण बन गया है। चित्रित पाण्डुलिपियों से सज्जित आवरण एवं समस्त आलेख एक स्वर से संस्थान की प्रशंसा ने मेरे संस्थान दि हेरीटेज के विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों की उत्कंठा को इतना अधिक बढ़ा दिया है कि, वे शीघ्र ही बीना आकर आपके इस प्रेरणास्पद कार्य को प्रत्यक्ष अवलोकन करना चाहते हैं।

डा. एच.बी. माहेश्वरी, निदेशक, दि. हेरीटेज, ग्वालियर

8. पत्रिका नयनाभिराम्, सज्जित, शुद्ध और सुन्दर मुद्रित हुई है। पाठ्य सामग्री और उसकी संयोजना सभी कुछ मनोज्ञ एवं प्रभावोत्पादक है। वस्तुतः आपका यह प्रयत्न अभिवन्दनीय तो है ही, अनुकरणीय भी है। इस भव्य प्रकाशन के लिये आपको अनेक धन्यवाद।

डा. भागचन्द जी 'भागेन्दु' निदेशक
राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं संशोधन संस्थान श्रवण बेलगोला (कर्ना.)

9. "अनेकान्त दर्पण" का प्रवेशांक मिला। इस प्रकाशन द्वारा अपनी संस्था से मेरा परिचय कराया, अनेक धन्यवाद। अब तो आपकी संस्था देखने का कौतूहल मन में है। देखता हूं कब अवसर बनता है।

डा. सुधांशु कुमार जैन, निदेशक, लखनऊ (उ.प्र.)

10. अनेकान्त दर्पण देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। कवर पृष्ठ बहुत ही सुन्दर एवं सोद्देश्य है। आपने अपने सतत् प्रयत्नों से थोड़ी सी अवधि में बहुत बड़ी उपलब्धि प्राप्त कर जिनवाणी की अनुपम एवं अनुकरणीय सेवा की है। शतशः बधाई एवं विनम्र आदराञ्जलियां स्वीकारें।

डा. सुरेश जैन, आइ.ए.एस., भोपाल (म.प्र.)

11. अनेकान्त दर्पण का मुख पृष्ठ अत्यन्त लुभावना और आपकी सूझ-बूझ का परिचायक है। आपका सुधी प्रयास निश्चित ही स्तुत्य है। पाण्डुलिपियों के संरक्षण का जो महनीय कार्य आप

कर रहे हैं, मुझसे जो भी सहयोग चाहिए, सदैव मिलेगा।

डा. अभय प्रकाश जैन, ग्वालियर

12. अनेकान्त दर्पण पत्रिका प्राप्तकर हृदय गद्‌गद् हो गया। आपका प्रयास श्रुत भगवान की आराधना का हो रहा है। यह पत्रिका में पढ़कर अतीव आनंद प्राप्त हुआ। कारण, अभी समाज में जगह-जगह पंच कल्याणक महोत्सव के कार्यक्रम सर्वत्र हो रहे हैं। किन्तु ज्ञान की आराधना नगण्य है और आप महानुभावों ने यह बीड़ा उठाया है। यह सद्‌प्रयास स्तुत्य है।

भवरलाल अग्रवाल, उज्जैन

13. पत्रिका अतिसुन्दर परिवेश में है। मुख पृष्ठ पर प्राचीन शास्त्रों के पत्रों का छापा गया है, अति आकर्षक एवं श्रद्धा का विषय है। अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान अत्यंत महत्वपूर्ण ज्ञानपीठ है, आ.ब्र.संदीप जैन सरल भैया के भागीरथ प्रयत्न को प्रणाम करता हूं।

पं. शिवचरण लाल जैन, मैनपुरी

14. सरल व्यक्तित्व से विभूषित आपका श्रुतस्नेह सराहनीय और अनुकरणीय है। अनेकान्त दर्पण के सभी लेख पाण्डुलिपियों की दशा और दिशा के उद्‌बोधक हैं। आवरण पृष्ठ अनेक पाण्डुलिपियों की सुरक्षा का प्रतीक है।

डा. कस्तूरचंद सुमन, प्रभारी जैन विद्या संस्थान श्री महावीर जी

15. अनेकान्त दर्पण पूरा पढ़ा संस्था की द्रुतगति जानकर मन मुग्ध हो गया। आपका श्रम रंग लाया। पुरस्कार लोभी विद्वान आगम रक्षा नहीं कर सकते हैं। ये कार्य तो आप जैसे ब्र. ही कर सकते हैं। बधाई स्वीकारें। मुझे आपके कार्य पर गर्व है।

पं. पदमचंद शास्त्री, सम्पादक, अनेकान्त दिल्ली

16. अनेकान्त दर्पण के प्रवेशांक की प्रति मिली। सारा कार्य छोड़कर उसे आद्योपान्त पढ़ा। अंक बहुत सुन्दर सुरुचिपूर्ण एवं सारयुक्त सामग्री से परिपूर्ण लगा। विलुप्त जैन वाङ्मय की अर्थपूर्ण सामग्री एवं जानकारी प्रस्तुत करने में यह अंक और आपका परिश्रम पूर्ण प्रयास सार्थक एवं सफल रहा। जिनवाणी माता की सेवा का आपका यह निस्प्रह एवं निस्वार्थ प्रयास सर्वथा श्लाघनीय है।

आचार्य राजकुमार जैन, दिल्ली

17. उत्कृष्ट प्रकाशन श्रेष्ठ आलेखों, रिपोर्ट्स तथा सुन्दर चित्रों की भव्य प्रस्तुति को पाकर

अति सांस्कृतिक व उद्देश्यपूर्ण अभियान से युक्त प्रेरक, मनोहारी कबर, समाचार पत्रों की कटिंग की बेहतरीन सूचना के स्वरुप को देखकर मन प्रसन्न हुआ।

प्रो. के.के. जैन, बीना

18. अनेकान्त दर्पण बहुत प्रभावी गजब की आकर्षक, सारभूत तत्वों से भरी है। ढ़ेर सारी शुभकामनायें स्वीकारें।

महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली

19. अनेकान्त दर्पण की अप्रतिम सामग्री पढ़कर मेरे ज्ञान में अभिवृद्धि हुई। वास्तव में प्रबुद्धजनों एवं सजग शोधार्थियों के लिए यह अद्वितीय पत्रिका सदैव प्रेरणादायी प्रमाणित होगी। अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान की स्थापना में आपका श्रम साध्य योगदान एवं प्रखर दृष्टिकोण सदियों तक सुधीजनों का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा।

हुकुमचंद सौगाणी, उज्जैन

20. इस शोध पत्रिका के माध्यम से अनेकान्त ज्ञान मंदिर की महिमा का प्रचार-प्रसार होगा ही साथ ही जैन संस्कृति के विभिन्न पक्षों धर्म, दर्शन, इतिहास, पुरातत्व एवं महापुरुषों का परिचय भी समाज को होगा।

प्रेमकुमार जैन, श्री महावीर पत्राचार, विदिशा

21. अनेकान्त दर्पण प्रवेशांक निश्चय ही समाज को अपनी धरोहरों से अवगत करा रहा है। अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान ब्र. संदीप जी सरल द्वारा बोया गया बीज एक बट बृक्ष के रुप में फैलकर सारे विश्व में फैली हुई जैन जगत की धरोहरों को बचाने में कामयाब होगा।

सुरेश जैन, मारौरा, शाकाहार संयोजक, शिवपुरी

22. अनेकान्त दर्पण पत्रिका प्राप्त हुई, मन आल्हाद से भर गया। आपकी संस्था सबसे हटकर सम-सामयिक कार्य कर रही है। जिनवाणी संरक्षण-प्रचार प्रसार हेतु में 51,000 रुपयों का चैक भेज रही हूं। स्वीकार करें।

इन्द्रसेना जैन, जयपुर

23. अनेकान्त दर्पण शोध संस्थान की इकलौती शोध पत्रिका के रुप में उदित हुई है। मुझे भरोसा है इसके द्वारा संस्थान और अन्य अनेक विद्याकेन्द्रों के गवेषणात्मक संदर्भों का सम्यक उजागरण होगा। इस सुन्दर, सरस्वत प्रकाशन एवं सम्पादन के लिये कृपया मेरी बहुत सी बधाईयां स्वीकार करें।

डा. महेन्द्र सागर प्रचण्डिया, अलीगढ़ (उ.प्र.)

24. आपने प्राचीन जैन वाङ्मय की रक्षा, पाण्डुलिपियों का संरक्षण एवं जैन धर्म दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों को व्यवहारिक दृष्टि से प्रकाश में लाने हेतु अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना की स्थापना की है। आपका यह कार्य वास्तव में स्तुत्य और अनुकरणीय है। अनेकान्त दर्पण में जो सामग्री प्रकाशित की है, वह प्रशंसनीय है।

डा. विमलप्रकाश जैन

निर्देशक, भोगीलाल लहेरचंद इन्स्टीट्यूट इन्डोलाजी, दिल्ली

25. ब्र. संदीप जी ने एक ऐसे कार्य को हाथ में लिया है, जो कठिन तो है, पर हजारों वर्षों तक ज्ञान प्रवाह को जीवित रखने वाला है। प्राचीन ज्ञान निधि का संग्रह, संरक्षण, आज के आर्थिक भागदौड़ के युग में उन्हीं के बस का है, जो सम्पूर्ण आत्मभाव से समर्पित होकर निरपेक्ष दृष्टि से प्रवृत्त हों। संदीप जी ने मां जिनवाणी के संरक्षण का दायित्व स्वीकार कर भारतीय संस्कृति की बड़ी सेवा की है।

जमनालाल जैन, सारनाथ, वाराणसी

26. बीना में अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान की स्थापना कर ब्रम्हचारी जी ने उस क्षेत्र के शोध प्रज्ञों का बड़ा उपकार किया है। जैन मंदिरों में जो हस्तलिखित ग्रन्थ प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं उनके संरक्षण और सम्वर्द्धन में अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान का महान योगदान सिद्ध होगा।

डा. लालचन्द्र जैन

डायरेक्टर, रिसर्च इन्स्टीट्यूट आफ प्राकृत जैनोलाजी, वैशाली (बिहार)

27. अनेकान्त दर्पण शोध पत्रिका इतनी सजधजकर नववधू की भांति अलंकृत कर निकाली गयी है, जैसी आज तक कोई पत्रिका प्रथम अंक में भी न निकाली गई होगी। विभिन्न स्थलों से एकत्रित की गयी यह अमूल्य धरोहर, पत्रिका के पृष्ठों में वर्णित है, जो न केवल समाज या देश की वरन् अखिल विश्व की विरासत बन गयी है।

प्रो. एल.सी. जैन

निदेशक, विद्यासागर शोध संस्थान, जबलपुर

28. अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान ने ग्रन्थों का संरक्षण-सम्वर्द्धन किया है, उसका पूरा परिचय पत्रिका के माध्यम से मिला। पत्रिका के उत्कृष्ट संयोजन के लिए आप बधाइ और साधुवाद के पात्र हैं।

कैलाश भूषण जिन्दल, एडवोकेट, लखनऊ

29. अनेकान्त दर्पण के सम्प्रेषण के माध्यम से मुझे स्मरण किया, यह मेरा अहोभाग्य है। अनेकान्त ज्ञान मंदिर के माध्यम से जो उपक्रम आप कर रहे हैं, सचमुच में प्रशंसनीय है।

डा. नंदलाल जैन, रीवा

30. आपके ये कार्य जैन साहित्य/संस्कृति की विकास यात्रा में मील का पत्थर सिद्ध होंगे। आपके इन कार्यों पर विशेषत: विद्वत्समाज को गर्व करना चाहिये।

डा. कपूरचंद जैन, कुन्दकुन्द महाविद्यालय, खतौली

31. अनेकान्त दर्पण का प्रवेशांक आपके सतत निर्मल परिश्रम एवं निष्ठा का सुफल है। सामग्री स्तरीय ज्ञान वर्द्धक एवं मौलिक है।

डा. आर.के. जैन मद्रास

32. अनेकान्त दर्पण के माध्यम से आपकी संस्था का स्पष्ट प्रतिबिम्ब देखकर विस्मय, विमुग्ध हुए बिना नहीं रह सकी। पावन जिनवाणी के संरक्षण एवं सम्वर्द्धन के लिए आप जो ज्ञान तप कर रहे हैं निश्चय ही श्लाघनीय है। पत्रिका को पढ़कर इस ज्ञान तीर्थ की वंदना करने के भाव जागृत हुए हैं।

डा. मालती जैन, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, महाविद्यालय, मैनपुरी

33. ब्र. संदीप जी द्वारा स्थापित एवं अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना द्वारा प्रकाशित, पठनीय, विपुल सामग्री से युक्त नयनाभिराम सचित्र शोध पत्रिका अनेकान्त दर्पण का प्रथम अंक पाकर मन प्रसन्न हो गया। ऐसी चित्ताकर्षक, संस्थान परिचायक, ज्ञानवर्द्धक, सत्कार्य प्रेरक, पठनीय पत्रिका के प्रकाशन हेतु प्रकाशन संस्था साधुवाद की पात्र है।

प्राचार्य अभयकुमार जैन, जैन दर्शनाचार्य, बीना

34. शोध संस्थान की शोध पत्रिका प्राप्तकर संस्थान की बहु आयामी योजनाओं का परिचय प्राप्त हुआ। सरल जी के कठिन प्रयत्नों की जितनी सराहना की जाए, कम ही रहेगी। विलुप्त जैनागम को संकलन करने, संरक्षण-सम्बर्द्धन करने का कार्य इस संस्थान ने उठाया है, उसकी सराहना करने के साथ इस भागीरथ प्रयत्न में हर श्रावक, श्रमण और पण्डितों को यथायोग्य तन-मन-धन से सहयोग करेंगे तो निश्चित हम अपने साथ तो न्याय करेगें ही, आने वाली पीढ़ियों के साथ भी न्याय करेंगे। ब्र. संदीप जी ने जो दीप जलाया है, उसकी रोशनी सर्वत्र पथ आलोकित करती रहेगी।

जस्टिस एम.एल. जैन, नई दिल्ली

35. अनेकान्त दर्पण प्राप्त हुई, जिसको पढ़ने से ज्ञात हुआ कि मां जिनवाणी का संरक्षण व सम्वर्द्धन में संस्था ने जो भी प्रगति की है उसका श्रेय आपको जाता है यह सारी प्रगति आपके

अथक प्रयासों का ही फल है।

लक्ष्मीनारायण जैन, एडवोकेट राज. हाईकोर्ट, भरतपुर (राज.)

36. अनेकान्त दर्पण में अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना में सुरक्षित ज्ञानभण्डार की समुचित जानकारी उपलब्ध है। आपने जो स्तुत्य एवं सार्थक कदम उठाया है, जो दिग. जैन विद्वान पर्युषण/पंचकल्याणक तक ही सीमित रह गये हैं, उनके लिये आपके द्वारा प्रारम्भ किया गया यह सारस्वत प्रयास एक आदर्श उपस्थिति करता है।

प्रो. प्रेम सुमन जैन, अध्यक्ष, सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

37. ज्ञान के अक्षय भण्डार हमारे शास्त्रों को, पाण्डुलिपियों को विलुप्त होने से बचाने में, उनका संरक्षण-सम्वर्द्धन करने में ब्र. संदीप भैया के मार्गदर्शन में अनेकांत ज्ञान मंदिर शोध संस्थान, बीना जो स्तुत्य कार्य कर रहा है वह न मात्र वंदनीय है, वरन् अनुकरणीय एवम् अनुशरणीय भी है। तथा प्रत्येक बुधिजन का ज्ञान के इस मंदिर के समुचित विकास उत्थान में सहयोग करना चाहिए।

डा. चीरंजी लाल बगड़ा, सम्पादक, दिशाबोध, कलकत्ता

38. अनेकान्त दर्पण वर्ष 99 के द्वारा अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान की प्रगति आख्या पढ़कर असीम प्रसन्नता हुई। मुनिश्री 108 सरल सागर जी महाराज की पावन प्रेरणा से आदरणीय ब्र. संदीप सरल ने बीना में अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान की स्थापना कर एक ऐसे अभाव की पूर्ति का साहस पूर्ण कदम उठाया है जिसकी आज आवश्यकता थी। ब्र. सरल जी ने मां जिनवाणी की सेवा में स्वयं को समर्पित कर अनेकान्त ज्ञान मंदिर के रुप में जो ज्ञान दीप प्रज्वलित किया है। विद्वानों और श्रीमन्तों के सहयोग से उसका प्रकाश चिरकाल तक जगत को प्रकाशित करता रहे, इसी शुभकामना के साथ।

डा. सूरजमुखी जैन, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

39. अनेकान्त दर्पण के माध्यम से अनेकान्त ज्ञान मंदिर का प्रगति प्रतिवेदन भावी योजनायें एवं अनेक ज्ञान वर्द्धक आलेख वाचनकर अत्यधिक प्रभावित हुआ। आपके स्तुत्य प्रयास से विलुप्त, अनुपलब्ध, जीर्ण-शीर्ण एवं दीमक-मूषक की खाद्य सामग्री आगम ज्ञान के अक्षय कोष संरक्षित होकर नया जीवन पा गये हैं। यह समाज के लिए आपका अनुपम अवदान है। अनेकान्त ज्ञान मंदिर आपकी परिकल्पना के अनुरुप आकार लेकर विश्व में अनौखा ज्ञान केन्द्र बने।

प्रो. शीलचन्द जैन

डेनियलसन कालेज, छिन्दवाड़ा

अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना के अभ्युदय में सहयोगी सदस्यों की नामावली

शिरोमणि संरक्षक - ५१,००० अथवा इससे अधिक

१.	सुश्री इन्द्रसेना जैन, जयपुर	१,१७,०००

परम संरक्षक - १५,००० अथवा अधिक

२.	श्री मानमल सुनीलकुमार जैन, कलकत्ता	१५,०००
३.	श्री महावीर प्रसाद नरेन्द्र कुमार, गुवाहाटी	१५,०००
४.	श्री कुन्दकुन्द कहानतीर्थ ट्रस्ट, मुम्बई	१५,०००

संरक्षक सदस्य - ११,०००

५.	डा. शीलचन्द्र जैन मुंगावली	११,०००
६.	श्री तनसुखलाल छोगमल सेठी, गुवाहाटी	११,०००
७.	कंवरीलाल सेठी, गुवाहाटी	११,०००
८.	डा. रतनचन्द्र जैन, भोपाल	११,०००
९.	डा. सुधांशु कुमार जैन, लखनऊ	११,०००
१०.	श्री भगवानदास शोभालाल जैन ट्रस्ट सागर	११,०००

जिनवाणी सदस्य - ५,०००

११.	श्री शिखरचन्द्र जैन विवेक बिहार दिल्ली	५,०००
१२.	श्री पं. बंशीधर व्याकरणाचार्य डा. दरबारीलाल कोठिया, बीना	५,०००
१३.	ब्र. पं. सुमतिबाई शहा, सोलापुर	५,०००
१४.	ब्र. पं. विद्युल्लता शहा, सोलापुर	५,०००
१५.	डा. नीलम जैन, गाजियाबाद	५,०००
१६.	डा. आराधना जैन, गंजबासौदा	५,०००
१७.	श्रीमती विद्याबाई हनुमानताल, जबलपुर	५,०००
१८.	श्रीमती साधना जैन, भोपाल	५,०००
१९.	श्रीमती चमेलीबाई श्री सुन्दरलाल चौधरी, बीना	५,०००
२०.	श्री रामदेव सन्तोषकुमार, गुवाहाटी	५,०००
२१.	श्री मांगीलाल छगनलाल सरावगी, गुवाहाटी	५,०००
२२.	श्री हुकमीचंद सरावगी छगनमल सरावगी, गुवाहाटी	५,०००
२३.	श्री मानिकचंद निरंजन कुमार गंगवाल, गुवाहाटी	५,०००

२४.	श्री अनंदीलाल शैलेन्द्रकुमार, गुवाहाटी	५,०००
२५.	श्री महावीर महिला परिषद, गुवाहाटी	५,०००
२६.	श्रीमती उर्मिलाबाई जैन, पार्श्वबिहार, दिल्ली	५,१००
२७.	श्री अनिलकुमार जैन, पार्श्वबिहार, दिल्ली	५,१००
२८.	श्रीमती पुष्पा जैन, पार्श्वबिहार, दिल्ली	५,०००
२९.	श्रीमती विन्दु जैन पं. अशोककुमार शास्त्री, पार्श्वबिहार दिल्ली	५,१००
३०.	श्रीमती ऋत्तु जैन, श्री अजयकुमार जैन, पार्श्वबिहार दिल्ली	५,१००
३१.	श्री प्रविन्द्र कुमार जैन, दिल्ली	५,०००
३२.	श्री धनेन्द्र कुमार जैन, दिल्ली	५,०००
३३.	श्री मंहीपाल जैन, दिल्ली	५,१००
३४.	श्री दिग. जैन समाज राजपुर रोड, दिल्ली	५,०००
३५.	श्री अशोक कुमार जैन, दिल्ली	५,०००
३६.	श्री भागचन्द प्रकाशचंद सेठी, विजयनगर	५,०००
३७.	श्री महावीर महिला परिषद, विजयनगर	५,०००
३८.	श्री मदनलाल मुन्नालाल काला, कलकत्ता	५,०००
३९.	श्रीमती रत्नप्रभा सेठी, गुवाहाटी	५,०००
४०.	श्री शीतलप्रसाद जैन, मुजफ्फरनगर	५,१००
४१.	श्री निरंजनलाल रतनलाल बैनाड़ा, आगरा	५,१००
४२.	श्री सुखपाल जैन इंजीनियर, लखनऊ	५,०००

प्रति अलमारी हेतु २,५०० रुपये प्रदान करने वाले सदस्य

१.	दैनिक रात्रि भक्तामर पाठ संगठन हनुमानताल जबलपुर	१ अल्मारी
२.	अखिल भा. पत्रकार सम्मेलन, बड़ागांव (मेरठ)	१ अल्मारी
३.	श्री महिला संगठन, गया	१ अल्मारी
४.	श्री महिला परिषद, बीना-इटावा	१ अल्मारी
५.	श्री महिला समाज, पठारी	१ अल्मारी
६.	श्री महिला समाज, नसीराबाद	१ अल्मारी
७.	श्री महिला समिति, गुवाहाटी	१ अल्मारी
८.	श्री महिला संगठन, महाराजपुर	१ अल्मारी
९.	समस्त मित्र मण्डली, बीना	१ अल्मारी
१०.	डा. सुगनचंद जैन, अशोकनगर	१ अल्मारी

११.	श्री फूलचंद महावीर प्रसाद जैन, गया	१ अल्मारी
१२.	श्री राधेलाल राजकुमार जैन, अशोकनगर	१ अल्मारी
१३.	श्रीमती गुणमाला देवी, अशोकनगर	१ अल्मारी
१४.	श्रीमती कुसुमलता जैन, अशोकनगर	१ अल्मारी
१५.	श्री महिला समाज, गंजबासौदा	१ अल्मारी
१६.	श्रीमती पुष्पा शाह, बीना	१ अल्मारी
१७.	स्व. श्री रतनलाल बसारी वालों की स्मृति में बसारी परिवार, बीना	१ अल्मारी
१८.	ब्र. बिजेन्द्र चन्द जैन, नई दिल्ली	१ अल्मारी
१९.	श्री शिखरचन्द सुरेश कुमार जैन, चिगलौआ	१ अल्मारी
२०.	श्री गुलझारीलाल जैन नौगांव वाले, बीना	१ अल्मारी
२१.	श्री चन्द्र महेन्द्रकुमार जैन बामोरकलां	१ अल्मारी
२२.	श्री रामलाल जैन ओम आर्डवेयर गंजबासौदा	१ अल्मारी
२३.	श्री निर्मलचन्द्र जैन, मनेन्द्रगढ़	१ अल्मारी
२४.	श्री दौलतराम तिजारिया, कोटा	१ अल्मारी
२५.	श्री माणिकचन्द्र जी पाण्डया, कोटा	१ अल्मारी
२६.	श्री राजकुमार जी बड़जात्या, कोटा	१ अल्मारी
२७.	श्री माणिकचन्द्र कैलाशचन्द सराफ, कोटा	१ अल्मारी
२८.	श्रीमती रविकान्ता राकेश जैन, ग्रीन पार्क दिल्ली	१ अल्मारी
२९.	श्रीमती दुर्गावती जैन गुलमोहर पार्क, दिल्ली	१ अल्मारी
३०.	श्री पवन कुमार जैन, बम्बई	१ अल्मारी
३१.	श्री गोपालदास रुपचन्द जैन बम्बई	१ अल्मारी
३२.	श्री मोहनलाल पाटनी, बम्बई	१ अल्मारी
३३.	श्रीमती विमलादेवी सेठी, कोटा	१ अल्मारी
३४.	श्री जिनेन्द्र कुमार नानकचंद जैन, कानपुर	१ अल्मारी
३५.	श्री हर्षित कुमार राकेश कुमार जैन, अलीगढ़	१ अल्मारी
३६.	श्रीमती सुमन गोयल, प्रभात गोयल, छिंदवाड़ा	१ अल्मारी
३७.	श्री शुभमचंद जयकुमार जैन, छिंदवाड़ा	१ अल्मारी
३८.	श्री छोटेलाल पाण्डे, बम्बई	१ अल्मारी
३९.	श्री उम्मेदमल कमल कुमार, बड़जात्या, बम्बई	१ अल्मारी
४०.	श्रीमती प्यारीबाई माणिकचन्द मिठ्या, बीना	१ अल्मारी
४१.	श्रीमती सावित्री देवी, दिल्ली	१ अल्मारी
४२.	स्व. कुन्दनबाई श्री बाबूलाल जैन लुहाड़िया	२ अलमारी

४३.	श्री श्रेयांस कुमार जैन, बीना	३ अल्मारी
४४.	श्री रमेशकुमार जैन, रजनी जैन, प्रभात नगर, जबलपुर	१ अल्मारी
४५.	श्री शिखरचंद सोधिया, महाराजपुर	१ अल्मारी
४६.	श्री महेन्द्र कुमार बाबूलाल लुहाड़िया, भुसावल	१ अल्मारी
४७.	सौ. लीना महेन्द्र कुमार लुहाड़िया, भुसावल	१ अल्मारी
४८.	स्व. जमनालाल जैन, कुचामन सिटी द्वारा श्री हीरालाल जैन भावनगर	१० अल्मारी
४९.	श्री मोहनलाल मदनलाल गंगवाल, गुवाहाटी	१ अल्मारी
५०.	श्रीमती सुशीला बसकलीवाल, गुवाहाटी	१ अल्मारी
५१.	श्रीमती रत्नमणी देवी जैन, गुवाहाटी	१ अल्मारी
५२.	स्व श्रीमती चन्द्रजी सेठी केशरदेवी सेठी गुवाहाटी	१ अल्मारी
५३.	श्रीमती कंवरी देवी बड़जात्या, नागौर	१ अल्मारी
५४.	श्री माणिकचंद सम्पतलाल गंगवाल, गुवाहाटी	१ अल्मारी
५५.	श्री रामदेव राजकुमार मक्खनकुमार बाकलीवाल, गुवाहाटी	१ अल्मारी
५६.	श्री कालूराम मदनलाल सेठी, गुवाहाटी	१ अल्मारी
५७.	श्रीमती रतनदेवी, छाबड़ा, गुवाहाटी	१ अल्मारी
५८.	श्रीमती मनहरदेवी जैन, गुवाहाटी	१ अल्मारी
५९.	श्री सुरेश भण्डार, विजयनगर	१ अल्मारी
६०.	श्री मूलचंद जी पाटनी, विजयनगर	१ अल्मारी
६१.	श्रीमती पुष्पा देवी जैन, दिल्ली	१ अल्मारी
६२.	श्री रुपचन्द जी कटारिया राजपुर रोड, दिल्ली	१ अल्मारी
६३.	श्री कौशल जैन मॉडल टाऊन दिल्ली	१ अल्मारी
६४.	श्री पदमकुमार जिनेन्द्रकुमार जैन, रामपुर	१ अल्मारी
६५.	श्री विनोद बिहारी जैन, रामपुर	१ अल्मारी
६६.	श्रीमती वरनमाला भरतेश कुमार जैन रामपुर	१ अल्मारी
६७.	श्री पारसदास दिनेश कुमार जैन, रामपुर	२ अल्मारी
६८.	महिला समाज, रामपुर	१ अल्मारी
६९.	श्री जिनेन्द्र कुमार भरतभूषण जैन, रामपुर	१ अल्मारी
७०.	श्री विमलचंद कांतिबाई जैन रामपुर	१ अल्मारी
७१.	श्रीमती मंजू सिंघई श्री नरेन्द्र जैन, बीना	१ अल्मारी
७२.	श्रीमती केशरबाई श्री शीलचंद जी, बीना	१ अल्मारी
७३.	श्री हजारीलाल जैन, बीना	१ अल्मारी

अतिथि आहार व्यवस्था ध्रौव्य फण्ड

एक दिन की शुद्ध आहार व्यवस्था हेतु १५०० रु. की सदस्यता ग्रहण करने वाले सदस्यों की नामावली

१. श्री बच्चू लाल विमलादेवी जैन पठारी
२. श्री सुरेशचंद संध्या जैन, पठारी
३. श्री महेन्द्र कुमार ऊषा जैन, पठारी
४. कालूराम मातें, पठारी
५. श्री राकेश सिंघई सरोज जैन, पठारी
६. श्रीमती शांतिबाई सिंघई, पठारी
७. श्री धन्नालाल शांतिबाई जैन, पठारी
८. श्री चौ. नाथूराम गुलाबचंद जैन, पठारी
९. श्री महेन्द्र कुमार कठरया, पठारी
१०. श्री कस्तूर चंद्र जैन सांवला, रामगंज मंडी
११. सुश्री इन्द्रसेना जैन, जयपुर
१२. सुनीता प्रकाश बन्नौर, बम्बई
१३. श्री अशोक कुमार दलीचंद, मुम्बई
१४. श्री भूपेन्द्र लवचंद कोठारी, घाटकोपर मुंबई
१५. श्री डा. श्रेणिक शहा, इंद्रापुर
१६. श्री णमोकार रतनचंद दोषी, बालचंद नगर
१७. श्री मोतीलाल जवाहरलाल सिंघई, झांसी
१८. हरकचंद भागचंद पाटोदी तिनसुकिया
१९. श्री श्याम लाल गेंदालाल, अशोकनगर
२०. श्री मदनलाल विनोदकुमार पाटनी, गुवाहाटी
२१. श्री निहालचंद जैन, बीना
२२. श्रीमती सुंदरबाई नेमिचंद जैन, मिश्रौली
२३. श्रीमती मंजू अभयकुमार पाटनी, मिश्रौली
२४. श्रीमती कमलाबाई अभयकुमार गंगवाल मिश्रौली
२५. सुश्री शशि जैन, शिक्षिका, अशोकनगर
२६. स्व. मुलायमचंद जी की स्मृति में श्री जमुनालाल जैन हनुमानताल, जबलपुर
२७. श्री विनोद कुमार जैन, जबलपुर
२८. श्रीमती गुणवती नरेन्द्रकुमार जैन, जबलपुर
२९. श्री छिदामी लाल सचिनकुमार, सिलवानी
३०. महिला मंडल, सिलवानी
३१. श्री अभयकुमार सतीशकुमार जैन सिलवानी
३२. श्री लखमीचंद कौशलकुमार जैन, सिलवानी
३३. श्री पद्मचंद बजाज, सिलवानी
३४. श्री पद्मावति आफसेट, जबलपुर
३५. श्री हीरालाल अमोलकचंद, बोहरा, अकलूज
३६. श्री संतोषचंद उत्तमचंद पुणे, अकलूज
३७. श्री माणिकभाई गौतमचंद गांधी, सोलापुर
३८. श्री दीपक कुमार फूलचंद चंकेश्वरा, पंढ़पुर
३९. श्री अशोककुमार हिम्मतलाल फणे, सोलापुर
४०. अमृत तलकचंद दोशी, सोलापुर
४१. श्री विजयकुमार तलकचंद दोषी, यशवंतनगर
४२. श्री अनूप सुकुमारी दोषी, सोलापुर
४३. श्रीमति शकुन जैन बसंतकुमार जैन, बीना
४४. चौ. सुंदरलाल, संभवकुमार जैन, बीना
४५. श्रीमती पुष्पाबाई बाबूलाल जैन, बीना
४६. श्री निर्मल कुमार, श्रीमती रवि जैन, बीना
४७. श्रीमती चंपा बाई जैन, बीना
४८. श्रीमती चमेलीबाई सराफ, बीना
४९. श्री सलिल कुमार की मातुश्री, बीना
५०. श्री निर्मलकुमार जैन, भानपुरा
५१. श्री संतोष कुमार जैन, देवरी
५२. श्री कमलेश समैया, जबलपुर
५३. श्री शीलचंद जैन, हनुमानताल, जबलपुर

५४. श्रीमती सुषमाबाई, हनुमानताल, जबलपुर
५५. श्रीमती संध्या जैन, हनुमानताल, जबलपुर
५६. श्रीमती विमला जैन पी.सी. जैन, बीना
५७. श्रीमती प्रेमबाई गुलाबचंद जैन, बीना
५८. श्री शिखरचंद जैन, कोटा
५९. श्री स्व. आशीष सिंघई की पुण्य स्मृति में अशोक सराफ, बीना
६०. श्री ज्ञानचंद जैन, प्रदीपकुमार जैन, सिलवानी
६१. ब्र. कविता जैन, नागपुर
६२. श्रीमति मैना देवी जैन, गुवाहाटी
६३. श्री तनसुख मोहनलाल जैन, गुवाहाटी
६४. श्री राजकुमार जैन, गुवाहाटी
६५. श्री नरेन्द्र कुमार जैन, गुवाहाटी
६६. श्री शांतिलाल विजयकुमार काला, विजयनगर
६७. श्री सुरेश भंडार, विजयनगर
६८. श्री मूलचंद जी पाटनी, विजयनगर
६९. श्री शिखरचंद दिलीप कुमार जैन, विजयनगर
७०. श्रीमती सरोजदेवी सरावगी, कलकत्ता
७१. श्री नितिन विलाला, दिल्ली
७२. श्री अजित जैन, दिल्ली
७३. श्रीमती सितारा देवी जैन, दिल्ली
७४. श्रीमति सरोज जैन, दिल्ली
७५. श्रीमती किरण जैन, दिल्ली
७६. श्रीमती किरण जैन, दिल्ली
७७. श्री कपूरचंद शांतिदेवी जैन, रामपुर
७७. श्री पदमचंद जैन, बीना
७८. श्रीमति ममता जैन, जबलपुर
७९. श्री अजित कुमार जैन, जयपुर

आजीवन सदस्य - ११०० रु. प्रदान करने वाले

१. श्री वीरेन्द्र कुमार जैन, बीना
२. श्री नरेश कुमार जैन, बीना
३. श्री मानमल महावीरप्रसाद झांझरी झुमरीतिलैया
४. श्री दिग. जैन महिला समाज झुमरीतिलैया
५. श्री महावीर प्रसादजी झांझरी झुमरीतिलैया
६. श्री चुन्नीलाल सुरेशकुमार छाबड़ा, झुमरीतिलैया
७. श्री दिग.जैन महिला समाज, गया
८. श्री लक्ष्मीनारायण जैन, भरतपुर
९. श्री तेजकुमार, सुनीलकुमार जैन, मड़ावरा
१०. श्री रतनलाल, कंवरीलाल जी, किशनगढ़
११. श्री प्रफुल्ल चंद जी गढ़िया अजमेर
१२. श्री नेमीचंद जी जैन, कोटा
१३. श्री शांतिकुमार सुरेशकुमार जैन, कोटा
१४. श्री रमेशचंद जैन तिजारिया, कोटा
१५. श्री शिखरचंद जी जैन, कोटा
१६. श्री बाबूलाल, अभयकुमार जैन, सिरोंज
१७. श्री कन्हैयालाल विमलकुमार सेठी, गया
१८. श्री विद्याकुमार जी काला, गया
१९. श्री मांगीलाल कस्तूरचंद अजमेर, गया
२०. श्री जमनालाल महेंद्रकुमार काला, गया
२१. श्री बालचंद जी कमलकुमार छाबड़ा, गया
२२. श्री फूलचंद अजितकुमार सेठी, गया
२३. श्री रतनलाल जीवनकुमार सेठी जी, गया
२४. श्री दीपचंद नरेन्द्रकुमारजी सेठी, गया
२५. श्री महावीर प्रसाद गंगवाल, गया
२६. श्री सोनपाल जगन्नाथ जी पंडया, गया
२७. श्री कस्तूरचंद जी अजमेरा, गया
२८. श्री मोहनलाल वीरेन्द्रकुमार सेठी, गया
२९. श्री दयाचंद जैन, टीकमगढ़
३०. श्री रिद्रूम रमेश शाह, डोमबिवली
३१. श्री माणिक लाल गांधी, अकलूज (महा.)
३२. श्री हीरालाल माणिकलाल गांधी, अकलूज
३३. श्री शीतलकुमार माणिकलाल जैन, अकलूज

३४. श्री अजितकुमार माणिकलाल जैन, अकलूज
३५. श्री राकेश जैन, नई दिल्ली
३६. श्री पं. गुलाबचंद पुष्प टीकमगढ़
३७. श्रीमती अनीता जैन, नई दिल्ली
३८. श्री प्रेमचंद जी सराफ, कोटा
३९. श्री रमेशचंद जैन, दिल्ली
४०. श्रीमती त्रिशला जैन, नई दिल्ली
४१. श्री आर.के. जैन बम्बई
४२. श्री प्रतीक दिनेश पाटोदी, बम्बई ४
४३. श्री नीता जयवाला संघवी बम्बई २
४४. श्री मोहनलाल पाटनी, बम्बई १
४५. श्री राममोहन जैन, बम्बई ४
४६. श्री माणकचंद पाटोदी बम्बई ४
४७. श्री नवनीत जैन, बम्बई ४
४८. श्री अरिहन्त नवयुवक संघ, भूलेश्वर, बम्बई
४९. श्री राजेन्द्र कुमार चम्पालाल जैन, बम्बई
५०. श्री सोभाग्यचंद मोनीचंद दोसी बम्बई २
५१. श्री मदनलाल पाटनी बम्बई
५२. श्री अजित कुमार रतिलाल गांधी बम्बई ४
५३. श्री पद्मचंद जैन, बम्बई
५४. श्री अशोक कुमार जैन, बीना
५५. श्री रत्नेश शाह, बीना
५६. श्री प्रेम सागर जैन, नई दिल्ली
५७. श्री जसवंत जैन, नई दिल्ली
५८. श्री जयपाल जैन, नई दिल्ली
५९. श्रीमती रतनमाला जैन, नई दिल्ली
६०. श्री लखपतेन्द्र देव जैन, लखनऊ
६१. श्रीमती सुंदरबाई मिश्रौली (राज.)
६२. श्री नरेन्द्र जैन, रांची (बिहार)
६३. श्री डा. प्रकाशचंद जैन, सागर
६४. श्री बाबूलाल बरोदिया, अशोकनगर
६५. श्री राजदेवी जैन, अशोकनगर
६६. श्री सुभाष जैन, महाराजपुर
६७. श्री शशांत कुमार हीरालाल गांधी बालचंदनगर
६८. श्री रमेशचंद बाबूराव जी, बालचंदनगर
६९. श्री जयकुमार क्षीरसागर जी बालचंदनगर
७०. श्री एफ.एस. क्षीरसागर जी बालचंद नगर
७१. श्री नवीनचंद मोतीलाल कोठारी बालचंदनगर
७२. श्री सन्मति मंडल, बालचंदनगर
७३. श्री हूमण दि. जैन मंदिर, अकलूज
७४. श्री अनिल कुमार अनंत लाल जी, अकलूज
१५. श्री शांतिलाल फड़े, अकलूज
७६. श्री प्रदीप हिम्मतलाल फड़े, अकलूज
७७. श्री विजय तिलकचंद दोषी, अकलूज
७८. श्री वीरेन्द्र, गजेन्द्र भाई होटिया, सूरत
७९. श्री कल्पेश भाई सूरत
८०. श्री कमलाबाई मानक चंद जैन, छिंदवाड़ा
८१. श्री श्रेयांस कुमार जैन, छिंदवाड़ा
८२. श्री बाबूलाल सतीशकुमार पाटोदी छिंदवाड़ा
८३. श्री विपिन ड्रेसेस, छिंदवाड़ा
८४. श्री संतोष पाटनी, छिंदवाड़ा
८५. श्री सुगमचंद जयकुमार जैन, छिंदवाड़ा
८६. श्री अरुण संध्या सेठी, इन्दौर
८७. श्री बालचंद जैन, शिलांग
८८. श्रीमती प्रभासिंघई, जबलपुर
८९. श्रीमती आरती जैन, जबलपुर
९०. श्री भगवान दास शोभालाल जैन, सागर
९१. श्री डा. चेतन जैन, दमोह
९२. श्री जयकुमार जैन, दमोह
९३. श्री कैलाशचंद जैन, झांसी
९४. श्री मनीराम अनिलकुमार जैन, झांसी
९५. श्रीमती कांति जैन, झांसी
९६. श्री कांतीलाल अमीरचंद., सोलापुर
९७. श्री नीरज जैन, सतना
९८. श्री बी.के. इन्डस्ट्रीज, बीना
९९. श्री अश्विन भाई बाड़ीलाल जी शाह, अहमदाबाद

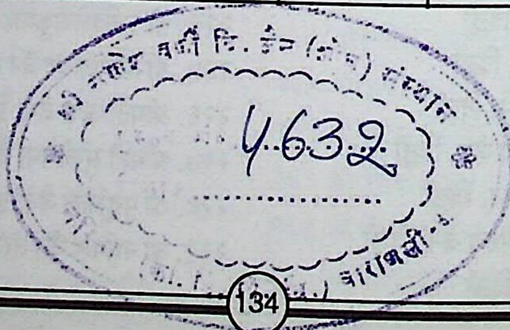
१००. श्री नाथूलाल खेमचंद जी डूंगरपुर (राज.)
१०१. श्री गणेश वर्णी दि. जैन पाठशाला जबलपुर
१०२. श्री अभयकुमार शास्त्री, बीना
१०३. श्री श्रीयांसकुमार जैन, अशोकनगर
१०४. श्री निर्मलकुमार जैन, झालाबाड़
१०५. डा. सूरजमुखी जैन, मुजफ्फरनगर
१०६. श्रीमती गुणमाला वीरेन्द्र जैन, नाकपुर (महा.)
१०७. श्री निर्मलकुमार जैन, नागपुर
१०८. श्री सतीश, बंशीलाल सिंघई, नागपुर
१०९. श्री महावीर दि. जैन पाठशाला, नागपुर
११०. श्री नरेन्द्र जैन, गुवाहाटी (असम)
१११. श्री मिश्रीलाल जैन, बाकलीवाल, ''
११२. श्री मानिकचंद निरंजनकुमार, गुवाहाटी
११३. श्री राजकुमार जैन, गुवाहाटी
११४. श्री मनोज भंडारी, गुवाहाटी
११५. श्री शांति क्लाथ सेंटर, गुवाहाटी
११६. श्री फूलचंद जी बगड़ा, गुवाहाटी
११७. श्री मानिकचंद किरणदेवी, गुवाहाटी
११८. श्री नंदलाल जी गंगवाल, गुवाहाटी
११९. श्री नरेन्द्रकुमार रारा, गुवाहाटी
१२०. श्री संध्या रारा, गुवाहाटी
१२१. श्री बाबूलाल अशोकुमार पाटनी हाबड़ा
१२२. श्री मदनलाल सोगानी, हाबड़ा
१२३. श्रीमती निर्मलादेवी, गुवाहाटी
१२४. श्री मानमल सुनीलकुमार जी कलकत्ता
१२५. श्री बाबूलाल जी पाटनी, कलकत्ता
१२६. श्री रतनलाल अशोककुमार सेठी, कलकत्ता
१२७. श्री विमल कुमार जैन सराफ, बीना
१२८. श्रीमती चमेलीबाई जैन, बीना
१२९. श्री महेन्द्रकुमार जैन कठरया, पठारी
१३०. श्री वैद्य गुलाबचंद जैन, ढ़ाना
१३१. श्री पूरनचंद्र जैन, भायजी ढ़ाना
१३२. श्रीमती जेठीदेवी ट्रस्ट झुमरी तिलैया
१३३. श्री भागचंद संजय जैन पाटनी, झुमरी तिलैया
१३४. श्री राजकुमार जी गंगवाल, झुमरी तिलैया
१३५. श्री डी. आर. जैन, कलकत्ता
१३६. श्री गणपतलाल जी, हाबड़ा
१३७. श्री बाबूलाल जी, हाबड़ा
१३८. श्री प्रकाशचंद जी पाटनी, हाबड़ा
१३९. श्री चंद जी बगड़ा, हाबड़ा
१४०. श्री विमलप्रसाद जैन, हाबड़ा
१४१. श्री मदनलाल जी कलकत्ता
१४२. श्री पवन कुमार जी सेठी कलकत्ता
१४३. श्री सरमूलाल जैन, कलकत्ता
१४४. श्री हंसराज सेठी कलकत्ता
१४५. श्री नंदकिशोर सरावगी कलकत्ता
१४६. श्रीमती बीना जैन, पार्श्वबिहार, दिल्ली
१४७. श्रीमती निशा जैन, पार्श्वबिहार दिल्ली
१४८. श्री पालचंद मानसी जैन पीतमपुरा, दिल्ली
१४९. श्रीमती स्नेह जैन, पीतमपुरा दिल्ली
१५०. श्री विशाल ताराचंद जैन, रोहतक
१५१. श्री आशु रिशु जैन, करनाल
१५२. श्री दि. जैन मंदिर सराय रोहतक
१५३. श्रीमती पुष्पा जैन, रोहतक
१५४. श्री अनिल कुमार जैन, रोहतक
१५५. श्री रोशनलाल चमनलाल जैन, सोनीपत
१५६. श्री कैलाशचंद जीवन्धर जैन, शाहदरा दिल्ली
१५७. श्री अजय जैन लता जैन प्रीतबिहार दिल्ली
१५८. श्री सुभाष जैन प्रीतबिहार, दिल्ली
१५९. श्रीमती सुशीला देवी जैन, दिल्ली
१६०. श्री सुरेशचंद जैन. प्रीतबिहार दिल्ली
१६१. श्री सागरचंद जैन, प्रीतबिहार दिल्ली
१६२. श्री देवेन्द्र प्रतुला जैन, प्रीतबिहार दिल्ली
१६३. श्री विजय विनोद जैन, प्रीतबिहार दिल्ली
१६४. श्रीमती विमला देवी जैन, ऋषभबिहारदिल्ली

१६५. श्रीमती उर्मिला जैन, ऋषभ बिहार दिल्ली
१६६. श्री दिग. जैन मंदिर, ऋषभ बिहार दिल्ली
१६७. श्रीमती मधू जैन प्रीतबिहार दिल्ली
१६८. श्रीमती विद्या जैन ऋषभ बिहार दिल्ली
१६९. श्रीमती चक्रेश्वरी जैन, ऋषभबिहार दिल्ली
१७०. श्रीमती पुष्पा जैन, ऋषभबिहार दिल्ली
१७१. श्री पी.सी. जैन, पुष्पांजली, दिल्ली
१७२. श्रीमती आशालता जैन ऋषभ बिहार दिल्ली
१७३. श्री अनिल कुमार जैन, ऋषभ बिहार दिल्ली
१७४. श्री त्रिलोकचंद जैन, ऋषभबिहार, दिल्ली
१७५. श्री मदनलाल जैन, बाहुबली इन्क्लेव दिल्ली
१७६. श्री दुलीचंद जैन, बाहुवली इन्क्लेव, दिल्ली
१७७. श्री अमित जैन, पुष्पांजली, दिल्ली
१७८. श्री सुभाष जैन, बाहुबली इन्क्लेव, दिल्ली
१७९. श्री अजितप्रसाद राजेन्द्र जैन, तिलकबिहार
१८०. श्री विनोद कुमार जैन राजपुर रोड, दिल्ली
१८१. श्री अजितकुमार जैन, राजपुर रोड, दिल्ली
१८२. श्री राजेन्द्रकुमार जैन, माडल टाउन, दिल्ली
१८३. श्री गुणचंद जैन, माडल टाउन, दिल्ली
१८४. श्री नानकचंद जैन केरलरोड, दिल्ली
१८५. श्रीमती त्रिशला जैन, माडल टाउन दिल्ली
१८६. श्री राजेन्द्रप्रसाद मापचंद जैन, माडलटाउन दिल्ली
१८७. श्रीमती अलका जैन मुखर्जीनगर, दिल्ली
१८८. श्री विनयकुमार जैन, माडल टाउन, दिल्ली
१८९. श्रीमती निशा जैन, माडल टाउन, दिल्ली
१९०. श्री आर.पी. जैन, माडल टाउन, दिल्ली
१९१. श्री अनिल जैन, दिल्ली
१९२. श्री एन.सी. जैन, दिल्ली
१९३. श्री शिखरचंद जैन, दिल्ली
१९४. श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली
१९५. श्री नरेन्द्रकुमार जैन, दिल्ली
१९६. श्रीमती सुनीता अरुण जैन, दिल्ली
१९७. श्री विनोद जैन, दिल्ली
१९८. श्री प्रवीण कुमार जैन, दिल्ली
१९९. श्री चाचा गारमेन्ट्स, दिल्ली
२००. श्री सुभाषचंद जैन, दिल्ली
२०१. श्रीमती त्रिशला जैन, दिल्ली
२०२. श्रीमती त्रिशला जैन, दिल्ली
२०३. श्री अशोक कुमार जैन, दिल्ली
२०४. श्री संजयकुमार जैन, दिल्ली
२०५. श्रीमती स्नेह जैन, एस.के. जैन, दिल्ली
२०६. श्री जी.के. जैन, दिल्ली
२०७. श्री नरेशचंद जैन, दिल्ली
२०८. पं. छक्कीलाल जैन शास्त्री, शिवपुरी
२०९. श्रीमती सरोज जैन, दिल्ली
२१०. श्रीमती रेनू जैन, दिल्ली
२११. श्रीमती शांति देवी जैन, रामपुर (उ.प्र.)
२१२. श्री भरतेशकुमार जी जैन रामपुर (उ.प्र.)
२१३. श्री सरजू प्रसाद विनोद कुमार जैन कानपुर
२१४. श्री ब्र. हेमचन्द्र हेम भोपाल
२१५. श्री हनुमानप्रसाद संतोषकुमार जैन, करीमगंज
२१६. श्री सुरेशचंद जैन, देहरादून
२१७. सुश्री मंजू जैन, ग्रीनपार्क दिल्ली
२१८. ब्र. नवरतनमल जैन, कानपुर
२१९. पं. श्री कुन्दनलाल जैन विश्वासनगर दिल्ली
२२०. श्रीमती शशीबाई सोधिया महाराजपुर
२२१. श्रीमती उमाबाई सोधिया, महाराजपुर
२२२. श्रीमती वीणा जैन जगदीशचंद मोदी सोनगढ़
२२३. श्री सुभाषचंद जैन शीतलपुरी जबलपुर
२२४. श्री अखिलेशकुमार जैन रांझी जबलपुर
२२५. श्री माणिकचंद्र जैन कोटावाला झालावाड़
२२६. श्रीमती ऊषा जैन, झालावाड़
२२७. श्रीमती सुलोचना जैन टीकमगढ़
२२८. श्री पुत्तूलाल जैन, झांसी
२२९. श्री नथमल जैन रारा, नलवाड़ी

जनवरी 1999 से दिसम्बर 99 तक का आय/व्यय

क्र.	माह	पिछली राशि	आय	योग	व्यय	शेष राशि
1.	जनवरी	25469.45	43944.00	69413.45	42374.40	27039.05
2.	फरवरी	27039.05	59418.00	86457.05	83813.00	2644.05
3.	मार्च	2644.05	120695.95	123340.00	121151.00	2189.05
4.	अप्रैल	2189.05	47867.00	50056.05	18216.50	31839.55
5.	मई	31839.55	579852.00	611691.55	572730.50	38961.00
6.	जून	38961.05	28449.00	67409.05	51680.95	15728.90
7.	जुलाई	15728.90	93227.75	108955.85	85818.00	23137.85
8.	अगस्त	23137.85	279765.00	302902.85	281406.00	21496.85
9.	सितम्बर	21496.85	283869.00	305365.00	99960.00	205405.85
10.	अक्टूबर	205405.85	288582.00	493947.85	479617.55	14329.60
11.	नवम्बर	14329.60	69003.00	83332.60	56704.00	26628.60
12.	दिसम्बर	26628.60	20935.00	47563.60	20581.35	26982.25

शैलेन्द्र जैन
मंत्री



प्रीति जैन
कोषाध्यक्ष

इस अंक के लेखक

१.	ब्र. संदीप जैन 'सरल'	-	संस्थापक, अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना (सागर) म.प्र. - ४७०११३
२.	पं. कुन्दनलाल जैन	-	पाण्डुलिपि मर्मज्ञ, ६८, श्रुति कुटीर, विश्वास नगर शाहदरा, नई दिल्ली - ३२
३.	आचार्य राजकुमार जैन	-	आयुर्वेद विशेषज्ञ, ११२ ए, ब्लाक सी पाकेट सी, शालीमार बाग, नई दिल्ली
४.	पं. लालचंद जी राकेश	-	श्रेष्ठ कवि एवं प्रवचनकार, गांधी चौक गली नं. ४, गंजबसौदा (म.प्र.)
५.	श्री ज्ञानचन्द जी जैन बिल्टीवाला	-	अजायबघर के पीछे, किशन पोल बाजार जयपुर (राजस्थान)
६.	डा. अनुपम जैन	-	सम्पादक, अर्हत्‌वचन, ५८४, कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, तुकोगंज, इन्दौर (म.प्र.)
७.	डा. रतनचंद जैन	-	हास्य प्रवचनकार, १३७, आराधना नगर कोटरा, भोपाल (म.प्र.)
८.	श्री रामजीत जैन	-	इतिहास अन्वेषक, दानाओली, टकसाल गली, ग्वालियर (म.प्र.)
९.	डा. नीलम जैन	-	सम्पादिका, जैन महिला दर्श के.आई. २० कविनगर, गाजियाबाद
१०.	डा. महेन्द्रसागर प्रचण्डिया	-	सुकवि एवं साहित्यकार, मंगल कलश, ३९४ सर्वोदय नगर, आगरा रोड, अलीगढ़ (उ.प्र.)
११.	डा. कुसुम पटोरिया	-	व्याख्याता, आजाद चौक, सदर बाजार नागपुर (महाराष्ट्र)
१२.	श्री प्रेमकुमार जैन	-	महावीर पत्राचार, २३८, हरिपुरा विदिशा (म.प्र.)
१३.	पं. अभय कुमार शास्त्री	-	कानूनगो वार्ड, बीना - इटावा (म.प्र.)
१४.	संकल्प जैन	-	सर्वोदय चौक, बीना - इटावा (म.प्र.)

शास्त्र सुरक्षा अभियान बीना का ५२वां दौरा

आचार्यों/ मुनियों का आशीर्वाद प्राप्त

हुआ। २८ मार्च को कुंदकुंद ज्ञानपीठ इंदौर में डा. अनुपम जी के साथ गहन चर्चा हुई। पुस्तकालय का निरीक्षण किया।

मुनिवर श्री १०८ सरल सागर जी के सानिध्य में धर्म सभा का आयोजन किया गया।

अनेकान्त ज्ञान मंदिर के मंत्री शैलेन्द्र जैन को वाग्भारती अवार्ड की घोषणा

सप्तम स्थापना

विचार सरिता मुम्बई - प्रज्ञाश्रमण आचार्य देवनंदी

शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान बीना के आगमन पर धर्म परायण नगरी शाहगढ़ में आचार्य श्री प्रज्ञाश्रमण देवनंदी जी ... ससंघ सानिध्य में ... आयोजन किया ... हुए आचार्य ... वाणी में ...

शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान बीना द्वारा अद्वितीय जिनवाणी प्रभावना

फलकत्ता ... कान्त ज्ञान मं ... श्री स्यांच पधा

जैन सन्देश मथुरा

शक्ति मनोरथ पूर्ति के आदर्श उदाहरण ब्र संदीप 'सरल'

- आचार्य वर्धमान सागर जी ... ने आचार्य ... ज्ञानोपयोगी एवं तीर्थ ... बतलाते हुए ... सरल ...

अनेकान्त ज्ञान ... स्थापना समारोह ... का ७वाँ ... व्याख्यान माला सम्पन्न

अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना का ७ वां स्थापना समारोह एवं व्याख्यान माला सम्पन्न

माढ़ा (महा.) ब्र. बसंत जी एवं ब्र. संदीप सरल के व्याख्यान हुये। अनेकान्त दर्पण (शोध पत्रिका) का लोकार्पण श्रीमती चन्द ... ने किया तो दैनिक विश्व ... 20 फरवरी समारोह ...

भारत वर्ष में प्राचीन ... सम्वर्द्धन एवं प्रचार ... प्राप्त अनेकान्त ... (सागर) म.प्र. ने ... से 7 वर्ष 20 ... कर आठवें वर्ष में ... लिया। संस्थान के ... संदीप जी सरल ... सानिध्य में अन... श्रीमन्तों, श्रीमन्तों ... कार्यक्रम सम्पन्न

अनेकान्त ज्ञानमंदिर बीना के अपूर्व ...

"बुन्देलखण्ड में जैन संस्कृति का उद्भव एवं विकास" = संगोष्ठी आयोजित

महानगर दिल्ली में पर्वराज दशलक्षण की आराधना के साथ शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान की धूम

शास्त्र सुरक्षा अभियान बीना ने गुजरात प्रांत में धूम मचाई

राजस्थान प्रान्त में शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान बीना का ६६ वाँ दौरा सम्पन्न

शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान का ७१ वाँ दौरा सम्पन्न

शास्त्र सुरक्षा अभियान के अन्तर्गत एक सफलतम दौरा 6–7 ... हुए शाहगढ़ एवं ... आशातीत ... हुआ ...

अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना में १२ जून से १८ जून ९९ तक सप्त दिवसीय शिक्षण शिविर

शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान का ५४वां दौरा सम्पन्न

अनेकाँत ज्ञान मंदिर में

(१) अभिनव ज्ञान यज्ञ में अद्वितीय सहयोग

(२) शाँति पद यात्रा

(३) रविवारीय प्रशिक्षण कक्षायें

अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना की एक अद्वितीय उपलब्धि

सेठ भागचन्द जी सोनी की नसियाँ अजमेर से लगभग 1200 हस्तलिखित ग्रन्थों की उपलब्धि

ज्ञान मंदिर में कम्प्यूटर केन्द्र प्रारंभ



अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना के बढ़ते चरण

अष्टसहस्री ग्रन्थ भेंटकर आशीर्वाद पाया

शोध संस्थान में कम्प्यूटर केन्द्र का शुभारंभ

अनेकांत ज्ञान मंदिर बीना में १२ जून से शिक्षण शिविर

खबर

ब्र. संदीप जी सम्राट चन्द्रगुप्त के स्वप्न को पूर्ण साकार कर रहे हैं - प्रज्ञा श्रमण आचार्य देवनंदी

संकल्प शक्ति मनोरथ पूरिणी के आदर्श ब्र. संदीप 'सरल' : आचार्य वर्धमान सागर जी

शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान का पिड़ावा नगर में आगमन

पिड़ावा– अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना द्वारा संचालित एवं ब्र० श्री संदीप जैन 'सरल' के निर्देशन में शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान का पिड़ावा आगमन हुआ।

ब्र. सरल जी ने ...

विद्या-पुष्प (हिन्दी मासिक) जनवरी २०००

बुन्देलखण्ड में जैन संस्कृति का उद्भव एवं विकास

बुन्देलखण्ड में जैन तीर्थ। बुन्देलखण्ड में जन्में साधु एवं उनकी कृतियों का परिचय। बुन्देलखण्ड के जैन संग्रहालयों का परिचय। बुन्देलखण्ड के शोध संस्थान एवं श्रुत भण्डार। बुन्देलखण्ड के विद्वत मनीषी एवं उनकी कृतियों ...

विद्यासागर टाइम्स

अनेकान्त ज्ञान मंदिर शोध संस्थान बीना में कम्प्यूटर केन्द्र शुभारम्भ

बीना (सागर)। ... सांस्कृतिक, पुरातत्व से संबंधित ... रा में स्थापित, ऐतिहासिक, दुर्लभ, पाण्डुलिपियों के संरक्षण के लिए ... कांत ज्ञान मंदिर, बीना भेजकर ...

वर्णी प्रवचन

३४ दुर्लभ ताड़ ग्रन्थों की भेंट

अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना की एक अद्वितीय उपलब्धि

अजमेर से लगभग १२०० हस्तलिखित ग्रन्थों की प्राप्ति

बीना, मध्य प्रदेश (जैन ... बीना, मध्य प्रदेश की ...

ब्र. संदीप जी 'सरल' द्वारा प्रभावना

शास्त्रोद्धार शास्त्र सुरक्षा अभियान की धूम

अनेकान्त ज्ञान मन्दिर शोध संस्थान बीना द्वारा संचालित "शास्त्रोद्धार शास्त्र ... दान" के अन्तर्गत ...

२१ दिसम्बर ... संचालक ब्र० संदीप ...

प्रकाशन का पर्व चातुर्मास

बीना में श्रुतपंचमी ... सम्पन्न

... अभियान के अंतर्गत ... ग्रंथों का भ्रमण ... गंबर जैन हस्तलिखित ... शास्त्रों की सुरक्षा ... का प्रकाशन, कंप्यूटर आदि जैसे महत्वपूर्ण ...

... अनेकान्त ज्ञान ... श्री रासंघ पधारे ... श्रीमती चन्द्राबाई ... शैलेन्द्र जैन ने ... एवं सशक्त ... जिनवाणी गौरव ... ने आचार्य श्री ... ज्ञानोपयोगी एवं ... बतलाते हुए प्रज्ञा ... सरल ने अनेकान्त ... परिचय देते हुए ... ने अल्प समय में ... से लगभग 4000 ... कार्य किया ...

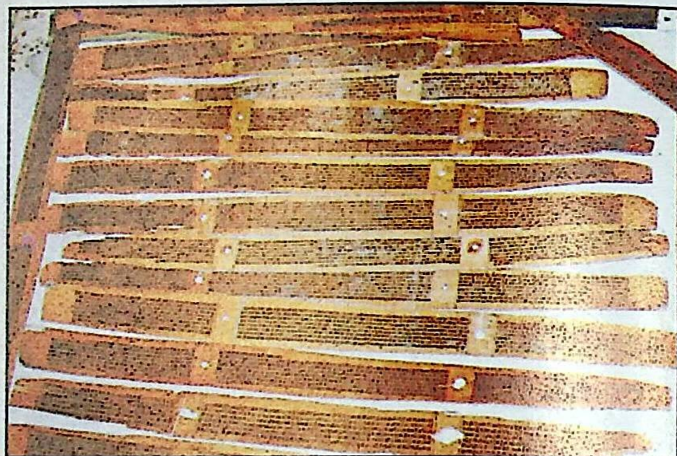
झलकियाँ



अनेकान्त ज्ञान मंदिर का प्रथम सरस्वती कक्ष जिसमें
7000 मुद्रित ग्रन्थराज विराजित हैं।



पाण्डुलिपि संग्रहालय का विराट् स्वरुप जिसमें
5500 हस्तलिखित पाण्डुलिपियों विराजित हैं।



दुर्लभ ताड़पत्रीय प्राचीन पाण्डुलिपि पत्र



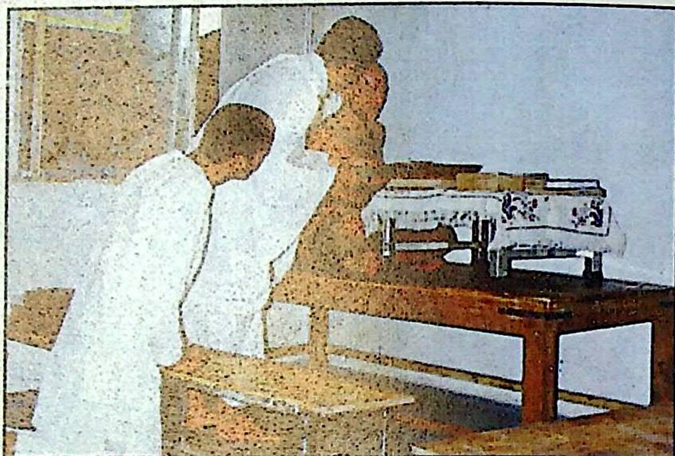
हस्तकला युक्त सचित्र पाण्डुलिपियों के पत्र



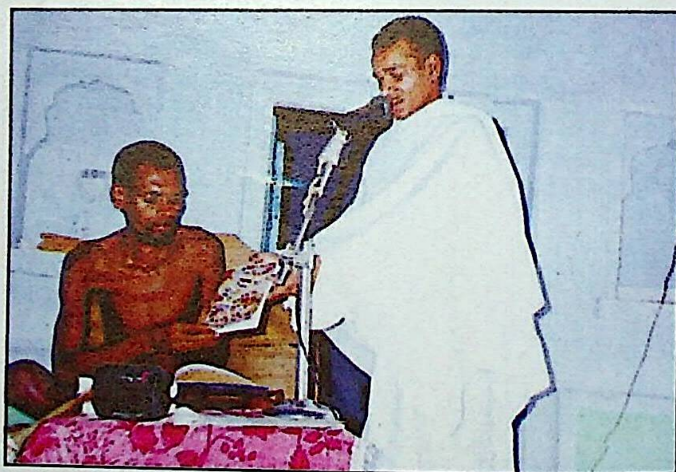
अमूल्य निधि सुवर्णाक्षरी भक्तामर स्तोत्र की हस्तलिखित पाण्डुलिपि



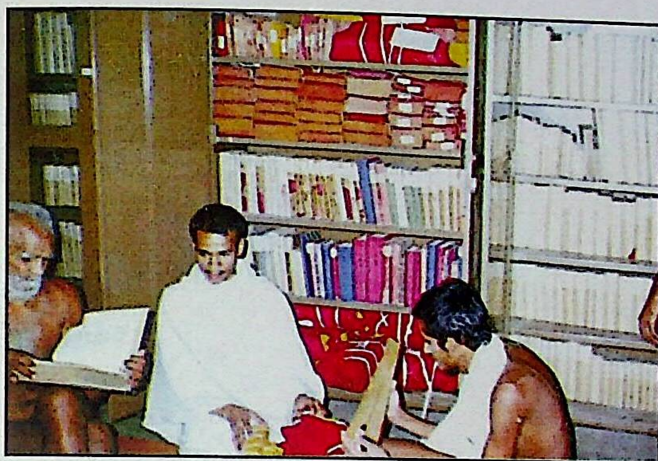
संस्थान के सप्तम् स्थापना समारोह पर आयोजित सदाचार व्याख्यान माला
मंचासीन ब्र. संदीप 'सरल डॉ. रतनचन्द्र जी भोपाल. सेठ डालचंद जी
सागर, डॉ. नीलम जैन आदि।



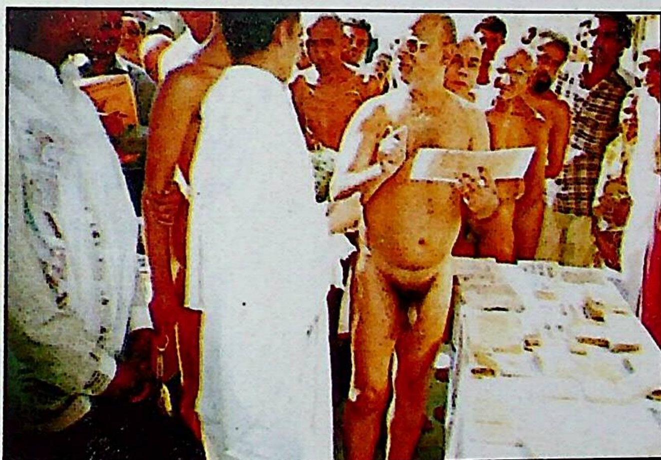
नेमावर में संत शिरोमणि आ. विद्यासागर जी को कन्नड़ पाण्डुलिपि का अवलोकन कराते हुए।



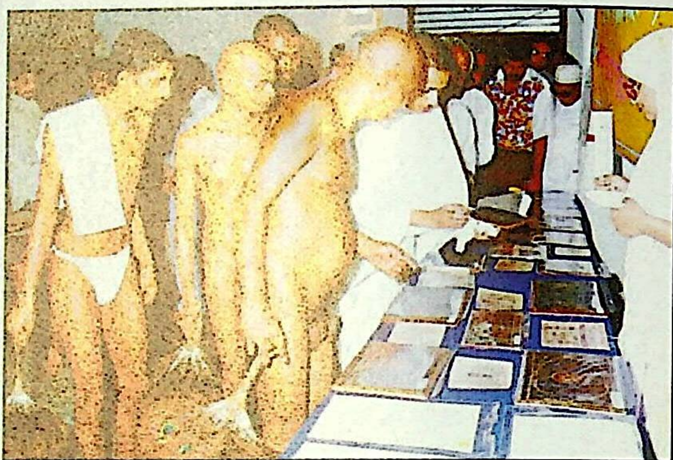
भानपुरा में पूज्य गुरुवर श्री १०८ सरल सागर जी को अनेकान्त दर्पण की प्रथम प्रति समर्पित करते हुए।



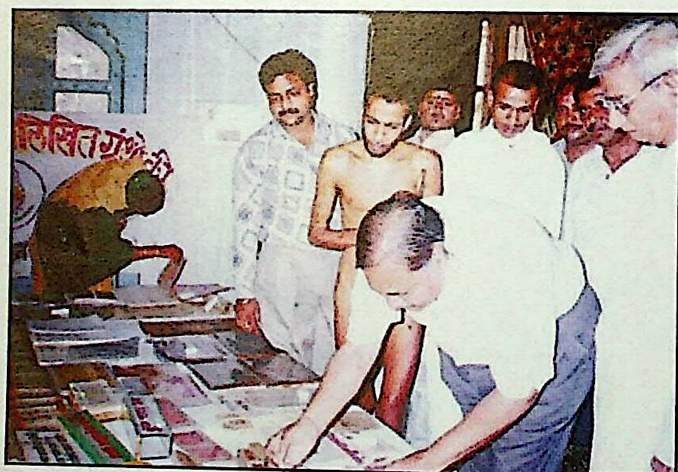
मुनि श्री १०८ ब्रम्हानंद महाराज़ के सानिध्य में ऐलक पन्नालाल सरस्वती भण्डार उज्जैन का सर्वेक्षण करते हुए।



जयपुर में आयोजित पाण्डुलिपि प्रदर्शनी में आचार्य श्री १०८ वर्द्धमान सागर जी ससंघ अवलोकित करते हुए।



महानगर मुम्बई में आयोजित पाण्डुलिपि प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए मुनि श्री १०८ भूतबली सागर जी ससंघ।



महानगर दिल्ली में उपाध्याय श्रुतसागर जी के सानिध्य में शाहदरा में पाण्डुलिपि प्रदर्शनी का शुभारम्भ। पाण्डुलिपि प्रेमी पं. कुन्दनलाल जी. दिल्ली आदि।



रोहतक (हरियाणा) में भी मुनि श्री सौरभ सागर जी के सानिध्य में भी प्रदर्शनी ने धूम मचाई।



असम प्रांत की धार्मिक नगरी, गुवाहटी में श्री हुकमीचंद जी सरावगी प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए।



केसरिया रंग से वस्त्रावेष्टित हस्तलिखित ग्रन्थराज
पाण्डुलिपि संग्रहालय के एक ओर का चित्र।



श्री सिद्धकूट चैत्यालय (भागचंद सोनी की नसियाँ) अजमेर (राज.) से एक साथ १३०० हस्तलिखित ग्रन्थों को स्वीकारते हुए ब्र. संदीप जी 'सरल' श्री इन्दरचंद जी पाटनी प्रदान करते हुए। खड़े है संस्था के मंत्री शैलेन्द्र जैन, सदस्य श्रेयांस जैन एवं विपिन जैन।

मुद्रक – प्रदीपिका ऑफसेट, जबलपुर फोन – [illegible]